4 रायपुर संभाग
बेलाहीडबरी नाला में तीस लाख की लागत से होगा बांध...

6 अभिमत
यदि स्त्री-पुरुष के अधिकार समान हैं तो कर्तव्यों में भेद-भाव क्यों?

09 विविध
इस भवसागर में हिंदुओं के आठ धर्म गुरु हैं, चार शंकराचार्य...

10 संस्कारधानी
जिला अस्पताल, सरकारी दफ्तरों की मांग को लेकर बंद

रायपुर, लखनऊ, नई दिल्ली और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

हमेशा सच के साथ

RNI NO. CHHHIN/2016/70655

www.dailypioneer.com रायपुर, रविवार 01 अक्टूबर 2023 पृष्ठ-12 वर्ष-08, अंक-40 मूल्य 3.00 ₹

क्विक न्यूज

अज्ञानता का राजनीतिक लाभ लेना शर्मनाक : धनखड़

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम की आलोचना करके

राजनैतिक लाभ अर्जित करने के प्रयास को मानवता के लिए शनिवार को घातक बताया? और कहा कि देश का भविष्य युवाओं के योगदान और उनकी सजगता पर निर्भर करेगा। धनखड़ संकल्प फाउंडेशन और पूर्व लोक सेवा अधिकारी संघ को संबोधित कर रहे थे। उपराष्ट्रपति ने भारतीय मूल्यों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा, समाज में परिवर्तन तब आएगा जब हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों का आदर करेंगे। भारतीयता और भारत हमारे लिए सर्वोपरि हैं और प्रत्येक व्यक्ति भारतीय होने पर गर्व करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत जैसी समृद्ध विरासत पूरी दुनिया में कहीं नहीं है।

4 अक्टूबर को कोडातराई में भरोसे का सम्मेलन, खडगे होंगे शामिल

रायपुर। रायगढ़ जिले के कोडातराई में 4 अक्टूबर को भरोसे का सम्मेलन कार्यक्रम

आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में नेता प्रतिपक्ष राज्यसभा मल्लिकार्जुन खडगे और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल शामिल होंगे। इस दौरान वह आम सभा को भी संबोधित करेंगे। सम्मेलन में हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत सामग्री व प्रोत्साहन राशि का वितरण किया जायेगा। रायगढ़ कलेक्टर तारण प्रकाश सिंहा ने कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर बैठक ली।

दो हज़ार रुपए के नोट जमा करने की अवधि बढ़ी

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक ने प्रचलन से वापस लिए गए दो हज़ार रुपए के 14 हजार करोड़ मूल्य के बैंक नोट के जमा नहीं कराये जाने के मद्देनजर इस नोट को जमा करने या बदलने की अवधि सात दिन बढ़ाकर सात अक्टूबर 2023 कर दी है। रिजर्व बैंक ने कहा कि दो हजार रूपए के बैंक नोट को जमा कराने या बदलने की शनिवार को अंतिम तिथि थी लेकिन कल तक 14 हजार करोड़ मूल्य के बैंक नोट न तो जमा किए गए और न ही बदले गए। इसके मद्देनजर तिथि बढ़ाने का निर्णय लिया गया है।

कांग्रेस को फिर मौका मिला तो राज्य को बर्बाद कर देगी : मोदी

छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनी तो गरीबों को पक्का मकान, पीएससी मामले की होगी जांच

पायनियर संवाददाता ➤ बिलासपुर
www.dailypioneer.com

प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा के परिवर्तन यात्रा का समापन करते हुए आयोजित आमसभा में राज्य की भूपेश बघेल सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने पिछड़ा वर्ग कार्ड खेलते हुए राज्य की कांग्रेस सरकार पर आरोप लगाया कि यह सरकार और कांग्रेस पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति और जनजाति के साथ घोर अन्याय कर रही है। मोदी ने कहा राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने पर पिछड़ा वर्ग, अजा, अजजा वर्ग के लोगों की हितों की पूरी सुरक्षा की जाएगी साथ ही भाजपा सरकार की पहली कैबिनेट बैठक में प्रदेश के बचे हुए गरीबों को पक्का मकान दिए जाने का फैसला लिया जाएगा। साइंस कॉलेज के मैदान में आम सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में बदल के रहिबो बदल के रहिबो, कांग्रेस सरकार बदल के राहीबो का नारा बुलंद करते हुए कहा कि मैं यहां आकर महसूस कर रहा हूं कि परिवर्तन यात्रा से छत्तीसगढ़ में बदलाव की शुरुआत हो चुकी है, यहां की जनता ने मन बना लिया है अब भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है कि वह हर बूथ में कमल खिलाने का संकल्प लें तथा अपना-अपना बूथ मजबूत करें। मोदी ने छत्तीसगढ़ सरकार को आडे हाथों लेते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ आकंठ भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है। यहां घोटाले ही घोटाले हैं। हर योजनाओं में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। आप लोग कांग्रेस की सरकार को हटाने के लिए पूरी तरह तैयार रहे। उन्होंने कहा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई इस प्रदेश के निर्माता थे और भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने 15 साल तक छत्तीसगढ़ को समझा और यहां के लोगों की भलाई के लिए कार्य किया। यहां रेलवे जोन, एसीसीएल का मुख्यालय है। राजस्व की दृष्टि से भारत में सबसे ज्यादा आय देने वाला बिलासपुर रेलवे जोन है, इसकी भी स्थापना अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व वाली भाजपा की सरकार ने किया था। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि कांग्रेस के शासनकाल में रेलवे को 300 करोड रुपए दिया जाता था मोदी सरकार आने के बाद हमने रेलवे को 6000 करोड रुपए दिए हैं इस राशि से यात्री की सुविधाओं के लिए काम किया जा रहा है और शीघ्र ही दुरुत गति से चलने वाली यात्री ट्रेन का तोहफा भी बिलासपुर को मिलेगा। उन्होंने कहा कि उन्होंने जब वे संगठन में थे तो बिलासपुर आया करते थे, गुजरात के मुख्यमंत्री रहे तो भी छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह उन्हें आमंत्रित करते थे। प्रधानमंत्री बनने के बाद भी वे छत्तीसगढ़ लगातार आ रहे हैं। मोदी ने कहा पुराने लोगों से मिलकर उन्हें खुशी होती है। आज की भीड़ देखकर और लोगों में उत्साह देखकर ऐसा लग रहा है कि भूतो न भविष्यते। यहां की युवा शक्ति मातृ शक्ति में भारी उत्साह का माहौल है इससे लग रहा है कि है कि छत्तीसगढ़ में परिवर्तन का आगाज हो चुका है। मैं आपको यहां गारंटी देने आया हूं आपके सपने साकार करने मोदी कोई कसर बाकी नहीं रखेगा। आपका सपना मोदी का संकल्प है। छत्तीसगढ़ के हर परिवार का सपना तभी साकार हो सकेगा जब छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी। मोदी ने कहा केंद्र सरकार 5 साल में छत्तीसगढ़ को हजारों करोड रुपए दिए। हमने छत्तीसगढ़ के लिए, आपके लिए पैसों की कोई कमी नहीं की यह बात इस प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ने भी सच बोला तो उनकी पार्टी पर तूफान मच गया। मेरा ऐसा मानना है सार्वजनिक जीवन में सच्चाई को नहीं छुपाया जा सकता। मोदी ने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार हर योजना में रोक-टोक कर रही है सोच लीजिए दोबारा आई तो वह किसी का भला नहीं कर सकेगी हमने कोरोना संकट के दौरान गरीबों के लिए काफी कुछ किया। संकट की घड़ी में गरीबों के लिए अन्न कल्याण योजना शुरू किया। अन्न का भंडारण खोल गरीबों को मुफ्त में अनाज देने का काम किया जो आज भी जारी है मगर छत्तीसगढ़ सरकार ने चोरी करने का माध्यम इसमें खोजा और इस योजना में भी घोटाला कर दिया। छत्तीसगढ़ का हर गरीब पूछ रहा है हमारे हक का चावल कहां गया जो गरीबों के राशन में घोटाला करें वह वापस आना चाहिए क्या यह मैं प्रदेश की जनता से पूछना चाहता हूं। यदि यह सरकार वापस आ गई तो छत्तीसगढ़ पूरी तरह तबाह हो जाएगा। दोबारा मौका दिए तो घोटाला करने में सरकार की इतनी हिम्मत बढ़ जाएगी की कोई रोक नहीं पाएगा।

छत्तीसगढ़ देश में सामाजिक न्याय का मॉडल : मुख्यमंत्री बघेल

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

देशभर में छत्तीसगढ़ सामाजिक न्याय का सबसे बड़ा मॉडल बन चुका है। हमने प्रदेश में सभी वर्गों के उत्थान के लिए योजनाएं बनाई है। किसानों, आदिवासियों, श्रमिकों, महिलाओं और युवाओं को आर्थिक संबल प्रदान करने का काम किया है। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि प्रदेश में 40 लाख लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं क्योंकि मेहनतकश को उसकी मेहनत के अनुरूप पैसा मिल रहा है और वह खुशी-खुशी प्रदेश को गढ़ने तथा आगे बढ़ाने में स्वतः स्फूर्त होकर अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज नक्सलियों का दायरा सिमट गया है। बस्तर अंचल में बंद स्कूलों को खोलने की बड़ी पहल हमने की है, जिससे भावी पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित हुआ है। हमने उद्योग और व्यापार के लिए अनुकूल माहौल उपलब्ध कराया है और इसके लिए अधोसंरचना निर्माण का काम कर रहे हैं। उद्योगों को बिजली, पानी, सड़क जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भरपूर सहयोग दिया है। आज गौठान और रीपा से महिलाएं और युवा रोजगार की कड़ी से जुड़कर आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि देश में छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य है जहां हमने किसानों से सबसे ज्यादा दाम पर धान की खरीदी कर किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत करने का काम किया। प्रदेश में 44 प्रतिशत वन क्षेत्र है। पहले मात्र 7 प्रकार के वनोपजों की खरीदी होता था। अब हम 67 प्रकार के वनोपजों को समर्थन मूल्य पर खरीद रहे हैं। तेन्दूपत्ता प्रति मानक बोरा 2500 से बढ़ाकर 4000 रूपए किया। उन्होंने कहा कि लोहंडीगुड़ा में आदिवासियों की अधिग्रहित जमीन वापस की। वनाधिकार पट्टा, वन संसाधन अधिकार, पेसा कानून को लागू किया। स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतर काम हुए हैं। कुपोषण को दूर करने मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान लागू किया। वनांचल क्षेत्रों में पहले छोटी-छोटी बीमारियों के कारण भी लोगों की जान चली जाती थी। ऐसे में दूरस्थ वनांचल के ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए हाट-बाजार क्लीनिक योजना शुरू की। हाट बाजार क्लीनिक व्यवस्था का एक करोड़ से अधिक लोग लाभ ले चुके हैं।

देश में दो-तीन उद्योगपतियों को फायदा पहुंचाने के लिए हो रहे काम : राहुल गांधी

पायनियर संवाददाता ➤ भोपाल
www.dailypioneer.com

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा सांसद राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि देश में बस दो-तीन उद्योगपतियों को फायदा पहुंचाने के लिए सब काम हो रहे हैं। गांधी मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले के कालापीपल स्थित पोलायकलां में कांग्रेस की प्रदेश इकाई की जनाक्रोश यात्रा सभा को संबोधित कर रहे थे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने आरोप लगाया कि देश में 2-3 अरबपतियों को फायदा पहुंचाने के लिए विभिन्न काम किए जा रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि संसद में जैसे ही उन्होंने अडाणी मुद्दे पर भाषण दिया, उनकी लोकसभा सदस्यता रद्द कर दी गई। गांधी ने इसी क्रम में कहा कि ऐसी बातों से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, उन्हें सिर्फ सच्चाई सबके सामने रखनी थी। उन्होंने कहा कि आज देश में हर बंदरगाह, हवाईअड्डे और हर बुनियादी सुविधा पर अडाणी दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि किसान की जेब से पैसा निकल कर अडाणी की जेब में जा रहा है। मध्यप्रदेश के संदर्भ में उन्होंने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश को देश भर में भ्रष्टाचार का केंद्र बना दिया है। इसके साथ ही उन्होंने महाकाल लोक का भी जिक्र किया। उन्होंने आरोप लगाया कि भारत जोड़ो यात्रा के दौरान जब वे मध्यप्रदेश से होकर गुजरे तो किसानों ने उन्हें बताया कि मध्यप्रदेश में उनकी फसलों के सही दाम नहीं दिए जा रहे। साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश में पिछले 18 साल में 18 हजार किसानों ने आत्महत्या की है। देश के विभिन्न राज्यों की कांग्रेस सरकारों का जिक्र करते हुए गांधी ने कहा कि छत्तीसगढ़, कर्नाटक और राजस्थान में कांग्रेस ने जो गारंटी दीं, उन्हें पूरा किया।

स्वच्छता के जश्न में जुटेंगे प्रतिष्ठित संस्थान और देश के जवान

एजेंसी ➤ नई दिल्ली
www.dailypioneer.com

देश भर में प्रतिष्ठित संस्थान, धार्मिक संगठन सशस्त्र बलों के जवान, स्कूली बच्चों से लेकर कॉलेज छात्र और तमाम मशहूर हस्तियां रविवार को स्वच्छता पखवाड़े के तहत स्वच्छता दिवस पर जनमानस का नेतृत्व करेंगे। इस मौके पर स्वच्छता अभियानों में 12 राज्यों के मुख्यमंत्री, नौ राज्यपाल और उपराज्यपाल सफाई अभियानों का हिस्सा बनेंगे। स्वच्छता दिवस शहरों में महासफाई अभियान चलाया जायेगा जिसके अंतर्गत विभिन्न ऐतिहासिक संग्रहालयों, स्मारकों और किलों की सफाई की जाएगी। सशस्त्र बलों के जवान भी स्वच्छता मिशन का प्रतिनिधित्व करेंगे, जिसमें केन्द्रीय पुलिस बलों और असम राइफल्स के जवान भी शामिल होंगे। इस्कॉन मंदिर संघ स्वच्छता अभियान के लिए मंदिर की सफाई की जिम्मेदारी संभालेगा और धार्मिक स्थलों के आसपास के क्षेत्रों को गोद ले रहा है। रामकृष्ण मठ श्रमदान के लिए कई क्षेत्रों को गोद ले चुका है। पर्वतारोही प्रदीप सांगवान का हीलिंग हिमालय संगठन उत्तराखंड में हिमालय पथ को साफ करने के लिए आगे आया है। स्कूलों और कॉलेजों में स्वच्छता अभियान के हिस्से के रूप में माता अमृतानंदमयी का अम्मा फाउंडेशन देश भर में स्वच्छता के लिए श्रमदान करेगा। अपने-अपने शहरों में खेल और कला क्षेत्र से जुड़ी नामी हस्तियां सफाई अभियानों का प्रतिनिधित्व करेंगी, जिनमें ओलंपियन पीवी सिंधू, विशाखापत्तनम में कर्नम मल्लेश्वरी और पद्मश्री सुदर्शन पटनायक आदि शामिल होंगे। अन्य प्रतिष्ठित संगठन जैसे फिक्की, सीआईआई, क्रेडाई, विभिन्न एनजीओ जैसे सत्य साईं लोक सेवा, लायंस क्लब, रोटरी क्लब, यूनिसेफ, आगा खान फाउंडेशन, रामकृष्ण मिशन आदि भी इस स्वच्छता मिशन में शामिल होंगे। स्वच्छता पखवाड़े में अब तक 8 लाख से ज्यादा आयोजन हो चुके हैं और भागीदारी की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर वर्ष 2014 में शुरू हुआ स्वच्छ भारत मिशन हर साल स्वच्छता के स्तर को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है। पहली बार दो अक्टूबर 2014 को गांधी जयंती के दिन मनाए गए स्वच्छ भारत दिवस ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का अनूठा संदेश दिया था।

दिल्ली वालों को जल्द मिलेगी कूड़े के पहाड़ों से मुक्ति : केजरीवाल

एजेंसी ➤ नई दिल्ली
www.dailypioneer.com

दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि निगम में आप की सरकार आने के बाद से लैंडफिल साइट से कूड़ा खत्म करने के काम में काफी तेजी आई है और तय लक्ष्य से अधिक गति से कूड़ा हटाया जा रहा है। केजरीवाल ने भलस्वा लैंडफिल साइट का दौरा करके कहा, पिछले साल मध्य नवंबर से भलस्वा लैंडफिल साइट से कूड़ा साफ करने का काम शुरू हुआ था। लक्ष्य रखा गया था कि अगले 18 महीने के अंदर भलस्वा लैंडफिल साइट से लगभग 30 लाख टन कूड़ा कम किया जाएगा। तीस सितंबर तक लगभग 14 लाख टन कूड़ा कम करने का लक्ष्य रखा गया था। यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि लक्ष्य से कहीं अधिक गति से कूड़ा साफ करने का काम चल रहा है। सितंबर तक भलस्वा लैंडफिल साइट से तय लक्ष्य 14 लाख टन के बजाय 18 लाख टन कूड़ा कम किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि मौजूदा एजेंसी जब अगले साल 15 मई तक 45 लाख टन कूड़ा साफकर लेगी तब यहां पर 35 एकड़ जमीन खाली हो जाएगी। जब सारा कूड़ा साफ हो जाएगा, तो यहां पर काफी जमीन खाली हो जाएगी। भलस्वा लैंडफिल साइट के बगल से गुजर रही सड़क से पंजाब और हरियाणा से लोग दिल्ली आते हैं। दिल्ली में प्रवेश करते ही उनको कूड़े का पहाड़ दिखाई देता था। ये कूड़े का पहाड साफ हो जाएगा तो इस जमीन का कई तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है।

गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल समेत अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे

अमित शाह ने गुजरात में 1651 करोड़ रूपये के विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया

वार्ता ➤ नई दिल्ली
www.dailypioneer.com

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को गुजरात की राजधानी गांधीनगर में अहमदाबाद नगर निगम और अहमदाबाद शहरी विकास प्राधिकरण के 1651 करोड़ रुपये की लागत के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया। शाह ने सरखेज, भाड़ज गांव, ओगणज, जगतपुर गांव और त्रागड में तालाबों के नवीनीकरण कार्यों का शिलान्यास भी किया। इस अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल समेत अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। केन्द्रीय गृह मंत्री ने इस मौके पर कहा कि गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में कोई ऐसा वार्ड नहीं है जहां विकास कार्यों का लोकार्पण तथा शिलान्यास न हुआ हो और सरकार ने लोगों के मांग करने से पहले ही विकास कार्य शुरू किए हैं। उन्होंने कहा कि गत 52 महीनों में गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में 17,544 करोड रुपये के विकास कार्य हुए हैं। आज लगभग 1650 करोड़ रुपये की लागत से 39 परियोजनों का लोकार्पण और शिलान्यास हुआ जिनमें से 18 योजनाओं का लोकार्पण और 21 का भूमिपूजन हुआ। शाह ने कहा कि केन्द्र सरकार ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से राज्य विधानसभाओं और लोकसभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि नीति निर्धारण और कानून बनाने के लिए महिलाओं का योगदान बहुत जरुरी है। केन्द्रीय गृह मंत्री ने विश्वकर्मा योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि देश में करोड़ों लोग अलग-अलग प्रकार के छोटे-छोटे व्यवसाय करते हैं और इनके बिना देश का विकास संभव नही है। सरकार ने इन लोगों को टुलकीट देने और मशीन खरीदने के लिए तीन लाख रुपये तक के लोन की व्यवस्था की है।आजादी के बाद पहली बार 20 से ज्यादा छोटे-छोटे काम करने वाले समुदायों को किसी सरकारी योजना में शामिल किया गया है। विश्वकर्मा योजना से विकास में कहीं पीछे छूट जाने वाले समाज को सबके समकक्ष लाने के लिए एक बहुत बडा कदम उठाया गया है। जलवायु परिवर्तन के खतरों के मद्देनजर श्री शाह ने लोगों से घर के आसपास कम से कम तीन वृक्ष लगाने की अपील की जिससे आने वाले दिनो में गुजरात शहर का वातावरण और अधिक स्वच्छ और सुंदर बन सके।

पीएससी मामले में सीएम भूपेश बघेल ने कहा- शिकायत आने पर हर एक शिकायत की गंभीरता से जांच करेंगे

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (पीएससी) को लेकर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि पीएससी की परीक्षा देने वाले किसी भी एक अभ्यर्थी ने अब तक शिकायत नहीं की है। यदि किसी तरह की कोई भी शिकायत आती है या किसी अभ्यर्थी द्वारा एक भी शिकायत की जाती है तो हम हर शिकायत की गंभीरता से जांच करेंगे। किसी का अधिकार छीनने का किसी को भी हक नहीं है। जब आप योग्य हैं, आप परीक्षा दे रहे हैं, आप पात्रता रखते हैं तो उसका लाभ आपको निश्चित रूप से मिलना चाहिए। यदि कोई गड़बड़ी हुई है तो उसकी जांच करेंगे और यदि कोई दोषी है तो उस पर जरूर कार्रवाई होगी। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं छत्तीसगढ़ के युवाओं के साथ हूं। उन्होंने युवा साथियों से अपील करते हुए कहा कि युवा साथी किसी भी तरह के बहकावे में ना आए, अपनी तैयारी मेहनत और लगन से करते रहे। पीएससी की परीक्षा के रिजल्ट आए कई दिन हो गए हैं, अब तक किसी भी अभ्यर्थी द्वारा किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं मिली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी अधिकारी का पुत्र-पुत्री होने में कोई दोष नहीं है, परीक्षा में सारे अभ्यर्थी समान रूप से शामिल होते हैं और उसी तर्ज पर सफलता पाते हैं। लेकिन यदि इसका अनुचित लाभ उठाया जाता है तो यह गलत है। उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं के विभिन्न चरणों में अभ्यर्थियों द्वारा तरह-तरह के अभ्यावेदन/शिकायत दिए जाते हैं जैसे कि शैक्षणिक अर्हता आयु मे छूट, आरक्षण रोस्टर, लिंग/जन्मतिथि परिवर्तन आवेदनों को भरने में विभिन्न प्रकार की त्रुटि. अनुक्रमांक, केन्द्र, परीक्षा की तिथि आगे-पीछे करने आदि प्राप्त सभी अभ्यावेदनों/शिकायतों पर आयोग द्वारा तत्काल संज्ञान में लिया जाकर निराकरण किया जाता है तथा अभ्यावेदनों/शिकायतों पर आवश्यक कार्यवाही निर्धारित समय में की जाती है जिससे कि अभ्यर्थियों को इसका लाभ प्राप्त हो सके। वर्ष भर परीक्षाओं को निर्बाध रूप से संपन्न कराने की कार्यवाही लगातार करते रहने एवं अभ्यर्थियों के आवेदनों को समय पर निराकरण करने में आयोग द्वारा पूर्ण पारदर्शिता बरती जाती है। इसके उपरांत अभ्यर्थियों एवं कतिपय लोगों के द्वारा भ्रामक जानकारी देकर आयोग को आक्षेप लगाया गया है कि ये परीक्षा में बैठे हैं, साक्षात्कार में भी उपस्थित हुए हैं। परन्तु उनके उत्तीर्ण होने की घोषणा में दूसरे का नाम जारी कर दिया गया है। उक्त प्रकरण की जांच करने पर शिकायत तथ्यहीन व निराधार पायी गई तथा संबंधित अभ्यर्थी के विरूद्ध आयोग द्वारा एफआई.आर दर्ज कराया गया। इसी प्रकार एक अन्य अभ्यर्थी के द्वारा अधिक अंक प्राप्त होने के उपरांत भी साक्षात्कार में नहीं बुलाने संबंधी अभ्यावेदन/शिकायत आयोग कार्यालय को प्राप्त हुआ था, प्राप्त अभ्यावेदन/शिकायत का परीक्षण करने पर अभ्यावेदन/शिकायत गलत पाया गया। अभ्यर्थी को आयोग के परीक्षा संबंधी समस्त नियमों के अनुरूप अनर्ह किया गया है और इस बाबत अभ्यर्थी को सूचित भी किया गया है। आयोग को पिछले एक वर्ष में विभिन्न अभ्यावेदको से लगभग कुल 95 अभ्यावेदन/शिकायत प्राप्त हुए, जिनमें से 76 प्रकरणों का निराकरण कर दिया गया है तथा शेष 19 प्रकरणों पर प्रक्रिया चल रही है। इस प्रकार कोई भी अभ्यावेदन/शिकायत आयोग में शेष नहीं है। उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो रहा है कि आयोग प्राप्त अभ्यावेदनो/शिकायतों पर विचार कर की गई कार्यवाही से अभ्यावेदकों को अवगत कराता है।

भूपेश सरकार के नेतृत्व में बेरोजगारी से मुक्ति की ओर बढ़ा छत्तीसगढ़

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ अब बेरोजगारी मुक्त राज्य की ओर बढ़ रहा है। देश में सबसे कम बेरोजगार वाले राज्यों की सूची में अब छत्तीसगढ़ का नाम आने लगा है। सीएमआई सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2018 की बात करें तो राज्य में बेरोजगारी दर का आंकड़ा 222 प्रतिशत तक ठीक चुनाव से पहले सितंबर 2018 में यह आंकड़ा 22.2 प्रतिशत था, लेकिन जब दिसंबर 2018 में मुख्यमंत्री भूपेश सरकार बनी तो इन आंकड़ों में धीरे-धीरे कमी आती गई। वर्ष 2023 की बात करें तो जनवरी में यह आंकड़ा 05 फरवरी व मार्च माह में यह आंकड़ा 0.8 पर बना रहा है। तब और अब में अंतर साफ है। कोविडकाल के दौरान भी जब देशभर में बेरोजगारी के आंकड़े बढ़ते जा रहे थे तो यहां सरकार ने अपनी योजनाओं के जरिए इस पर रखा था। आज स्थिति यह है कि छत्तीसगढ़ की बेरोजगारी दर देशभर में अर्थशास्त्रियों के लिए अध्ययन का विषय बना हुआ है।

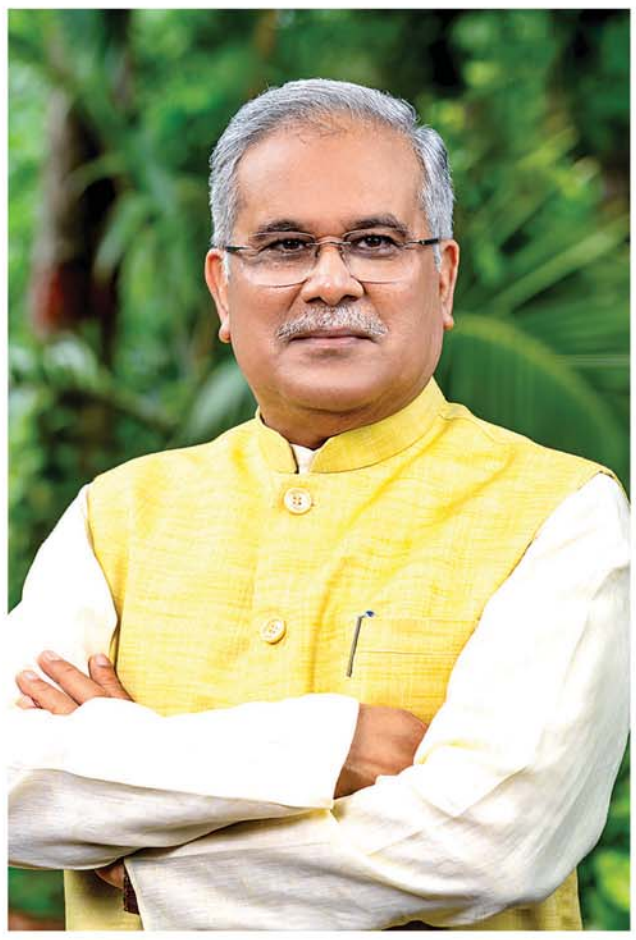

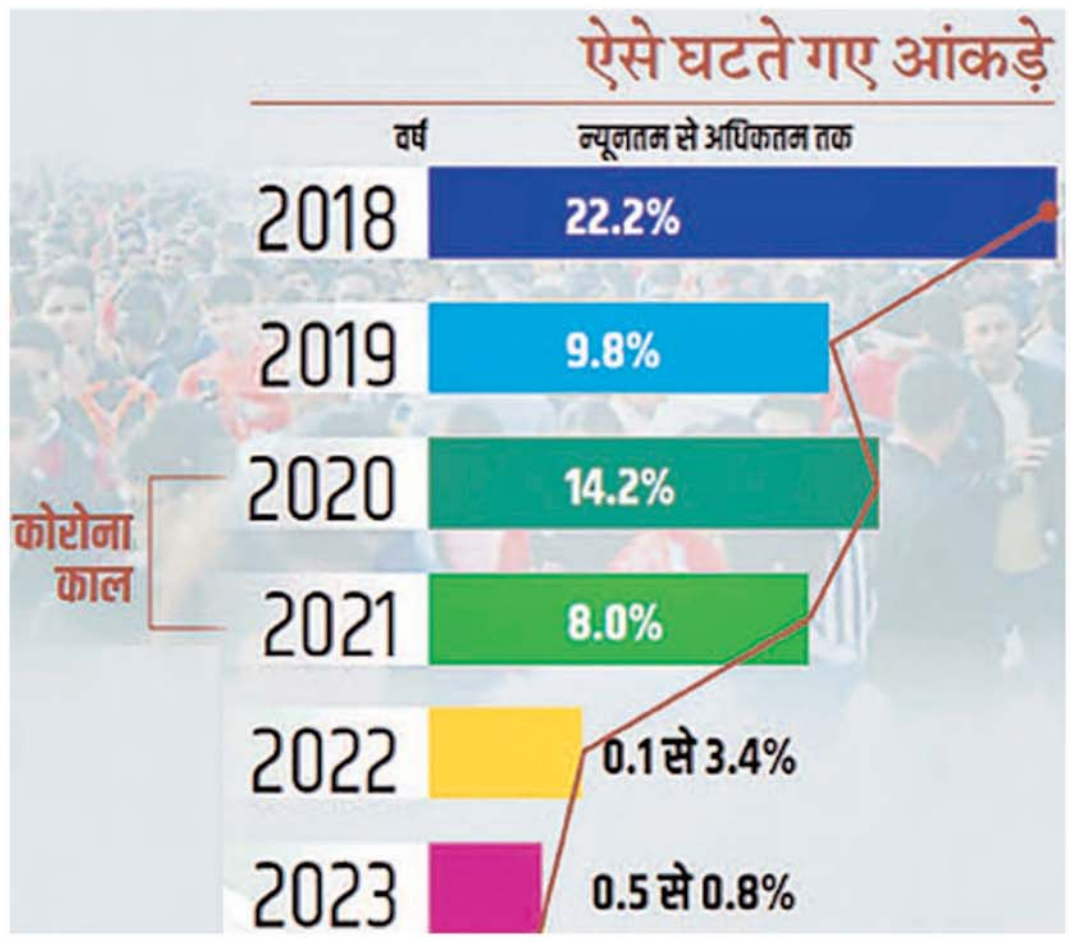

बेरोजगारी दर पर अंकुश को लेकर जब छत्तीसगढ़ की बात होती है तो मुख्यमंत्री बघेल की उन तमाम योजनाओं और फैसलों का जिक्र होता है जो सीधे लोगों की जेब में पैसा पहुंचाने से जुड़ी हैं। समर्थन मूल्य पर धान खरीदी, राजीव गांधी किसान न्याय योजना, राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना, गोधन न्याय योजना, मिलेट्स व दलहन की समर्थन मूल्य में खरीदी, लघु वनोपज की समर्थन मूल्य में खरीदी, तेंदूपत्ता संग्रहण पारिश्रमिक में बढ़ोतरी से लेकर डीएमएफ फंड की बुनियादी जरूरतें व आजीविका पर आधारित अधोसंरचनाओं में खर्च होने वाले फैसलों का जिक्र होता है। इन योजनाओं के जरिए राज्य में हर वर्ग को सशक्त बनाने का प्रयास किया गया है। इनके जरिए ग्रामीण कारोबार और स्वरोजगार के अवसर बढ़ाए गए हैं, जिससे बेरोजगारी दर कम करने में काफी मदद मिली।

आईटीआई केंद्रों का आधुनिकीकरण

मुख्यमंत्री बघेल ने बताया कि प्रदेश के 36 आईटीआई के आधुनिकरण के लिए 1188.36 करोड़ परियोजना के लिए एमओयू किया गया है, जिससे युवाओं को छह नवीन तकनीकी ट्रेड के साथ ही 23 शाट टर्म कोर्स में प्रशिक्षण दिया जाएगा। इससे लगभग प्रतिवर्ष 10 हजार युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा। युवाओं को विभिन्न उद्योगों में नियोजित कराया जाएगा। युवाओं को अपनी तरक्की के राह में आर्थिक परेशानियों का सामना न करना पड़े, इसलिए हमने बेरोजगारी भत्ता देने और पीएससी व व्यापम की प्रतियोगी परीक्षाओं में शुल्क माफ कर उन्हें बड़ी राहत देने का काम किया है।

पालकों और दूसरों पर निर्भरता हुई कम

छत्तीसगढ़ में बेरोजगारी भत्ता देने की घोषणा के बाद इसके पंजीयन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। ढाई हजार रुपए मिलने से बेरोजगार युवाओं की अपने पालकों और दूसरों पर निर्भरता कम होगी। इस योजना को लेकर युवाओं का कहना है कि उनके संघर्ष के दिनों की तकलीफ थोड़ी कम होगी और जेब खर्च निकलने से परिवार पर निर्भरता से थोड़ी राहत मिल सकेगी।

पांच वर्षों में होगा 15 लाख रोजगार के नए अवसरों का सृजन

रोजगार मिशन के जरिए अगले पांच वर्षों में रोजगार के 15 लाख नए अवसरों का सृजन करने का लक्ष्य तय किया है। यह मिशन रोजगार को बढ़ावा देने संबंधी नीतिगत फैसले लेगा और राज्य की औद्योगिक नीति और अन्य नियमों में जहां भी आवश्यक प्रावधान करने की जरूरत होगी वहां अपनी सिफारिश करेगा। सभी जिलों में रोजगार के लिए विशिष्ट क्षेत्रों को चिन्हित किया जाएगा। इनमें परम्परागत अवसरों के साथ ही रोजगार के नए अवसरों की पहचान की जाएगी। रोजगार के इच्छुक युवाओं को चुनकर उनके लिए कौशल विकास की व्यवस्था की जाएगी। जिलों में रोजगार पार्क भी बनाए जाएंगे। रूरल इंडस्ट्रयल पार्कों में तैयार उत्पादों की शासकीय खरीदी के अलावा खुले बाजार में बिक्री की व्यवस्था की जाएगी। सेवा क्षेत्रों में नए रोजगार की संभावनाओं को देखते हुए इन गतिविधियों में युवाओं के कौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाएगी।

प्रत्येक जिले में 10 से 20 विशिष्ट गतिविधियों पर फोकस

रोजगार की गतिविधियां बढ़ाने के लिए सभी जिलों में वहां की परिस्थितियों के अनुसार गतिविधियों पर फोकस किया जाना है। इसके तहत चुनी गई 10 से 20 गतिविधियों में जिला स्तर पर कार्य योजना तैयार की जाएगी। कार्य योजना अल्पावधि और दीर्घ अवधि दोनों के लिए तैयार होगी। इसके लिए सभी जिला कलेक्टरों को दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

शैक्षणिक संस्थानों से भी मदद ले रहा मिशन

अधिकारियों ने बताया कि रोजगार के नए अवसरों के सृजन के लिए यह मिशन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय प्रबंध संस्थान और कृषि विश्वविद्यालयों से भी मदद लेगा। उनके साथ छत्तीसगढ़ के उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शोध कार्य होगा। मिशन स्टार्टअप को प्रोत्साहन देने के साथ ही उत्पादों की मार्केटिंग स्ट्रेटजी और ऋण सुविधा उपलब्ध कराने में मदद भी करेगा।

नए स्कूल, कॉलेजों की शुरुआत से बड़े पैमाने पर रोजगार मिला

वनाधिकार पत्र के जरिए अनुसूचित जनजाति व अन्य परंपरागत वन निवासियों को संसाधन उपलब्ध करवाए गए। औद्योगिक नीतियों में बदलाव किया गया, ताकि ज्यादा से ज्यादा उद्योग स्थापित किए जा सकें। शिक्षा के क्षेत्र में नए स्कूल, कॉलेजों की शुरुआत से बड़े पैमाने पर रोजगार मिला। विभाग निगम, मंडलों, आयोगों व समितियों आदि में निर्धारित व्यवस्था तथा व्यापम और लोकसेवा आयोग के जरिए मिलने वाली नौकरी के लिए पारदर्शी व्यवस्था बनाकर समय पर परीक्षाएं करवाई गईं, ताकि नौकरियां निरंतर मिलती रहें। इन तमाम प्रयासों का असर ही बेरोजगारी के आंकड़ों को धीरे-धीरे कम करता गया।

पारम्परिक कलाकारों को मिला नया बाजार, बढ़ी आमदनी

राज्य की पारम्परिक कलाओं जैसे हैंडलूम वीविंग, मधुमक्खी पालन, लाख, जड़ीबूटी संग्रहण, बेल मेटल, ढोकरा शिल्प, बांस शिल्प, गोबर एवं गौमूत्र से बने उत्पाद, वनोपज से बने उत्पाद, अगरबत्ती, मोमबत्ती निर्माण व सिलाई-बुनाई इत्यादि को उच्च प्राथमिकता एवं प्राथमिकता निर्धारित कर विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है। इस नीति के तहत महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति को 10 प्रतिशत अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि दिए जाने का प्रावधान है। आईटीआई, पॉलिटेक्निक आदि संस्थाओं में ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी तथा भविष्य के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई है।

मंत्री मरकाम ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का किया सम्मान

पायनियर संवाददाता ➤ कोंडागांव
www.dailypioneer.com

कोंडागांव विधायक एवं छग केबिनेट मंत्री मोहन मरकाम ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका और मितानीनों के लिए मिलन सम्मान समारोह का आयोजन कर उन्हें सम्मानित किया। इस सम्मान समारोह में कोंडागांव विधानसभा क्षेत्र के लगभग 5 हजार कार्यकर्ता सहायिका और मितानिन शामिल हुए। इस दौरान मंत्री मोहन मरकाम के साथ आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका के प्रमुख महिला कार्यकर्ताओं ने छत्तीसगढ़ महात्मा गांधी के छायाचित्र पर माल्यार्पण किया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला कॉंग्रेस के सदस्यों ने सम्बोधित किया और मंत्री मोहन मरकाम ने इसे एक राजनीतिक कार्यक्रम के रूप में नहीं बताया, बल्कि यह छत्तीसगढ़ की परंपरा के अनुसार बस्तर क्षेत्र के नवा खानी मिलन समारोह का हिस्सा था। मोहन मरकाम ने कोरोना महामारी के दौरान किए गए कामों के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया और उनके द्वारा किए गए परिश्रम की सराहना की। कार्यक्रम में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका और मितानिनों ने गीत और नाटक के माध्यम से अपनी कहानियों को साझा किया। मंत्री मोहन मरकाम ने सवाल का आयोजन किया और सही जवाब देने वालों को पुरस्कृत भी किया। कार्यक्रम के दौरान 20 मितानिन और 20 आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका को कोरोना वॉरियर्स के रूप में पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के बाद भोजन का आयोजन भी किया गया, जिसमें विधानसभा क्षेत्र की लगभग 5 हजार महिलाएं भाग लीं। इस सम्मान समारोह ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के महत्वपूर्ण भूमिका को प्रमोट किया और उनके सेवाओं का सम्मान किया। मंत्री मोहन मरकाम ने इस मौके पर उनकी मेहनत की सराहना की और उनके सेवाओं के लिए आभार व्यक्त किया। वह इसे एक नई शुरुआत के रूप में देख रहे हैं और अपने भविष्य में भी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ काम करने का प्रतिश्रद्धा किया।

हाथी मित्र दल के सदस्यों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

चारामा। वन मंडल कांकेर अंतर्गत वन कर्मचारियों अधिकारियों एवं हाथी मित्र दल के सदस्यों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण तमोर पिंगला अभ्यारण एलिफेंट रिजर्व सरगुजा अंतर्गत रामकोला में 22 से 26 सितंबर तक संपन्न हुआ, जिसमें वन परिक्षेत्र चारामा के परीक्षेत्र सहायक युगल किशोर सोनबोईर,जीवन साहू ,मनीष नेताम एवं वनरक्षक नरेश कुमार साहू, प्रदीप भालेश्वर ,तरुण कुमार मंडावी सहित ग्राम पंडरीपानी, हराडुला, गिधाली क्षेत्र के हाथी मित्र दल के सदस्य सम्मिलित हुए।

प्रशिक्षण में सभी को हाथी मानव द्वंद को रोकने के उपाय, हाथी ट्रैकिंग ,कुमकी हाथी के साथ वन भ्रमण आदि प्रशिक्षण में सिखाया गया। भविष्य में जिसका लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को मिलेगा। क्योंकि चारामा वन परिक्षेत्र में लगातार हाथियों के आने का सिलसिला जारी हैं।ऐसे में इस प्रशिक्षण से हाथी से आम।जन की सुरक्षा और हाथी की सुरक्षा को भी नया आयाम मिलेगा।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चारामा में रक्तदान शिविर का आयोजन किया

पायनियर संवाददाता ➤ चारामा
www.dailypioneer.com

आयुष्मान भव अभियान के तहत 29 सितंबर को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चारामा में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 28 रक्तदाताओं ने रक्त दान किया। शिविर का संचालन बीएमओ लखन लाल जुर्री की उपस्थिति में जिला से आए डॉ. अखिलेश गायकवाड, डॉक्टर एम0के0 मरकाम रविशंकर सिंह पैथालॉजिस्ट (प्रभारी ब्लड बैंक) प्रभारी लैब टेक्नीशियन, मनीष ठाकुर लैब टेक्नीशियन, तामेश्वर साहू लैब टेक्नीशियन, अजय सेठिया लैब टेक्नीशियन, गायत्री ध्रुव स्टॉफ नर्स,कु. ममता शोरी लैब टेक्नीशियन, चारामा स्वास्थ्य कर्मचारी लैब टेक्नीशियन जी आर मंडावी दुष्यंत गावड़े,शिवानी जैन, एस के गजेंद्र, फर्मासिस्ट टमन जैन, बीपीएम धनंजय बंसोड़ सहित अन्य कर्मचारियों के सहयोग से 28 लोगों का रक्तदान हुआ।

जिसमे आम नागरिकों के अलावा पत्रकारों और खुद स्वास्थ्य कर्मचारियों शिक्षको और महिलाओं ने भी बढ़चढ कर रक्तदान किया।रक्तदान के लिए रेडक्रॉस सोसायटी से शिक्षक विजय राय,कमलेश गावड़े,बोधन साहू,धर्मेंद्र साहू,पवन जैन और युवा समाज सेवी संस्था के अध्यक्ष उत्तम साहू, लिकेश घृतलेहरे, जयहिंद रक्तदान सेवा समिति के अध्यक्ष टीकम तारम, का भी सहयोग रहा। शिविर में एसडीएम राकेश गोलछा,नायब तहसीलदार मिशा भार्गव भी उपस्थित होकर सभी रक्तदाताओं को रक्तदान करने पर शासकीय कोमल देव जिला चिकित्सालय कांकेर की और से जारी रक्तदान सेवा प्रशंसा पत्र का वितरण किया और शुभकामनाएं देते हुए और भी लोगों को अधिक से अधिक रक्तदान करने की अपील की।

83 श्वानों का हुआ एंटी रेबीज टीकाकरण

पायनियर संवाददाता ➤ कोंडागांव
www.dailypioneer.com

विश्व रेबीज दिवस पर 28 सितंबर को कलेक्टर दीपक सोनी के मार्गदर्शन में उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवाएं डॉ शिशिरकांत पाण्डेय के निर्देशन में निःशुल्क एंटी रेबीज टीकाकरण एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन पशु चिकित्सालय कोंडागांव में किया गया। इस शिविर में 83 लावारिस एवं पालतू श्वानों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं एंटी रेबीज टीकाकरण का कार्य किया गया। कार्यक्रम में पूरे जिले के पशु चिकित्सक एवं विषय विशेषज्ञ उपस्थित रहे। उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवाएं ने रेबीज बीमारी के बढ़ते प्रकोप एवं गंभीरता को देखते हुए नगरवासियों से श्वान एवं बिल्लियों का नियमित एंटी रेबीज टीकाकरण कराने हेतु अपील की साथ ही विभाग द्वारा इस दिशा में पहले से ही स्कूल के विद्यार्थियों को रेबीज के प्रति जागरूक एवं 46 कुत्तों की नसबंदी भी की गई है। लावारिस श्वान के टीकाकरण में एनजीओ शांति फाउंडेशन का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

एनएमडीसी, बचेली परियोजना के आस-पास के क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान के अंतर्गत स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन

पायनियर संवाददाता ➤ बचेली
www.dailypioneer.com

एनएमडीसी, बचेली कॉम्प्लेक्स में दिनाँक 15.09.2023 से 02.10.2023 तक विशेष अभियान 3.0 'स्वच्छता ही सेवा' के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है ।

इसी कड़ी में बचेली परियोजना में भी विभिन्न अभियानों का आयोजन किया जा रहा है। इसमें परियोजना के सभी विभागों में दस्तावेजों का निरिक्षण/निपटान करना, परियोजना के आस-पास के क्षेत्रों की सफाई करवाना इत्यादि शामिल हैं।

इस अभियान के अंतर्गत आज दिनाँक 29.09.2023 को सीएसआर विभाग द्वारा आस-पास के गावों में स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं एवं ग्रामीणों को वातावरण को स्वच्छ रखने व स्वच्छ रहने से होने वाले लाभ के बारे में बताया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक (कार्मिक), एनएमडीसी, बचेली द्वारा ग्रामीणों को स्वच्छता के महत्त्व के बारे में बताया गया। इस गतिविधि की प्रारम्भ परियोजना प्रमुख बी. वेंकटश्वरलु के मार्गदर्शन से की गयी है जिसका संचालन सीएसआर व कार्मिक विभाग द्वारा किया गया है।

विधानसभा की तैयारियों के लिए सभी बीएलओ को दिया गया प्रशिक्षण

पायनियर संवाददाता ➤ कोंडागांव
www.dailypioneer.com

कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देशन में को कोंडागांव, केशकाल और नारायणपुर विधानसभा के समस्त बूथ लेवल अधिकारियों की मीटिंग एवं ट्रेनिंग सीईओ जिला पंचायत प्रेम प्रकाश शर्मा एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी सीमा ठाकुर की उपस्थिति में किया गया। जिनमें सभी बीएलओ को मतदान दिवस के समय और चुनाव से संबंधित कर्तव्य के संबंध में उन्हें अवगत कराया गया। मतदान के दिन उनके दायित्वों एवं सेक्टर अधिकारियों के साथ उनके कार्यों से अवगत कराया गया। किस तरह के प्रपत्र तैयार किए जाने हैं उसकी जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त आगामी विधानसभा चुनाव में 80 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के वोटरों एवं दिव्यांग मतदाता जो लोग मतदान केंद्र पर जाकर वोट डालने में असमर्थ है। ऐसे लोगों को चुनाव आयोग द्वारा डाक मतपत्र उपलब्ध कराने के लिए निर्देशित किया गया हैं। तत्संबंध में भी सभी बीएलओ को निर्देश जारी किया गया हैं कि, ऐसे मतदाताओं की पहचान करके वह अपने रिटर्निंग अधिकारी को जानकारी प्रदान करेंगे ताकि उन्हें समय अवधि में डाक मतपत्र वितरण किया जा सके। इसके अतिरिक्त चुनाव संबंधित समस्त गतिविधियों की जानकारी अभी बीएलओ को दी गई और मूलभूत सुविधाओं के संबंध में निगरानी रखने एवं उनकी तैयारी करने के लिए संबंध में भी ठस्क्को निर्देशित किया गया।

कब-बुलबुल ने मनाया भगत सिंह की जयंती

पायनियर संवाददाता ➤ कोंडागांव
www.dailypioneer.com

शासकीय प्राथमिक शाला मुरारीपारा बड़ेबेंद्री में भगत सिंह की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर शाला के छात्र-छात्राएं और शिक्षक गण ने भगत सिंह को समर्पित करते हुए उनकी प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित किया और पुष्प अर्पित किए। इस खास मौके पर शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा भगत सिंह की यादें ताजगी से जिन्दा की गई। इस समारोह में बुलबुल टीम ने भगत सिंह के वीर गीतों का गायन किया, जिससे छात्रों को उनके संदेशों का अध्ययन करने का अवसर मिला। साथ ही, छात्रों को उनके जीवन और संघर्ष की महत्वपूर्ण बातें सीखने का मौका भी मिला। इस समारोह का उद्देश्य छात्रों को राष्ट्रीय गौरव के महान वीरों के प्रति समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करना और उन्हें उनके महान कार्यों का सम्मान करने के लिए जागरूक करना था। इसके साथ ही, छात्रों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्व को समझाने का भी प्रयास किया गया।

नक्सलपीडित से जन्मप्रमाण पत्र के लिए 1500 रु की मांग भाजपा नेत्री दीपिका के दखल से पीड़ित को मिली राहत

पायनियर संवाददाता ➤ सुकमा
www.dailypioneer.com

सुकमा जिले के विकासखण्ड छिंदगढ़ के ग्राम पंचायत बोकड़ा ओडार के रहने वाले नक्सलपीडित आदिवासी युवक धनीराम को अपने पुत्र का जन्मप्रमाण पत्र बनाने हेतु तहसील कार्यालय छिंदगढ़ में लगातार 1500 रु की मांग की जा रही थी पीड़ित के पास उतनी राशि नहीं होने पर उसने आर्थिक मदद करने हेतु भाजपा नेत्री अधिवक्ता दीपिका शोरी से मिलने उनके घर पहुंचा इस पर दीपिका ने पैसे की आवश्यकता का कारण पूछा जिसपर पीड़ित ने उन्हें तहसील कार्यालय छिंदगढ़ में जन्म प्रमाण पत्र बनाने के एवज में 1500 रु की नाजायज मांग के विषय में बताया ,इस बात को सुनकर दीपिका ने तहसीलदार छिंदगढ़ को फोन लगाकर इसकी जानकारी दी, दीपिका ने बताया कि मेरे फोन करने पर तहसीलदार ने धनीराम को बुलाकर तत्काल प्रमाणपत्र दिलवा दिया परन्तु तहसील कार्यालय में राशि मांगने की बात से अपनी अनभिज्ञता जाहिर की परन्तु यह कैसे हो सकता है कि प्रतिदिन सैकड़ो की तादात ग्रामीण यहां प्रमाणपत्र बनवाने आते है व उनसे निर्धारित शुल्क से अतिरिक्त राशि वसूली जा रही हो और कार्यालय प्रमुख को इसकी जानकारी न हो इसके बाद भाजपा नेत्री ने स्वयं तहसील कार्यालय जाकर तस्दीक की वहाँ उपस्थित बहुत से ग्रामीणों से दीपिका ने बात की तो पता चला कि यहाँ प्रमाण पत्र हेतु निर्धारित राशि से अधिक राशि की वसूली की जा रही थी,भाजपा नेत्री दीपिका ने कहा कि मैंने छिंदगढ़ के तहसीलदार से मिलने का लगातार प्रयास किया परन्तु तहसीलदार से मुलाकात नहीं हो पाई मैं मीडिया के माध्यम से कलेक्टर सुकमा से अपील करती हूं कि समस्त तहसील कार्यालय में जांच की जाए व ग्रामीणों को इन अनियमितताओं से राहत दिलाय जाए

इस विषय पर हमने छिंदगढ़ के तहसीलदार योपेन्द्र कुमार पात्रे से बात करने का प्रयास किया तो उन्होंने कार्यालय में नहीं हैं बताया व कहा कि इस मामले में मुझे अधिवक्ता दीपिका शोरी का फोन आया था मैंने उक्त पीड़ित को तत्काल प्रमाणपत्र दिलवा दिया था मेरे कार्यालय में राशि की मांग की जानकारी मुझे नहीं हैं मैं पता कर उचित कार्यवाही करूँगा।

धनीराम के पिता की जन अदालत में नक्सलियों की थी हत्या

विदित हो कि धनीराम के पिता आयताराम मंडावी समाज सेवा का कार्य करते थे व भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता थे जिन्हें नक्सलियों ने जन अदालत लगाकर हत्या कर दी थी।

आगामी विधानसभा निर्वाचन के लिए मीडिया प्रमाणन का प्रशिक्षण

पायनियर संवाददाता ➤ कोंडागांव
www.dailypioneer.com

कलेक्टर ने आगामी विधानसभा निर्वाचन 2023 के साथ मीडिया का महत्व बढ़ गया हैं और उन्होंने मीडिया प्रमाणन और अनुवीक्षण का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने इसे महत्वपूर्ण बताया और उपयोगकर्ताओं को आदर्श आचार संहिता का पालन करने की सलाह दी।

उन्होंने सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों पर भी निगरानी बनाने का निर्देश दिया और राजनीतिक विज्ञापनों को प्रमाणित करने के लिए आवश्यकताओं के बारे में जानकारी प्रदान की। समिति ने राजनीतिक विज्ञापनों की मॉनिटरिंग के लिए निर्देश दिए और अवैध विज्ञापनों के खर्च का सही समय पर प्राप्त उत्तर सुनिश्चित करने की बात की। इसके अलावा, आदर्श आचार संहिता के खिलाफ विज्ञापनों की प्रकाशन नहीं की जाएगी। कलेक्टर ने मीडिया प्रमाणन और अनुवीक्षण के महत्व को बताया और आगामी विधानसभा निर्वाचन 2023 के साथ मीडिया पर कड़ी नजर रखने के निर्देश दिए।

उन्होंने राजनीतिक विज्ञापनों की प्रमाणित करने के निर्देश भी दिए और सोशल मीडिया पर भी निगरानी बनाने की बात की।

समूह की महिलाओं ने दिखाई मुर्गा पालन में रुचि

कृषि विज्ञान केंद्र के अधिकारियों के साथ किसानों ने पुजारीपाल में चलाया स्वच्छता अभियान

पायनियर संवाददाता ➤ सुकमा
www.dailypioneer.com

छिंदगढ़ विकास खंड के ग्राम पूजारीपाल में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख एच एस तोमर, विषय वस्तु विशेषज्ञ राजेन्द्र प्रसाद कश्यप ने ग्रामवासियों के साथ स्वच्छता अभियान चलाया। जिसमें ग्रामवासियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। साथ ही ग्रामवासियों को बीमारियों से बचने के लिए ग्राम में नियमित रूप से सफाई करने कहा गया।

इस दौरान किसानों को फसलों में लगने वाले कीड़े और बीमारियों से रोकथाम की जानकारी दी गई। वहीं कुछ किसानों ने धान के फसलों में पत्ती मोड़क कीट (सोरटी) प्रकोप की समस्या बताई। मौके पर अधिकारियों ने किसानों के खेतों का मुआयना किया। किसानों को कीड़े से प्रभावित फसलों में फिपरोनिल 5 प्रतिशत एससी 400 ग्राम प्रति एकड़ अथवा प्रोफेनोफॉस 50 एसी 400 मिली लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करने की सलाह दी। इस दौरान समूह की महिलाओं ने देशी असील प्रजाति के मुर्गा पालन करने में रूचि दिखाने पर कृषि विज्ञान केंद्र के अधिकारियों ने जिला प्रशासन, पशुपालन विभाग के माध्यम से सहायता प्रदान करने की बात कही। वहीं किसानों को भी समूह बनाकर मछली पालन करने के लिए प्रेरित किया गया।

इस अवसर पर ग्राम के पटेल, किसान मित्र, जनप्रतिनिधि, कृषि विज्ञान केंद्र के वाहन चालक ज्योतिष कुमार पोटला, परमेश सिंह सोरी सहित करीब पचास कृषकगण उपस्थित थे।

न्यायालय तहसीलदार बम्हनीडीह जिला-जांजगीर चांपा (छ.ग.)

// ईश्तहार //

रा.प्र.क्र...../...../2023
दिनांक 25/09/2023

आम जनता ग्राम बम्हनीडीह के सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका/आवेदक संतोष कुमार जायसवाल पिता मदनलाल जाति कलार निवासी बम्हनीडीह तहसील बम्हनीडीह जिला जांजगीर चांपा (छ.ग.) में इस न्यायालय में अपनी दादा पीलाराम पिता/पति बलदेव जायसवाल का मृत्यु दिनांक 19/12/2020 को ग्राम बम्हनीडीह में हुआ है। जिसका पंजीयन हेतु आवेदन पत्र, पटवारी प्रतिवेदन, मय पंचनामा, शपथ पत्र सहित प्रस्तुत किया है।

अतः उक्त आवेदन पर जिस किसी व्यक्ति या संस्था को दावा/आपत्ति हो तो नियत दिनांक ..... को स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से अपना दावा/आपत्ति इस न्यायालय में उपस्थित होकर कर सकते हैं। नियत दिनांक के आदेश प्राप्त दावा/आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक 25/09/2023 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पद मुद्रा से जारी किया गया।

जारी दिनांक : 25/09/2023
पेशी दिनांक : 10/10/2023

मुहर

कार्यपालिक दण्डाधिकारी
बम्हनीडीह

कार्यालय, नगर पालिका निगम, भिलाई
मदर टेरेसा नगर जोन क्र.-3

// निविदा सूचना //

क्र./लो.क.वि./न.नि./2023/461/348 — भिलाई, दिनांक 26/09/2023

आयुक्त, नगर पालिक निगम, भिलाई की ओर से एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से लोक निर्माण विभाग के भवन/सड़क एस.ओ.आर. दिनांक 01.01.2015 एवं इलेक्ट्रिकल एस.ओ.आर. 01.05.2020 से लागू तथा नान एस ओ आर पर एवं अद्यतन संशोधन के आधार पर कम/अधिक पर निम्न लिखित कार्य हेतु मुहरबंद निविदा स्पीड पोस्ट के माध्यम से आमंत्रित की जाती है।

कार्य क्र.-01 से 05 हेतु निविदा तिथि
1. निविदा जारी करने की तिथि - दिनांक 26.09.2023
2. आवेदन की अंतिम तिथि - दिनांक 11.10.2023 सायं 5:30 बजे तक
3. निविदा प्राप्ति की तिथि - दिनांक 18.10.2023 सायं 5.30 बजे तक
4. निविदा खोले जाने की तिथी- दिनांक 19.10.2023

कार्य क्र.-06 से 07 हेतु निविदा तिथि
1. निविदा जारी करने की तिथि - दिनांक 26.09.2023
2. आवेदन की अंतिम तिथि - दिनांक 04.10.2023 सायं 5.30 बजे तक
3. निविदा प्राप्ति की तिथि - दिनांक 11.10.2023 सायं 5.30 बजे तक
4. निविदा खोले जाने की तिथि - दिनांक 12.10.2023

क्र.	कार्य का नाम	निविदा लागत (लाख में)	धरोहर राशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	समयावधि
1	विधायक निधि अंतर्गत वार्ड क्र.-36 श्याम नगर तेलगू मोहल्ला में श्री चिन्ना राव के घर के पीछे सार्वजनिक सामुदायिक भवन निर्माण कार्य। (जोन-03)	5.00	5000.00	750.00	90 दिन
2	विधायक निधि अंतर्गत वार्ड क्र.-35 शारदा पारा मनोकामना हनुमान मंदिर के पास सार्वजनिक डोम शेड निर्माण कार्य। (जोन-03)	10.00	7500.00	750.00	90 दिन
3	विधायक निधि अंतर्गत वार्ड क्र.-30 प्रगति नगर केम्प-01 हनुमान मंदिर के पास सार्वजनिक डोम शेड निर्माण काय। (जोन-03)	10.00	7500.00	750.00	90 दिन
4	विधायक निधि अंतर्गत वार्ड क्र.-30 प्रगति नगर केम्प-01 रामजानकी मंदिर के पास सार्वजनिक सियान सदन निर्माण कार्य। (जोन-03)	5.00	5000.00	750.00	60 दिन
5	पार्षद निधि अंतर्गत सेक्टर-02 पशुराम भवन के पास एवं ब्लाक-01 से 15 तक सी.सी. रोड सहित नाली निर्माण कार्य।	4.00	4000.00	750.00	60 दिन
6	वार्ड-32, बैकुंठपुर में सी.सी. रोड एवं नाली निर्माण कार्य। (जोन-03) (द्वितीय बार)	18.00	14000.00	750.00	04 माह
7	वार्ड क्र.-53 सेक्टर-01 सी मार्केट में आर.सी.सी. नाली निर्माण कार्य। (जोन-03) (द्वितीय बार)	10.00	7500.00	750.00	90 दिन

उपरोक्त कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। साथ ही यह जानकारी नगर निगम भिलाई के वेबसाइट www.bhilainagarnigam.com अथवा संचालनालय की वेबसाईट www.uad.cg.gov.in and चिप्स की वेबसाईट eproc.cgstate.gov.in और bhilai.urbanecg.gov.in से देखी जा सकती है। धरोहर राशि एफडी.आर के रूप में जोन आयुक्त/कार्यपालन अभियंता, नगर पालिक निगम भिलाई एवं संबंधित ठेकेदार के नाम से किसी राष्ट्रीयकृत बैंक से जारी, जमा करना होगा तथा प्रत्येक कार्य के लिये जीवित ठेकेदारी ई-पंजीयन, जी एस टी प्रमाणपत्र, पेनकार्ड/आयकर प्रमाण पत्र की सत्यापित प्रति जीवित साल्वेंसी की छायाप्रति एवं नोटरी से जारी (100/-रू.) का शपथ पत्र की मूलप्रति लिफाफा ''क'' में प्रस्तुत करना है एवं निविदा प्रपत्र दर राहित लिफाफा ''ख'' में प्रस्तुत करना होगा।

संपत्तिकर भू-भाटक की राशि निगम कोष में जमा कर विकास कार्यों में सहयोग करें। जल ही जीवन है जल का सदुपयोग करें उसे व्यर्थ न बहाएं। स्वच्छ भारत अभियान, स्वच्छ एवं सुदर भिलाई।

जोन आयुक्त
जोन-3
नगर पालिक निगम भिलाई

बेलाहीडबरी नाला में तीस लाख की लागत से होगा बांध का निर्माण, दो सौ एकड़ में होगी सिंचाई

संसदीय सचिव ने ग्रामीणों की मौजूदगी में किया डैम निर्माण के लिए भूमिपूजन

पायनियर संवाददाता ➤ महासमुंद
www.dailypioneer.com

तीस लाख की लागत से ग्राम खट्टी के बेलाहीडबरी नाला पर स्टाप डेम का निर्माण कराया जाएगा। डेम निर्माण के बाद करीब दो सौ एकड़ में सिंचाई हो सकेगी। संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवनलाल चंद्राकर के प्रयास से इसके लिए मंजूरी मिली है। डैम निर्माण के लिए ग्राम खट्टी में भूमिपूजन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवनलाल चंद्राकर थे। अतिथि के रूप में मंडी अध्यक्ष हीरा बंजारे, जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री संजय शर्मा, हुलासगिरी गोस्वामी, शेखर चंद्राकर, दुजराम साहू, चमन सिन्हा, रेवा साहू, सुनील शर्मा, प्रेम चौहान मौजूद रहे। पूजा अर्चना बाद मुख्य अतिथि चंद्राकर ने डैम निर्माण के लिए भूमिपूजन किया। अपने संबोधन में संसदीय सचिव व विधायक चंद्राकर ने कहा कि बेलाहीडबरी पर स्टाप डेम के लिए ग्रामीण लंबे समय से मांग कर रहे थे। जिसे गंभीरता से लेते हुए शासन-प्रशासन का ध्यानाकर्षित कराया। बाद इसके स्टाप डेम निर्माण के लिए कैंपा मद से लगभग तीस लाख की स्वीकृति मिल सकी है। उन्होंने कहा कि जल्द ही बेलाहीडबरी नाला में डैम का निर्माण हो जाएगा। इससे करीब दो सौ एकड़ में सिंचाई की सुविधा मिल सकेगी। संसदीय सचिव चंद्राकर ने कहा कि शासन द्वारा ग्रामीणों को लाभान्वित कराने के लिए कई योजनाएं संचालित कर विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। संसदीय सचिव व विधायक चंद्राकर ने कहा कि भूपेश सरकार द्वारा प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी में से नरवा विकास के तहत नदी-नलों का संरक्षण, तालाबों का गहरीकरण, सिंचाई जलाशयों व नहरों की मरम्मत, एनीकटों का निर्माण सहित भू-जल स्तर बढ़ाने के कार्यो को प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं को बढ़ाने के लिए हरसंभव प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान में कोडार जलाशय के 80 फीसदी नहरों में लाइनिंग का कार्य पूरा हो गया है। किसान समृद्ध हो इसके लिए प्रदेश सरकार कटिबद्ध है और किसानों के हितों को ध्यान में रखकर फैसला ले रही है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से रेंजर टीआर सिन्हा, नकूल मेहरा, मन्नू लाल साहू, परमानंद ध्रुव, सुरेश निषाद, सोहन पटेल, मनहरण निषाद, रामदयाल साहू, रामकिशुन पटेल, पवन साहू, रोशन साहू, कमला बाई यादव, बसंता यादव, शकुन निषाद, पार्वती जोशी, संतोषी साहू, तीजबाई मानिकपुरी, छोटेलाल मानिकपुरी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन मौजूद थे।

पर्वाधिराज महापर्व साआनन्द संपन्न

पायनियर संवाददाता ➤ बलौदाबाजार
www.dailypioneer.com

जैन समाज का पर्वाधिराज महापर्व साआनन्द सम्पूर्ण हो चुका है।इन दिनों सांगानेर से आये भैया सन्मय शास्त्री और साथ में बलौदाबाजार के पंडित धन प्रसाद ने मिलकर अभिषेक, शान्ति धारा व पूजन होती थी। तत्पश्चात शाम के समय सामूहिक आरती तत्पश्चात दसलक्षण पर्व के महत्व को समजाते हुए रात्रि में भैया जी द्वारा दस दिन प्रवचन किये गए जिसका लाभ समाज को प्राप्त हुआ। प्रवचन के पश्चात समाज के बच्चों और महिलाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रम का आयोजन महिलाओं द्वारा किया गया। जैन समाज के अध्यक्ष दिनेश जैन ने बताया कि सांगानेर से आये भैया जी के कारण समाज में धर्म की अच्छी प्रभावना हुई जिससे समाज में धार्मिक वातावरण बना हुआ है। और सचिव अमित जैन, सह सचिव सुभाष जैन एवं प्रचार प्रसार के प्रमुख सुमित जैन के द्वारा सामुहिक वात्सल्य भोजन का आयोजन किया गया जिसका समाज के सभी वर्गों ने आनन्द लिया। दसलक्षण पर्व के दिनों में मंदिर जी में उपस्थित जनों में समाज के संरक्षक, इंद्र कुमार महावीर पदमचंद रमेश नगर पालिका पूर्व अध्यक्ष अशोक जैन जी दिलीप जैन महेंद्र जैन कपूर चंद्र जैन शैलेश जैन सुरेश जैन नरेंद्र जैन प्रवीन जैन संजय जैन अखिलेश जैन लकी जैन मयूर जैन रवि जैन सह सचिव सुभाष जैन प्रचार प्रसारक सुमित जैन नितिन जैन सुधीर जैन जितेंद्र गोलू जैन अनुराग जैन और महिलाओं, में समाज की अध्यक्षता सुमन जैन ममता जैन, साधना जैन, सोभा जैन निर्मला देवी जैन, बीना जैन, संध्या जैन, दीप्ति जैन, मीनल जैन, एकता जैन, नेहा जैन, रंजना जैन, डिंपल जैन, आदि उपस्थित थे।

जिला हॉस्पिटल में रक्तदान शिविर आज

पायनियर संवाददाता ➤ बलौदाबाजार
www.dailypioneer.com

कलेक्टर चंदन कुमार के निर्देश पर 1 अक्टूबर को राष्ट्रीय स्वेच्छिक रक्तदान दिवस के अवसर पर जिला अस्पताल बलौदाबाजार में ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया जा रहा है।इस बारे जानकारी देते हुए सिविल सर्जन डॉक्टर राजेश कुमार अवस्थी ने बताया की एक अक्टूबर को सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक जिला अस्पताल के ब्लड बैंक विभाग में इस शिविर का आयोजन किया जाएगा। ब्लड बैंक के प्रभारी डॉक्टर अशोक वर्मा के अनुसार 18 से 65 वर्ष का कोई भी व्यक्ति महिला या पुरूष रक्तदान कर सकते हैं जिसका वजन 45 किग्रा से अधिक और हीमोग्लोबिन 12.5 मिग्रा होना चाहिए। रक्तदान को जीवन दान माना जाता है। एक व्यक्ति के रक्तदान से 4 मरीजों के जान की रक्षा की जा सकती है। साल में 4 बार रक्तदान किया जा सकता है । एक समय मे 350 मिली रक्त ही निकाला जाता है। रक्तदान से कोई शारीरिक कमजोरी नहीं आती बल्कि शरीर नया रक्त बना लेता है। रक्त दान से प्राप्त रक्त का उपयोग दुर्घटना, सिकल सेल, थैलीसीमिया, एनीमिया, हीमोफीलिया जैसे आवश्यक चिकित्सा इमरजेंसी में कर के किसी मरीज की जान बचाई जा सकती है। कलेक्टर चंदन कुमार एवं सीएमएचओ डॉ एम पी महिस्वर ने लोगों से अधिक संख्या में रक्तदान कर इस नेक कार्य मे सहयोग की

नुआखाई महोत्सव में शामिल होने झुग्गिवासियों में हर्ष का माहौल : सावित्री जगत

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

उत्कल समाज का महापर्व नुआ खाई का त्योहार हर्षोल्लास के साथ विगत पंचमी को राजधानी के उत्कल वासियों ने मनाया। परम्परा के अनुसार गणेश चतुर्थी के दूसरे दिन अर्थात पंचमी को नुआ खाई मनाया जाता है, उसके पश्चात समाज के लोगों में आपस में जुहार भेंट कार्यक्रम आयोजित होते है और बड़ो के पैर छू कर कनिष्ठ लोग आशीर्वाद लेते है, एक दूसरे को गले लगा कर अभिवादन करते है और यह सिलसिला लगभग एक माह तक रहता है । इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए छत्तीसगढ़ प्रदेश उत्कल महिला मंच ने आगामी 01.10.23 को भव्य रूप से नुआ खाई महोत्सव मनाने का निर्णय लिया है जिसकी शुरुआत झुग्गी बस्तियों में चालू हो चुकी है। उक्त जानकारी छत्तीसगढ़ प्रदेश उत्कल महिला मंच की अध्यक्ष सावित्री जगत ने दी. उन्होंने बताया कि इस वर्ष नुआ खाई महोत्सव को ऐतिहासिक बनाने के लिए झुग्गीवासियों में बहुत ही जोश और हर्ष उल्लास है और सभी लोग बढ़ चढ़ कर भाग ले कर तैयारी कर रहे है । विदित हो कि नुआ खाई महोत्सव 2023 का मुख्य आकर्षण पश्चिम ओडिशा का स्टार रुकु सोना एंड टीम होंगे जो सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर ऑडियंस को मनोरंजन करेंगे । इस अवसर पर आकर्षक कार्यक्रम होंगे और अनेक अतिथिगण शामिल होंगे। आयोजन को सफल बनाने हेतु हेमा सागर, संतोषी सोनी, पिंकी निहाल, प्रीति सागर, कौशल्या सागर, शीला बघेल, गीता मांझी, सुमित्रा सिंह,अनीता टांडी एवं रवीना जगत आदि अपना अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

नबी खान को मिली पीएचडी की उपाधि

बलौदाबाजार। शासकीय डी के स्नातकोत्तर महाविद्यालय के विधि विभागाध्यक्ष नबी खान को रविशंकर वि वि रायपुर ने पी एच डी की उपाधि से सम्मानित किया है। डॉ नबी खान ने अपने शोध में भारतीय उच्चतम न्यायालय के निर्णयों पर मीडिया के सकारात्मक एवम नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर मीडिया की भूमिका का महत्व बतलाया है। नबी खान ने अपना शोध कार्य रविशंकर वि वि में विधि के सहायक प्राध्यापक डॉ वेणुधर रौतिया के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। डॉ नबी खान को विधि में डॉक्टरेट की उपाधि मिलने पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ ए आर सी जेम्स सहित सभी सहकर्मी प्राध्यापकों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बधाई दी ।

एल एल एम की मौखिक परीक्षा 4 को

बलौदाबाजार। शासकीय डी के स्नातकोत्तर महाविद्यालय के विधि विभागाध्यक्ष ने बताया कि विधि विभाग के एल एल एम द्वितीय वर्ष के द्वितीय सेमेस्टर की मौखिक परीक्षा दिनांक 4 अक्टूबर बुधवार को दोपहर 12 बजे से महाविद्यालय के विधि विभाग में आयोजित की गई है। उन्होंने संबंधित सभी विद्यार्थियों से समय पर उपस्थित होने का निर्देश दिया है और यह भी निर्देशित किया है कि विद्यार्थी के अनुपस्थित रहने स्थिति में परिणाम की समस्त जिम्मेदारी विद्यार्थी की होगी। अतः विद्यार्थी समय पर उपस्थित रहें।

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक की हुई आमसभा

भुरकोनी। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक रायपुर के आम सभा में शामिल हुए सहकारी समिति सोसायटी के अध्यक्ष गण विगत दिनों रायपुर के शहीद स्मारक भवन में जिला सहकारी केंद्रीय बैंक रायपुर द्वारा आम सभा का आयोजन हुआ जिसमें किसानों के और बैंक के अनेक विषयों पर प्रस्ताव और निर्णय हुए और सभी जिला सहकारी बैंक के नए शाखाओं में एटीएम मशीन लगाने और छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्ति लगाने पर प्रस्ताव पारित हुआ वही सहकारी समिति सोसायटी बुंदेली के अध्यक्ष पूनम मानिकपुरी ने जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अध्यक्ष पंकज शर्मा से तेंदु कोना में एटीएम मशीन और छह सहकारी समितियों के लिए धर्म कांटा मशीन लगाने की मांग की है वही आम सभा में तेंदू कोना सहकारी समिति सोसायटी के अध्यक्ष बालेश साहू, बढ़ाई पाली के अध्यक्ष खेम राज साहू, परसदा के केशव साहू, सम्हर के करतार नायक भुर कोनी के मनहरन साहू सभी आम सभा में शामिल हुए ।

बाजे-गाजे के साथ गणेश मूर्ति का विसर्जन

सरायपाली। गणपति बप्पा मोरया अगले बरस तू जल्दी आ' के नारों के साथ गणेश मूर्ति का विसर्जन बाजे गाजे के साथ किया गया। इसके पूर्व हवन पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा विसर्जन के दिन भंडारा का आयोजन किया गया। विसर्जन के साथ ही 10 दिनों से चला आ रहा गणेश उत्सव का समापन हो गया। रोहिना के डीपापारा में गणेशोत्सव विसर्जन के पूर्व रात्रि को जागरण रहकर विशेष पूजा अर्चना की गई तथा ग्रामीणों के मनोरंजनार्थ पाला कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गणेश विसर्जन यात्रा में विजय राणा, तुलाराम, हीरालाल, नेपाल, शिशुपाल, विसंबर, जयकृष्ण खिरोद्र साहू, विष्णु, आनंद, अशोक, भरत, मनीष, तनिश, सचिन, मेमराज, निशा, रोहन आदि शामिल हुए।

कांग्रेस का शिक्षा का दावा सिर्फ कागजो मे : भूपेंद्र चन्द्राकर

पायनियर संवाददाता ➤ महासमुंद
www.dailypioneer.com

जिले के स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था भगवान भरोसे चल रही हैं यहां शिक्षा का बेहद बुरा हाल है ज्यादा दूर जाने की जरुरत नहीं है जिला मुख्यालय मे कलेक्टर कार्यालय से एक किलोमीटर और नगर पालिका महासमुन्द से 500 मीटर की दुरी पर स्थित महावीर शासकीय प्राथमिक शाला कुर्मी पारा महासमुन्द स्कूल का पूरा मैदान और सड़क नाली के गंदे पानी का तालाब बना हुआ है,पानी की निकासी तक नहीं है, बच्चे घुटनो तक गन्दे कीचड़ और पानी मे चल कर स्कूल जा रहे है, प्रशासन आँख बंद करके सोई हुई है, इसी तरह जिले कई स्कूलों की हालत बेहद जर्जर है, बच्चों के लिए बैठने के लिए जगह तक नही है, जिला मुख्यालय के स्कूल का ये हाल है तो आप गांव के स्कूलों का अंदाजा लगा सकते है। जिलाध्यक्ष भूपेन्द्र चंद्राकर ने कहा कांग्रेस की सरकार आत्मानंद स्कूल के नाम पर लीपापोती भर कर रही है जबकि जमीनी हकीकत जीरो है गांव की सरकारी स्कूलों की हालत बेहद खराब है कई स्कूलों में शिक्षक पढ़ाने तक नहीं जा रहे हैं शिक्षा के नाम पर सिर्फ तुष्टीकरण किया जा रहा है अब इस सरकार को बदलने की जरूरत है आम आदमी पार्टी के केजरीवाल की सरकार ने दिल्ली में शिक्षा के लिए जो काम किया है वह जगजाहिर है उनके बनाए हुए सरकारी स्कूल आज प्राइवेट स्कूलों को मात कर रहे हैं, वहाँ से पढ़े हुए बच्चे डॉक्टर और इंजीनियर बन रहे हैं, आज दिल्ली की केजरीवाल सरकार अपने कुल बजट का 25त्न राशि शिक्षा पर खर्च कर रही है, ईमानदारी के कारण ही आज वहां पर शिक्षा की क्रांति आई है यही बदलाव अब छत्तीसगढ़ में लाने की जरूरत है,आम आदमी पार्टी चेतावनी देती है शिक्षकों एवं भवनों तथा पहुंच मार्ग की कमी को तत्काल दूर करें अन्यथा आम आदमी पार्टी बच्चों और पालकों के साथ मिल कर धरना प्रदर्शन करने को बाध्य होगी।

विश्व रेबीज दिवस पर हुए विविध जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

पायनियर संवाददाता ➤ बलौदाबाजार
www.dailypioneer.com

कलेक्टर चंदन कुमार के निर्देश पर विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 28 सितंबर को स्वास्थ्य विभाग के तत्वाधान में विश्व रेबीज दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य केंद्रों सहित स्कूलों में लोगों को रेबीज के प्रति जागरुक एवं सावधानी बरतने के संबंध में अपील कर जानकारी दी गई। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ एम पी महिस्वर ने बताया कि, देश में प्रतिवर्ष लगभग 20 हज़ार लोगों की मौत रेबीज से हो जाती है जिसमें से 97 प्रतिशत केस संक्रमित कुत्ते के काटने से होता है । रेबीज एक जानलेवा रोग है यदि इसका टीका नहीं लगवाया गया और लक्षण प्रकट हो गए तो मरीज की मृत्यु हो जाती है। नोडल अधिकारी डॉ अभिजीत बनर्जी के अनुसार संक्रमित जानवर के काटने पर रेबीज के लक्षणों में बुखार,सरदर्द,थकान,पश्चात श्वशन तंत्र, तंत्रिका तंत्र,पाचन तंत्र पर प्रभाव पड़ता है। मरीज को हवा,पानी प्रकाश से भय लगता है और वह कोमा में चला जाता है जिसके बाद उसकी मृत्यु हो जाती है। रेबीज से बचाव हेतु जानवर के काटने पर घाव को तुरंत साबुन और साफ पानी से धोएं फिर एंटीसेप्टिक लगा के तुरंत चिकित्सक से संपर्क कर एंटी रेबीज टीका लगवाएं। किसी प्रकार के अंधविश्वास के झांसे में आ के झाड़- फूंक की गतिविधियों से दूर रहें । घर में यदि पालतू जानवर है तो उसे टीका लगवाएं।यह टीका शासकीय अस्पताल में निःशुल्क उपलब्ध है। जिला एपिडेमियोलॉजिस्ट श्वेता शर्मा के अनुसार जिले में वर्ष 2023 में भाटापारा में 1059,बलौदाबाजार में 919,सिमगा में 580,पलारी में 505 और कसडोल में 423 कुत्ते काटने के प्रकरण सामने आए थे। वर्ष 2022 में जिले में ऐसे कुल केस 3881 के थे जो इस वर्ष अब तक 3486 हैं।

डीजे एवं बाजे गाजे के साथ किया गया भगवान गणेश की मूर्ति विसर्जन

सरायपाली। हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी सार्वजनिक गणेश उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें भादो शुक्ल चतुर्थी को गजानन स्वामी की विनायक स्वरूप मूर्ति का विधिवत स्थापना कर अनंत चतुर्दशी तक धूमधाम से गणेश उत्सव मनाया गया। प्रत्येक दिवस कॉलोनी के बच्चों के मनोरंजनार्थ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। गणेश जी की सामूहिक हवन पूजन के पश्चात अनंत चतुर्दशी के दिन गणपति बप्पा मोरया अगले बरस तू जल्दी आ के जय घोष के साथ गणेश मूर्ति का विसर्जन डीजे एवं बाजे गाजे के साथ किया गया। गणेश विसर्जन यात्रा हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी से शुरू होकर शंकर मुंडा तालाब के पास समाप्त हुई। विसर्जन के साथ ही 10 दिनों से चला आ रहा गणेश उत्सव का समापन हो गया गया। सामूहिक गणेश उत्सव के के सफल आयोजन में कॉलोनी के सभी अधिकारी, कर्मचारी, श्रद्धालु जन, बच्चों, माता बहनों एवं महाराज निराकार वैष्णव का विशेष योगदान रहा। उक्ताशय की जानकारी पीतांबर बाघ द्वारा दी गई गयी।

पांच सहकारी समितियों में कराया जाएगा किसान कुटीर का निर्माण

संसदीय सचिव ने किसान कुटीर निर्माण के लिए किया भूमिपूजन

पायनियर संवाददाता ➤ महासमुंद
www.dailypioneer.com

महासमुन्द विधानसभा क्षेत्र के पांच सहकारी समितियों में किसान कुटीर का निर्माण कराया जाएगा। संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवनलाल चंद्राकर ने किसान कुटीर निर्माण के लिए भूमिपूजन किया। उन्होंने कहा कि किसान कुटीर बनने से किसानों को सहुलियत होगी। ग्राम खट्टी, पटेवा, बनपचरी, रायतुम व सरेकेल सहकारी समितियों में किसान कुटीर निर्माण के लिए भूमिपूजन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवनलाल चंद्राकर थे। अतिथि के रूप में अतिथि के रूप में कृषि उपज मंडी अध्यक्ष हीरा बंजारे, जिला पंचायत उपाध्यक्ष लक्ष्मण पटेल, जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री संजय शर्मा, ब्लाक अध्यक्ष खिलावन साहू, खोम सिन्हा, रमन ठाकुर, रामजी ध्रुव, लमकेश्वर साहू, आरिन चंद्राकर, रोशन पटेल, अभय कुम्भकार, घांसु दीवान मौजूद थे। पूजा अर्चना पश्चात मुख्य अतिथि संसदीय सचिव व विधायक चंद्राकर ने किसान कुटीर निर्माण के लिए भूमिपूजन किया। अपने संबोधन में संसदीय सचिव चंद्राकर ने किसान कुटीर की सौगात मिलने पर किसानों को बधाई देते हुए कहा कि इससे धान बेचने आने वाले किसानों को सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार आने के बाद किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। भूपेश सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों से किसानों की आमदनी में बढ़ोत्तरी हो रही है। भूपेश सरकार द्वारा लगातार किसानों के हित में फैसले लिए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों की सुविधाओं को देखते हुए महासमुंद विधानसभा क्षेत्र में आठ नए धान खरीदी केंद्र की स्वीकृति दिलाई गई है। संसदीय सचिव चंद्राकर ने ग्रामीणों को प्रदेश सरकार की योजनाओं की जानकारी देते हुए उसका लाभ लेने की बात कहते हुए प्रदेश में चहुंमुखी विकास के लिए फिर से कांग्रेस की सरकार बनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में प्रमुख रुप से राजू ध्रुव, दीपक सिन्हा, खिलावन ध्रुव, रूपेंद्र त्रिपाठी, मनबोधी, सत्यभान, डोमन महानन्द, विनोद सेन, तोषण निषाद, डिगेश ध्रुव, ईश्वर साहू, देवलाल साहू, पुरण गजेंद्र, जनक कुम्भकार, समेलाल कुम्भकार, टीका राम ध्रुव, मोतीलाल ध्रुव, संतोष ध्रुव, चंदशेखर चंद्राकर, मोहन लाल ध्रुव, कुंभकरण ध्रुव, पुखराज ध्रुव सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन मौजुद रहे।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड बीजापुर

नि.आ.क्र./07/व.ले.लि./का.अ./लो.स्वा.या.खण्ड/2023 बीजापुर, दिनांक 11/09/2023

// संक्षिप्त मैनुअल द्वितीय निविदा आमंत्रण सूचना //

छत्तीसगढ़ राज्य के राज्यपाल की ओर से लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड, बीजापुर जिला के जिला जल प्रयोगशाला (एन.ए.बी.एल.) में जीवाणु परीक्षण हेतु उपकरण क्रय हेतु निविदाएँ प्रपत्र ''सी'' में निर्माता/अधिकृत विक्रेता/वाणिज्यकर विभाग में पंजीकृत प्रदायकर्ता फर्मों से दिनांक 12.10.2023 को सायं 5:30 बजे तक अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में आमंत्रित की जाती है। निविदाएँ हेतु आवेदन की तिथि 09.10.2023, निविदा प्रपत्र क्रय करने की तिथि 10.10.2023, निविदा प्रपत्र का मूल्य रू. 300.00 है। निविदा खोलने की तिथि 13.10.2023

समूह क्र.	जिला बीजापुर	कार्य का विवरण	मात्रा	अनु. लागत (लाख में)	धरोहर राशि	कार्य पूर्ण करने की अवधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य
1	2	3	4	5	6	7	8
01	बीजापुर	जिला जल प्रयोगशाला (एन.ए.बी.एल.) में जीवाणु परीक्षण हेतु उपकरण क्रय कार्य।	As per List	1.42	2000/-	01 माह	300/-

नोट :- उपरोक्त निविदा कार्यों की सामान्य शर्तें, धरोहर रशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यलयीन अवधि में दिनांक 10.10.2023 तक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड
बीजापुर

G-05772/2

सिमुकॉन मेडिकल सिमुलेशन चिकित्सा शिक्षा का एक अभिन्न अंग

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

16 सितंबर 2023 शनिवार को द्वितीय राज्य स्तरीय सिमुकॉन 2023 (मेडिकल सिमुलेशन कॉंफ्रेंस एवं प्रतियोगिता 2023) का आयोजन पं. दीनदयाल उपाध्याय मेमोरियल हेल्थ साइंसेज एंड आयुष यूनिवर्सिटी ऑफ छत्तीसगढ़ द्वारा मान्यता प्राप्त श्री बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, रायपुर में कौशल प्रयोगशाला विभाग द्वारा आयोजित किया गया। मेडिकल सिमुलेशन चिकित्सा शिक्षा का एक अभिन्न अंग बन गया है। सिमुकॉन नवाचार और अनुसंधान के माध्यम से भारत जैसे देशों के लिए कम लागत वाले टिकाऊ सिमुलेशन समाधान के विकास का नेतृत्व कर रहा है जो चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में गेम चेंजर हो सकता है। सिमुकॉन विश्व स्तर पर संसाधन-सीमित देशों के लिए कम लागत वाले चिकित्सा सिमुलेशन के विकास के लिए समर्पित एक अनूठा और अपनी तरह का पहला मंच है। इसका उद्देश्य कक्षा ज्ञान और बेडसाइड अभ्यास के बीच अंतर को पाटने में मदद करने के लिए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके जटिल नादानिक समस्याओं के लिए कम लागत वाले अभिनव टिकाऊ सिमुलेशन समाधान खोजने के लिए मेडिकल, नर्सिंग, पैरामेडिकल और इंजीनियरिंग छात्रों की बहु-विषयक टीमों को एक साथ लाना है। सिमुकॉन सम्मेलन के दौरान, प्रोफेसर डॉ. नीरजा अग्रवाल ने मेडिकल सिमुलेशन के महत्व को समझाया, इसके बाद डॉ. सागर जावले ने रोडमैप- आइडिया टू कमर्शियल सिमुलेशन विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. सपन कुमार जिनके दिमाग की उपज सिमुकॉन है, ने कम लागत वाले चिकित्सा सिमुलेशन के भविष्य पर बात की। प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार दुबे ने मेडिकल सिमुलेशन के परिचय के बारे में जानकारी दी। डॉ. ए.के. चंद्राकर, कुलपति, पंडित दीनदयाल उपाध्याय मेमोरियल स्वास्थ्य विज्ञान एवं आयुष कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ विश्वविद्यालय थे। सिमुकॉन प्रतियोगिता में मेडिकल, डेंटल, नर्सिंग और पैरामेडिकल की कुल 82 टीमों ने भाग लिया, जिसमें क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज वेल्लोर की एक टीम भी शामिल थी। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. ए.के. चंद्राकर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय मेमोरियल हेल्थ साइंस एंड आयुष यूनिवर्सिटी ऑफ छत्तीसगढ़ के कुलपति, प्रोफेसर डॉ. आलोक अग्रवाल, अकादमिक डीन एम्स, रायपुर, प्रोफेसर डॉ. प्रतिभा जैन शाह, विभागाध्यक्ष एनेस्थीसिया और डॉ. जया लालवानी, पं. जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल मेडिकल कॉलेज रायपुर में एक सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल है, डॉ. देवश्री सरकार, डीन, प्रोफेसर अनिल कुमार दुबे, एचओडी सर्जरी, प्रोफेसर डॉ. नीरजा अग्रवाल, एचओडी प्रसूति एवं स्त्री रोग और डॉ. सपन कुमार, श्वसन विभाग मेडिसिन, श्री बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, रायपुर। मेडिकल कॉलेज श्रेणी के अंतर्गत सभी पुरस्कार श्री बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस के छात्रों ने जीते। प्रथम पुरस्कार मुहम्मद काशिफ खान, तेजश नायक, अक्षत श्रीवास्तव, फिजा अंसारी, मोहम्मद फराज फैसल द्वारा लेप्रोस्कोपिक एंडोट्रेनर को मिला, दूसरा पुरस्कार कुनूर चौधरी, मेघा वाधवानी, अनमोल श्रीवास्तव, अंजलि ओझा और आकांक्षा सैनी को विजुअल पर उनके अनुकरण के लिए मिला। आंखों की गतिविधियों के अनुकरण के लिए विकास भारद्वाज, अभिषेक पटेल, योगेश कुमार तंबोली, अभिनव शशांक एक्का और आयुषी सिंघानिया को तीसरा पुरस्कार दिया गया। चौथा पुरस्कार नंदिनी रोहिला, शिवानी बाग, निहारिका कांड्रा, मिताली महेरा और गार्गी सिंह को दिया गया और पांचवां पुरस्कार आयुषी भाटी, डी. अमर्त्य मिश्रा, रवि यादव, शिवली शुक्ला और शताब्दी देवनाथ को दिया गया। नर्सिंग और पैरामेडिकल श्रेणी के तहत विजेताओं को गैस्ट्रिक लैवेज पर अनुकरण के लिए एमएमआई नर्सिंग कॉलेज की लीमा साहू, लिम्ना दीवान, माधवी पैकरा, मधु भगत और ममता नवरत्न को पुरस्कृत किया गया। दूसरा पुरस्कार एसबीआईएमएस पैरामेडिकल के छात्रों में से राजेश्वरी साहू, अंजलि साहू और मनीषा यादव को स्किन ग्राफ्टिंग सिमुलेशन के लिए दिया गया और तीसरा पुरस्कार छात्रों में से लक्ष्मी देवांगन, पूर्णिमा वर्मा, खुशबू देवांगन, कविता निर्मलकर को महिला कैथीटेराइजेशन के सिमुलेशन के लिए प्रदान किया गया।

एसबीआईएमएस मेडिकल एवं नर्सिंग पैरामेडिकल दोनों ही श्रेणियों के सभी विजेताओं को श्री बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस द्वारा नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज वेल्लोर की टीम को कम लागत वाले मेडिकल सिमुलेशन विकसित करने की दिशा में उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए 10,000 रुपये और एक प्रशंसा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। डॉ. ए.के. चंद्राकर, कुलपति, पं.दीनदयाल उपाध्याय स्मृति स्वास्थ्य विज्ञान एवं आयुष छत्तीसगढ़ विश्वविद्यालय ने टीम के प्रयासों की सराहना की है और श्री बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल कॉलेज द्वारा अगले वर्ष सिमुकॉन को एक विश्वविद्यालय कार्यक्रम के रूप में आयोजित करने का अनुरोध किया गया है।

विश्व हृदय दिवस पर जिला अस्पताल में लगा शिविर

83 मरीजों ने कराया जांच, दी गई उचित स्वास्थ सलाह

पायनियर संवाददाता ➤ जशपुरनगर
www.dailypioneer.com

29 सितंबर को "विश्व हृदय दिवस" के अवसर पर जिला एवं विकासखंड स्तर पर हृदय स्वास्थ के प्रति जनसामान्य में जागरूकता के उद्देश्य से वृहद प्रचार प्रसार गतिविधियों के साथ साथ जिला चिकित्सालय एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर निःशुल्क हृदय स्वास्थ्य जांच व मधुमेह, उच्च रक्तचाप जांच, उपचार व परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रंजीत टोप्पो से चर्चा पर उन्होंने यह बताया कि हृदय दिवस, हृदय रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने और स्वस्थ हृदय आदतों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व हृदय दिवस थीम ÷ दिल का उपयोग करें, दिल को जानें ÷ के साथ मनाया जा रहा है। गैर संचारी रोग कार्यक्रम के जिला नोडल अधिकारी डॉ उदय प्रकाश भगत ने विश्व हृदय दिवस के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि दिल हमारे शरीर का बहुत अहम हिस्सा है. इसके जरिए ही शरीर के तमाम अंगों में ऑक्सीजन पहुंचता है। इसलिए इसे सेहतमंद रखना बहुत जरूरी है. लेकिन कुछ समय से हार्ट से जुड़ी समस्याएं और हार्ट अटैक के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं. ऐसे में लोगों के जीवन को बचाने और उन्हें हार्ट की समस्याओं को लेकर जागरुक करने के उद्देश्य से हर साल 29 सितंबर को वर्ल्ड हार्ट डे मनाया जाता है।

खान पान को बताया प्रमुख वजह

जिला चिकित्सालय जशपुर में विश्व हृदय दिवस के अवसर पर आयोजित निःशुल्क हृदय स्वास्थ्य जाँच शिविर के संबंध में सिविल सर्जन डॉ आर एन केरकेट्टा से कारण के संबंध में चर्चा में बताया गया कि हार्ट डिजीज का मुख्य कारण गलत खानपान (फास्टफूड, जंकफूड, तला खाना इत्यादि), खराब जीवनशैली, फिजिकल वर्कआउट न करना और धूम्रपान को माना जाता है। डब्ल्यूएचओ के आंकड़े बताते हैं कि हर साल करीब 1 करोड़ 79 लाख लोगों की मृत्यु सिर्फ कार्डियोवस्कुलर डिजीज की वजह से हो रही है. कोविड के बाद हालात और भी गंभीर हो गए हैं. ऐसे में हार्ट की सेहत के प्रति सचेत करना बहुत जरूरी है. ऐसे में वर्ल्ड हार्ट डे के मौके पर कई तरह के कार्य में के जरिए लोगों को हार्ट की सेहत के प्रति सचेत किया जाता है. साथ ही उन्होंने यह बताया कि जिला चिकित्सालय में आयोजित शिविर में कुल = 83 मरीज आए जिसमें मौसमी बीमारी के- 53, मधुमेह के- 9, उच्च रक्त चाप के- 12, बाल मधुमेह के -01, हृदय रोग के- 5, स्ट्रोक के- 3 मरीजों को जांच, उपचार व परामर्श प्रदान किया गया।

शराब बिक्री करने वाले आरोपी को अकलतरा पुलिस ने किया गिरफ्तार

पायनियर संवाददाता ➤ जांजगीर चाम्पा
www.dailypioneer.com

105 लीटर अवैध कच्ची महुआ शराब एवं 48 पाव देशी प्लेन शराब के साथ, बिक्री करने वाले आरोपी को अकलतरा पुलिस ने किया गिरफ्तार। अवैध शराब बिक्री पर अंकुश लाने के लिए जिला पुलिस द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है। इस क्रम में थाना अकलतरा पुलिस द्वारा थाना स्तर से टीम गठित किया गया था कि दिनांक 30 सितंबर को मुखबीर सूचना मिला की आरोपी प्रकाश भारद्वाज निवासी अकलतरा अपने घर में अवैध रूप से शराब बिक्री की जाती है कि सूचना पर रेड कार्यवाही किया गया मौके पर आरोपी के कब्जे से 105 लीटर कच्ची महुआ शराब किमती 10,500 / रूपया एवं 48 पाव देशी प्लेन शराब किमती 3840/ रूपया को बरामद किया गया है। आरोपी प्रकाश भारद्वाज उम्र 37 साल निवासी वार्ड नं. 13 अकलतरा थाना अकलतरा के विरूद्ध थाना अकलतरा में धारा 34 (2) आबकारी एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध किया जाकर विधिवत् कार्यवाही गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर भेजा गया है। उपरोक्त कार्यवाही में निरी. तुलसिंह पटटावी, सउनि अरूण सिंह, महिला प्रआर अनिता पाटले, आर प्रदीप दुबे, राघवेन्द्र घृतलहरे, अजय भानु का सराहनीय योगदान रहा।

सांसद महंत ने 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान अंतर्गत जागरूकता रथ को दिखाई हरी झंडी

पायनियर संवाददाता ➤ कोरबा
www.dailypioneer.com

"बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ" योजना अंतर्गत बाल लिंगानुपात में सुधार व बालिकाओं के प्रति लोगों की मानसिकता परिवर्तन करने के लिए कोरबा लोकसभा क्षेत्र सांसद ज्योत्सना चरणदास महंत ने जिला कार्यालय में "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ" जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ" योजना जिले के समस्त ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में बेटियों के प्रति नकारात्मक सोच को बदलने एवं बेटियों को बचाने, बेटियों को पढ़ाने एवं आगे बढ़ाने में सेतु का कार्य करेगा। इस कार्यक्रम अन्तर्गत प्रचार रथ बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं से संबंधित संदेशों व बालक-बालिका संरक्षण से संबंधित अधिनियमों कानूनों प्रचार-प्रसार जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रो में भ्रमण करते हुए किया जाएगा। साथ ही लिंगभेद से संबंधित कुरीतियों को रोकने संबंधी जानकारी भी उन्हें दी जाएगी। भारत सरकार की "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ" योजना अंतर्गत बाल लिंगानुपात में सुधार तथा बालिकाओं के प्रति लोगों की मानसिकता परिवर्तन करने के लिए लागू ही गई है। इस हेतु जिले में 5 प्रचार रथ का सांसद ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। यह प्रचार रथ जिले के सभी जनपदों में घूमकर ग्रामीणों में जागरूकता लाने का कार्य करेगा। इस अवसर पर विधायक कटघोरा पुरूषोत्तम कंवर, विधायक पाली-तानाखार मोहित राम केरकेट्टा, जिला पंचायत अध्यक्ष शिवकला कंवर, खाद्य आयोग के सदस्य हरीश परसाई, कोरबा जिला कलेक्टर सौरभ कुमार, अपर कलेक्टर प्रदीप साहू, रश्मि सिंह, उषा तिवारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला व बाल विकास प्रीति खोखर चखियार सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी/ कर्मचारी उपस्थित थे।

जरवाय गौठान में 6 गायों की भूख प्यास से मौत, कांग्रेस नेता हैं गौठान का प्रबंधक

- पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेश मूणत ने किया गौठान का निरिक्षण
- मूणत की दोषियों पर जुर्म दर्ज करने की मांग, कार्रवाई के लिए दिए 24 घंटे का अल्टीमेटम

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

रायपुर के जरवाय ग्राम में स्थित गौठान में गायों की मौत का मामला सामने आया है। पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेश मूणत की अगुवाई में भाजपा नेताओं के एक दल ने उक्त गौठान पहुंचकर स्थिति का जायज़ा लिया,तो पाया कि वहां 6 गाय मृत अस्वस्था में पड़ी हुई थी। भाजपा नेताओं ने स्थानीय ग्रामीणों से चर्चा के बाद पाया कि गौठान में गायों को लेकर कोई उचित व्यवस्था नही हैं। बल्कि यहां लाये जाने के बाद मवेशी अव्यवस्था का शिकार होकर बीमार पड़ जाते हैं। गौवंश की मौत के लिए कांग्रेस सरकार को दोषी ठहराते हुए राजेश मूणत कहा कि कांग्रेस पर गौहत्या का पाप लग चुका है। यह घटना दुखद होने के साथ ही कांग्रेस के भ्रष्टाचार की पोल खोल रही है। राजेश मूणत ने कहा कि गौठान को लेकर छत्तीसगढ़ सरकार ने पूरे देशभर में विज्ञापन किया। हमारे पार्षदों ने 4 महीने पहले शिकायत की थी कि गौठान में चारे पानी की व्यवस्था नहीं हैं। इस गौठान में 6 गाय मर गई। कांग्रेस का पूर्व पार्षद संदीप साहू इस गौठान का ठेकेदार हैं, उन्होंने गौमाता के नाम पर शासकीय योजना की दुर्गति करके उसे धंधा बना दिया। 250 जानवरों को रखने के लिए चारा-पानी देने के लिए शासन से मिलने वाले पैसे को अपना चारा बना लिया। राजधानी रायपुर के एक वार्ड में यह स्थिति है,तो दूरस्थ अंचलों में क्या हाल होगा,यह सोचने वाली बात है। मूणत ने कहा कि इस घटना की जांच होनी चाहिए , गौमाता को चारे से दूर रखकर उनकी जान लेने वाले ठेकदार के खिलाफजुर्म दर्ज होना चाहिए। अगर 24 घंटे के भीतर सरकार ने कार्रवाई नहीं की, तो ज़ोन कमिश्नर कार्यालय में जाकर घेराव करेंगे। उन्होने पूर्व में नवा रायपुर में हुई राहुल गांधी की सभा के बाद खुले में फेंके गए फूड पैकेट्स को खाने से बड़ी संख्या में गायों की मौत का ज़िक्र करते हुए कहा कि कांग्रेस के डीएनए में ही खराबी है, वह गाय और गोबर के नाम पर राजनीति करती है, भ्रष्टाचार करके धन कमाती है, लेकिन वास्तविकता में उनका गौमाता के प्रति ज़रा भी आदर भाव नही है। राजेश मूणत ने कहा कि एक तरफगोठान के नाम पर 1300 करोड़ का घोटाला इस सरकार ने किया। जिसे हमने जनता के बीच प्रस्तुत किया। इस प्रकार से गौ माता की मौत की दोषी यह कांग्रेस पार्टी है। यदि गोठान में गौ माताएं होती तो इस प्रकार से उनकी मृत्यु नहीं होती। भ्रष्टाचार करने के लिए भूपेश बघेल सरकार ने गौठान बनाए लेकिन उन्हें खुला छोड़ दिया। सड़क पर लगातार घटनाएं हो रही हैं। गौ माता गोठानों की बजाय सड़क पर दिखती हैं क्योंकि गोठान में उनके लिए किसी तरह की व्यवस्था नहीं है। प्रदर्शन में प्रमुख रूप से नगर निगम के रायपुर के पूर्व सभापति प्रफुल्ल विश्वकर्मा वार्ड के पार्षद कमलेश्वरी बसंत वर्मा पार्षद राजेश ठाकुर भाजपा जिला मंत्री अमित मैशरी मंडल अध्यक्ष भूपेंद्र ठाकुर मंडल अध्यक्ष अनिल सोनकर विशाल पांडे मनीष ध्रुव बद्री शर्मा राकेश यादव मुन्ना सिंह अंजनी सिंह जितेंद्र तिवारी धीरज मिश्रा रणजीत तिवारी अनुराग ठाकुर राहुल पांडे एवं ग्राम के प्रमुख लोग उपस्थित थे।

मारुति बलोनो कार से गांजा की तस्करी करने वाले, भुनेश्वर यादव को तुमला पुलिस ने किया गिरफ्तार

जशपुरनगर। नशे का कारोबार करने वालों के विरूद्ध वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों द्वारा त्वरित एवं लगातार कार्यवाही करने के लिए निर्देषित किया गया है। उक्त निर्देश के परिपालन में जिले के थाना/चौकी प्रभारियों द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है। 27 सितंबर को मुखबीर से सूचना मिली कि टिकलीपारा का भुनेश्वर यादव अपने स्लेटी कलर की बिना नंबर की बलेनो कार में ओडिशा की ओर से अवैध रूप से भारी मात्रा में गांजा को रखकर तस्करी करते हुए भेलवा सरईटोली की ओर आ रहा है, इस सूचना पर तत्काल थाना प्रभारी तुमला तिराहा रोड में नाकाबंदी कर सामने से आ रही उक्त बलेनो वाहन के चालक को रोककर गांजा रखने के संबंध में पूछताछ कर तलाशी लेने पर वाहन की डिक्की में छिपाकर रखे 26 किलोग्राम गांजा कीमती 02 लाख 60 हजार रू. मिलने पर उक्त गांजा को जप्त कर आरोपी को अभिरक्षा में लिया गया, पूछताछ में आरोपी ने उक्त गांजा को विक्रय करने के उद्देष्य से तुमला क्षेत्र में लाना बताया।

ट्रांसफार्मर खराब होने पर लम्बे समय तक नहीं होंगे परेशान अब जल्द बदल जायेंगे बिगड़े ट्रांसफर

कुनकुरी को विद्युत सामग्री भंडारण एरिया सब डिपो की मिली सौगात

- विधायक यू.डी. मिंज की पहल पर एरिया मिली स्वीकृति, होगा लाभ

पायनियर संवाददाता ➤ जशपुरनगर
www.dailypioneer.com

आदिवासी बाहुल्य जिले के लोगों को विद्युत सब डिपो खोलने की यशस्वी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उपमुख्यमंत्री टी.एस सिंहदेव ने स्वीकृति दी है उन्होंने कुनकुरी विधायक यू. डी. मिंज के माँग पर इसकी स्वीकृति प्रदान की गई है। जशपुर जिले के दूरस्थ क्षेत्रों में ट्रांसफार्मर खराब होने और अन्य विद्युत सामग्री के लिए आए दिन विश्रामपुर पर निर्भर रहना पड़ता था इस समस्या के कारण जशपुर जिले के लोग परेशान रहते थे उन्हें कई कई दिन अँधेरे में गुजरना पड़ता था पर अब कुनकुरी में विद्युत भंडार गृह सब डिपो खुलने पर जशपुर जिले के लोगों की परेशानी दूर होगी। यह सब कुनकुरी के विधायक यू. डी. मिंज के संवेदनशीलता के कारण संभव हुआ उन्होंने लगातार 3 साल से इसकी माँग मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से की और अंततः उन्होंने इसकी स्वीकृति दे दी। इसके खुलने से अब जशपुर के लोगों बिगड़े ट्रांसफार्मर को बदलने के लिए अब लम्बे समय इंतजार करना नहीं होगा जिसका आदेश महाप्रबंधक के द्वारा जारी कर दिया गया है। ज्ञात हो कि विधायक कुनकुरी यू. डी. मिंज मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मण्डल अंतर्गत कुनकुरी में डिपो खोलने की माँग की थी जो कि स्वीकृत हो गया इसके साथ ही बिजली समस्या को दूर करने के लिए कुनकुरी विधानसभा में बिजली की समस्या दूर करने के लिए जिसमें करडेगा, कुंजारा, सिंहीबहार, कलिबा, कुडूकेला, बरपानी 33/11के व्ही सब स्टेशन बनाय गए है.आने वाले समय में आने वाले समय में ट्रांसफार्मर रिपेरिंग सेंटर भी बनेगा. विधायक यू डी. मिंज ने बताया कि पावर हाउस 132 केबी भी प्रस्तावित है जो कि पूर्व में स्वीकृत थी परन्तु पूर्व भाजपा विधायक के कमजोरी सेकांसाबेल चला गया. उन्होंने माँग की थी, कि कुनकुरी, जिला-जशपुर में एरिया सब डिपो खोले जाना चाहिए क्योंकि जशपुर से क्षेत्रीय भण्डार विश्रामपुर की दूरी लगभग-180 कि.मी. कुनकुरी से क्षेत्रीय भण्डार विश्रामपुर की दूरी लगभग-140 कि.मी., पत्थलगांव से क्षेत्रीय भण्डार विश्रामपुर की दूरी लगभग 125 कि.मी., कांसाबेल से क्षेत्रीय भण्डार विश्रामपुर की दूरी लगभग- 140किमी,बगीचा से क्षेत्रीय भण्डार विश्रामपुर की दूरी लगभग- 120 कि.मी. जिले के सभी ब्लॉक से लंबी दूरी तय करके सामग्री लाने में काफी विलम्ब होता है और पेट्रोल/डीजल का अनावश्यक खर्च का भार कंपनी प्रबंधन पर पड़ता है, जिससे मैदानी क्षेत्र में समय पर फेल ट्रांसफार्मर नहीं बदलने पर जनाक्रोश बढ़ जाता है। यदि कुनकुरी में सामग्री भण्डार हेतु एरिया सब डिपो खोला जाता है, तो दूरी भी कम तय करना पड़ेगा और पेट्रोल/डीजल का अनावश्यक खर्च का भार कंपनी प्रबंधन पर नहीं पड़ेगा। उन्होंने बताया कि कुनकुरी में सब डिपो खोलने से जशपुर से कुनकुरी एरिया सब डिपो की दूरी लगभग- 50.कि.मी., कांसाबेल से कुनकुरी एरिया सब डिपो की दूरी लगभग 40 कि.मी., बगीचा से कुनकुरी एरिया सब डिपो की दूरी लगभग- 60 कि.मी.,पत्थलगांव से कुनकुरी एरिया सब डिपो की दूरी लगभग 60 कि.मी. पड़ेगा कुनकुरी से दूरी अत्यंत सुलभ एवं सुगम है, जिसको ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मण्डल अंतर्गत कुनकुरी, जिला- जशपुर में सामग्री भण्डार हेतु एरिया सब डिपो खोलने की स्वीकृति मिली है। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड के महाप्रबंधक (मा/सं)ने छ.ग.स्टे. पॉ.डि.कं. लिमि के क्षेत्रीय भण्डार विश्रामपुर के अंतर्गत नया डिपो भंडार गृह कुनकुरी का सृजन करने का आदेश जारी किया है एवं इसके संचालन हेतु नये पदों का सृजन किये गए है एवं बाह्य स्त्रोत से श्रमिक नियोजित किये जायेंगे कुनकुरी डिपो भण्डार गृहके लिए सहायक अभियंता,कार्य. सहा. श्रेणी-एक,कार्य. सहा. श्रेणी-तीनडाटा एन्ट्री आपरेटर, कुशल श्रमिक, सुरक्षा सैनिक एवं भृत्य की स्वीकृति आदेश जारी कर दिया है इसके साथ ही डिपो भण्डार गृह कुनकुरी के कार्यों के संचालन के लिए 01 नग क्रेन किराये से कार्य पर रखे जाने की स्वीकृति दी है। आदेश जारी कर डिपो भण्डार गृह कुनकुरी की स्थापना के लिए फर्नीचर तथा उपकरण की खरीदी एवं सिविल कार्य प्रबंध निदेशक (वितरण) के अनुमोदन से किया जाना है।

डीडीयू-जीकेवाय की मनाई गई एल्युमिनी मीट

कोरबा। बिहान योजनांतर्गत दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल विकास योजना कार्यक्रम के तहत जिला मिशन प्रबंधन इकाई, जिला पंचायत कोरबा, छत्तीसगढ़ के द्वारा एल्युमिनी मीट 2023 कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में कोरबा जिले के नामांकित परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी पीआईए द्वारा प्रशिक्षण उपरांत नियोजित बच्चों एवं उनके अभिभावक के अलावा संकुल स्तरीय संगठन के पदाधिकारी एवं बिहान के जिला एवं विकासखण्ड स्तर के पदाधिकारी उपस्थिति रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डिप्टी कलेक्टर विकास चौधरी ने की। उप संचालक पंचायत जुली तिर्की, अमिता साहू, सहायक परियोजना अधिकारी, जिला पंचायत कोरबा, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जनपद पंचायत-पाली भूपेन्द्र सोनवानी के द्वारा बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये मार्गदर्शन दिया। नियोजित बच्चों के ने अपने-अपने जॉब के पूर्व एवं उपरांत अनुभव साझा किये गये।

मध्य प्रदेश चुनाव भाजपा की रणनीति

भाजपा नेतृत्व मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव जीतने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता है और इसीलिए तीन केन्द्रीय मंत्रियों को चुनाव में उम्मीदवार बनाया गया है। इस वर्ष के अंत में होने वाले पांच विधानसभा चुनावों से राजनीतिक पारा बढ़ा हुआ है। लेकिन वर्तमान स्थितियों को देखते हुए मध्य प्रदेश की लड़ाई प्रमुख बन गई है। अन्य चार राज्यों के मुकाबले यहां प्रतियोगिता कड़ी है। भाजपा के लिए इन चुनावों में महत्वपूर्ण रूप से नेतृत्व द्वारा केन्द्र सरकार के तीन मंत्रियों, राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले कम से कम चार सांसदों तथा विभिन्न जातियों, धर्मों व क्षेत्रों में प्रभाव रखने वाले अन्य वरिष्ठ नेताओं का मैदान में उतारना है। मध्य प्रदेश में सत्तारूढ़ पार्टी ने 39 उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी कर दी है। पार्टी का यह कदम कांग्रेस से कठोर प्रतियोगिता को देखते हुए उठाया गया है। भाजपा ने राज्य में अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखने के लिए केन्द्रीय मंत्रियों समेत कई कद्दावर नेताओं को मैदान में उतारा है। केन्द्रीय मंत्रियों नरेन्द्र सिंह तोमर, प्रह्लाद पटेल व फग्गन सिंह कुलस्ते समेत पार्टी सांसदों राकेश सिंह, गणेश सिंह, रीती पाठक व उदय प्रताप सिंह तथा महासचिव कैलाश विजयवर्गीय अब मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। इन प्रमुख नेताओं को मैदान में उतारने से संभावित मुख्यमंत्री उम्मीदवारों की संख्या भी बढ़ गई है। अब नरेन्द्र सिंह तोमर, प्रह्लाद पटेल तथा कैलाश विजयवर्गीय को मजबूत मुख्यमंत्री उम्मीदवार माना जा रहा है।

2018 चुनाव के बाद थोड़ा समय छोड़ कर शिवराज सिंह चौहान लगभग 20 साल से मुख्यमंत्री पद पर हैं। भाजपा चौहान के मामले में थोड़ा बासीपन का अनुभव कर रही है। हाल में एक रैली में प्रधानमंत्री मोदी ने एक बार भी चौहान का नाम नहीं लिया। इस बीच कांग्रेस पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के नेतृत्व में मजबूत विरोधी के रूप में उभर रही है। यह चुनाव शिवराज सिंह चौहान का भविष्य तय करने के साथ राज्य का राजनीतिक भविष्य भी तय करेगा। हालांकि, चौहान कई बार मुख्यमंत्री रहे हैं और उनको व्यापक रूप से लोकप्रिय नेता माना जाता है, पर अब उनका सम्मान व राजनीतिक भविष्य पूरी तरह चुनाव परिणाम से जुड़ गया है। यदि भाजपा अच्छा बहुमत प्राप्त करती है तो इससे पार्टी के भीतर उनकी स्थिति मजबूत होगी तथा राज्य में उनका नेतृत्व सुनिश्चित हो जाएगा। दूसरी ओर इससे कम होने पर चुनाव जीतने तथा प्रशासन करने की उनकी क्षमता पर सवाल खड़े होंगे। परिपक्व नेता कमलनाथ अपनी पार्टी का आधार मजबूत करने के साथ 'सत्ता-विरोधी' भावनाओं का लाभ उठाना चाहते हैं। हालिया उपचुनावों में कांग्रेस का प्रदर्शन अच्छा रहा है जिनसे उसमें विश्वास बढ़ा है। पार्टी बेरोजगारी व ग्रामीण समस्याओं जैसे मुद्दों पर निर्भर है। उसका अभियान 'परिवर्तन व बेहतर प्रशासन' पर केन्द्रित है। इस बीच भाजपा द्वारा कद्दावर नेताओं को मैदान में उतारने का निर्णय चौहान के लिए संकेत है कि पार्टी का उनके नेतृत्व में विश्वास घट रहा है। सत्ता-विरोधी लहर तथा अनेक दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के कारण शिवराज सिंह चौहान का सम्मान पहले की तुलना में घटा है। हालांकि, शिवराज सिंह चौहान ने विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से जनता के सभी वर्गों को खुश करने का प्रयास किया है, लेकिन भाजपा कोई जोखिम उठाने को तैयार नहीं है। संभवतः इसी कारण उसने अनेक कद्दावर नेताओं को मैदान में उतार कर सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ने का फैसला किया है। भाजपा पिछले 20 साल में राज्य में आमूल परिवर्तन की तस्वीर जनता के सामने रख रही है।

यदि स्त्री-पुरुष के अधिकार समान हैं तो कर्तव्यों में भेद-भाव क्यों?

उस दौर को गुज़रे ज़माना हुआ जब स्त्रियाँ घर पर रहकर घर के कार्य निबटाया करती थी और पुरुष पैसे कमाने घर से बाहर जाया करते थे।

दीपा लाभ
स्वतंत्र पत्रकार

ऐसा क्यों है कि कुछ कार्यों को केवल स्त्रियों की ज़िम्मेदारी समझा जाता है तो कुछ को पुरुषों की जागीर। मसलन - खाना बनाना स्त्रियों का काम है तो विभिन्न व्यंजनों की फरमाइश करना पुरुषों का; कपड़े धोना स्त्रियों का काम है तो उन्हें गन्दा कर वाश-बास्केट में डालना पुरुषों का; घर की साफ -सफाई, साज-सज्जा स्त्रियों का काम है तो सामान बिखराते रहना पुरुषों का।

ऐसे बहुत कम परिवार होंगे जहाँ ऊपर वर्णित कार्यों को करने की ज़िम्मेदारी विपरीत लिंगों द्वारा उठाई जाती होगी। सामान्य तौर पर कार्यों को स्त्री-विशेष और पुरुष-विशेष की श्रेणी में बाँट दिया गया है। उस दौर को गुज़रे ज़माना हुआ जब स्त्रियाँ घर पर रहकर घर के कार्य निबटाया करती थी और पुरुष पैसे कमाने घर से बाहर जाया करते थे। पहले के कार्यों का स्वरुप भी अलग हुआ करता था। लोगों को ए-सी कमरे में बैठकर लैपटॉप या कम्प्यूटर पर दिमाग नहीं फोड़ना होता था। बल्कि शारीरिक श्रम और मेहनत-मशक्कत वाले कार्य अधिक हुआ करते थे, जैसे खेती करना, हल जोतना, मजदूरी करना, लकड़ियाँ काटना आदि। अफसर बनकर बाबू वाले कार्य तो अंग्रजों की देन है।

खैर, एक तरफ जहाँ पुरुषों के कार्य करने के तरीके बदले वहीं दूसरी तरफ महिलाओं की स्थितियों में भी भारी बदलाव आया। पहले महिलाएँ घर की चहारदीवारों में ही सीमित रहा करती थी। गाँवों और शहरों के आधार पर भी कार्यों में बहुत असमानता थी। किन्तु आज-कल गाँव की शक्लें भी बदल गई हैं और वहाँ के काम-काज का दायरा भी सिमट गया है। अब आँगन बुहारना तो है मगर गोबर से निपाई नहीं होती; चक्की या जाते से खुद ही गेहूँ पीसना या दाल दररना अब पुरानी बात हो गई है; चक्की-फ्रेश आटा अब गाँव-गाँव में उपलब्ध है। मिट्टी के चूल्हे, लालटेन और घासलेट तो आज शायद ही देखने को मिले - बिजली और पानी आज हर घर में उपलब्ध है। किन्तु घर की महिलाओं का सबको भोजन परोसकर खिलाना, स्वयं सबसे अंत में जो भी बचा-खुचा, बासी-ताज़ा मिल जाए खाना अब तक बरक़रार है। आज की शहरी युवा पीढ़ी शायद इसकी कल्पना भी नहीं कर पाए, किन्तु जिन्होंने गाँव का जन-जीवन देखा है वे शायद इन परिदृश्यों को समझ सकें।

घर के प्रति इतना समर्पित होने के बाद भी स्त्रियों के योगदान को कभी उचित प्रोत्साहन नहीं मिला। घर के सारे बड़े फैसले पुरुष लिया करते थे। स्त्रियों की राय परिवार के लिये मायने नहीं रखती थी। यहाँ तक कि शादी-ब्याह तक के फै सले बड़े-बुजुर्ग अपने अनुसार ले लेते थे। लड़कियों की राय, पसंद-नापसंद का तो सवाल ही नहीं पैदा होता था। समय के साथ-साथ समाज की रुपरेखा बदली। गाँव खाली होते गए, शहरों की आबादी बढ़ने लगी। खेती-बाड़ी जैसे कार्य कुछ ही परिवारों तक सीमित रह गए और शहर पहुँचे इस नए भारत के काम करने के तरीकों में भारी बदलाव आया।

पुरुष अब धोती-कुर्ता त्याग कर शर्ट-पैंट पहनने लगे, टाई-शाई लगाकर दफ़्तर जाने लगे। शहरीकरण के इस दौर में महिलाओं को भी थोड़ी राहत मिली। शारीरिक मेहनत वाले कार्य अब कम हो गए थे। गैस-सिलिंडर, नल का पानी, फ्रिज, रेडिओ-टीवी... मनोरंजन के अन्य साधन उनको थोड़ा सुकून अवश्य देते थे किन्तु परिवार के प्रति उनकी ज़िम्मेदारी नहीं बदली थी। चूँकि अभी तक उन्होंने घर की दहलीज़ पार नहीं की थी, घर के कामों की सारी ज़िम्मेदारी उन्हीं के कन्धों पर थी। सुबह की चाय से लेकर रात्रि के भोजन तक, चूल्हा-चौका, बर्तन-बासन, कपड़ा-लत्ता, घर की साफ -सफाई, साज-सज्जा... सब उनके ज़िम्मे था। इतना करने के बावजूद उन्हें थकने का अधिकार नहीं था। बाहर से थके आये पति का सिर दबान, पैर दबाना भी एक स्त्री की ज़िम्मेदारी का हिस्सा था। दिन भर कार्य कर पति बेचारा थक जाया करता था किन्तु घर के काम-काज से स्त्रियाँ कहाँ थकती थीं! स्त्रियाँ थक सकती हैं ये कोई सोचता भी नहीं था। पुरुष तो पुरुष, स्वयं स्त्रियाँ भी इस तरह पली-बढ़ी थीं कि उनके मन में ऐसा ख्याल ही नहीं आता था कि कोई मेरे भी पैर दबाता, कभी मैं भी अपने पति या परिवार से पहले खा लेती। यदि तब किसी स्त्री ने ऐसा सोचा होता तो यकीनन उसे क्रन्तिकारी समझा जाता।

खैर, समय फिर बदला। अब स्त्रियों को घर की दहलीज़ से बाहर निकलने का मौक़ा दिया गया। उन्हें भी पढ़ने का समान अवसर मिला। भाईयों के साथ अब बहनें भी स्कूल जाने लगीं किन्तु काम का बँटवारा तब भी नहीं बदला। स्कूल जाने का मतलब था पढ़ाई करना, विद्यालय में जो पढ़ा उसका घर पर अभ्यास करना। तो घर का जो काम लड़कियों के ज़िम्मे था उसके साथ-साथ उन पर पढ़ाई का बोझ भी आ गया था। ना किसी माता-पिता ने, न समाज ने और ना स्वयं लड़कियों ने कभी यह सोचा कि जब वे अपने भाईयों के समान ही पढ़-लिख रहीं हैं तो घर के कामों का भी बँटवारा होना चाहिए। लड़कों को भी घर के कामों में अपनी माँ-बहन का हाथ बँटाना चाहिए।

यह ज़िम्मेदारी हमेशा लड़कियों को ही उठानी पड़ी। लड़कों के जिम्मे था - खेल-कूद, पढ़ाई-लिखाई, भर-पेट भोजन और घर भर में धमा-चौकरी। न उन्हें कभी अपना खाना परोसने की ज़िम्मेदारी दी गयी ना अपनी थाली उठाने की; ना बर्तन धोना सिखाया गया, ना कपड़े धोना या सुखाना। उनके हिस्से का सारा कार्य उनकी बहनें करतीं (छोटी या बड़ी, इससे कोई फ र्क नहीं पड़ता था)। जिन घरों में बहनें नहीं थीं, वहाँ माँ यह सब कर लिया करती थी। ÷बेटों को घर का काम करना शोभा थोड़े ही देता है÷ यही मानसिकता थी समाज की।

दूसरी तरफ लड़कियों के लिए दोगुनी मेहनत हो गयी थी। एक तरफ घर के कामों की ज़िम्मेदारी तो दूसरी तरफ पढ़ाई में अच्छा करने का जुनून। उन्हें समझ आने लगा था कि अपनी स्थिति सुधारनी है तो किताबों को अपना मित्र बनाना होगा। उन्होंने यह ज़िम्मेदारी भी बखूबी निभाई। घर के सारे कामों के साथ साथ पढ़ाई में भी अव्वल आना उनकी ज़रूरत बन गई थी।

समय ने फिर करवट बदली और अब महिलाएँ पढ़ाई के साथ-साथ दफ्तर जाने लगीं। वे बाहर जाकर पुरुषों के साथ कन्धे-से-कन्धा मिला कर काम करने लगीं। घर के लिए कमाने की ज़िम्मेदारी, जो आजतक पुरुषों के कन्धों पर थी, अब महिलाएँ उसमें भी शामिल हो गईं। किन्तु पुरुषों की भूमिका में अभी भी कोई बदलाव नहीं आया। वे अब भी वैसे ही रहे-घर के काम-काजों से बेख़बर एक ज़िम्मेदार पति, एक होनहार पुत्र और एक संवेदनशील भाई। दूसरी तरफ महिलाएँ बाहर कितना भी थके, घर आकर खाना बनाना उन्हीं का काम था। बच्चे भले ही दोनों ने मिलकर पैदा किए हों, उसकी देख-भाल, खाना-पीना, होमवर्क-स्कूल - सभी माँ की ज़िम्मेदारी थी; वो बाहर भले ही अपने पति से बेहतर ओहदे पर हो, किन्तु घर के बच्चे-बूढ़ों की सारी ज़िम्मेदारी अभी भी उसी के कन्धों पर थी। पुरुषों को कभी ये बताया ही नहीं गया कि घर के कामों में उन्हें अब अपनी पत्नियों का, माँ का, बहन का या भाभी का हाथ बँटाना चाहिए।

ये थी कल तक की कहानी। आइए आज में प्रवेश करते हैं। आज की कहानी विचित्र है। समय के साथ-साथ स्त्री-पुरुषों की जिम्मेदारियों का स्वरुप तो बदला किन्तु घर के काम-काज जैसे झाड़ू-पोछा, बर्तन, कपड़े, बच्चों की देखबाल आदि हमेशा से स्त्रियों के ही खाते में रहे। सो पुरुषों में यह भावना आई ही नहीं कि जिस तरह स्त्रियों ने बाहर की दुनिया में उनकी बराबरी की है, उसी तरह घर के अन्दर की जिम्मेदारियों में भी वे स्त्रियों से कंधे-से कंधा मिलाएँ।

स्त्रियों ने तो वे सारे कार्य सीख लिए जो कभी पुरुषों की जागीर समझे जाते थे मसलन - बैंक अधिकारी, पुलिस ऑफिसर, ट्रैफिक पुलिस, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, सेना, खेल-कूद, और ना जाने क्या-क्या। और यह सब सीखते-सीखते उनमें भी एक बदलाव सामने आया। वह था, कल तक जो स्त्रियाँ घर-बाहर दोनों की जिम्मेदारियाँ बखूबी निभा लेती थीं (या शायद मजबूरन निभानी पड़ती थी), उनमें घर के कार्यों के प्रति हीन भावना आने लगी या शायद वे घर के कामों के प्रति उदासीन हो गईं। उन्हें ये एहसास होने लगा कि समाज ने उनके साथ न्याय नहीं किया है। बाहर की ज़िम्मेदारियों ने उन्हें घर की ज़िम्मेदारियों के प्रति उदासीन कर दिया और उन्होंने अकेले इस ज़िम्मेदारी को उठाने से इनकार करना शुरू कर दिया। लड़के तो कभी इस कार्य के लिए बने ही नहीं थे। सो अब शुरु हुआ समस्याओं का सिलसिला। शहरों में स्त्रियों ने घर के कामों में हाथ बँटाने के लिए काम वाली बाई रखना शुरू कर दिया। झाड़ू-पोछा बर्तन के लिए शुरू हुआ यह सिलसिला घर की साफ -सफाई, शौचालय और स्नानागार कि सफाई से होते हुए खाना बनाने और फिर बच्चा संभालने तक पहुँच गया। पहले यह सिर्फ बड़े शहरों तक सीमित था किन्तु धीरे-धीरे यह छोटे शहरों और कस्बों में भी पाया जाने लगा। यहाँ गौरतलब है कि सभी कामवाली बाइयों के अवलोकन (सुपरविज़न) की सारी ज़िम्मेदारी घर की स्त्री की ही रही-यहाँ भी पुरुष दखलंदाज़ी नहीं करते। यानी कुछ ऊँच-नीच होने पर दोषी कौन-स्त्री!

तो क्या आज की महिलाएँ घर के कामों के लिए जो मदद बाहर से ले रही हैं उन्हें नहीं लेना चाहिए? तो क्या स्त्रियों को अपने करियर के साथ-साथ घर का वैसे ही ख्याल रखना चाहिए जैसे पहले की स्त्रियाँ रखती थीं? तो क्या आज की महिलाएँ घर के काम-काज को सुचारू ढंग से चला पाने में सक्षम नहीं हैं?

घर के कामों की ज़िम्मेदारी जब तक अकेले महिलाओं के कन्धों पर होगी, इन सवालों का हल तब तक नहीं मिलेगा। पुरुषों के समान उन्हें भी आराम का पूरा हक़ है। तो क्या हुआ जो उन्होंने अपने आराम के लिए बाहर से मदद ली। और लें भी क्यों न - वो कमाती हैं, अपनी सहूलियत पर पैसे खर्च कर सकती हैं तो करती हैं। यहाँ गौर करने वाली बात यह है कि इतना आगे बढ़ने के बावजूद घर के कार्यों की ज़िम्मेदारी अभी-भी महिलाओं पर ही है। चाहे वो अपनी मदद के लिए बाहर से सहारा लें या स्वयं करें... जैसे भी करें, है यह उन्हीं की ज़िम्मेदारी। पुरुष अभी भी इस ज़िम्मेदारी से आज़ाद हैं।

यहीं सवाल वापस पहली पंक्ति पर आ जाता है। क्यों हमने मौलिक कार्यों को लिंग के आधार पर बाँट रखा है? यदि हमने कार्यों को लिंग के अनुसार बाँटा नहीं होता, यदि बदलते समय के साथ-साथ हमने समाज में स्त्री-पुरुषों को एक समान शिक्षा और संस्कार दे दिए होते तो आज समाज की सूरत कुछ अलग न होती। खाना बनाना केवल महिलाओं की ज़िम्मेदारी कैसे बनी रही जबकि भोजन करना सबकी ज़रूरत है। भोजन, कपड़ा, साफ -सफाई तो मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। फिर क्यों इसे सिर्फ स्त्रियों तक सीमित रखा गया? जैसे-जैसे समाज में महिलाओं की भूमिका बदली, पुरुषों को उसके अनुसार क्यों नहीं ढाला गया?

कुछ परिवारों में हैं ऐसे पुरुष जो घर के काम-काज में अपनी तरफ से महिलाओं का भरपूर सहयोग करते हैं। किन्तु ऐसे पुरुषों की संख्या बहुत ही कम है। और यदि है भी तो वो इसीलिए क्योंकि उनमें स्वयं यह विवेक आया है। इसके लिए परिवार या समाज का कोई योगदान नहीं है। (कहीं-कहीं अपवाद हो सकते हैं किन्तु वे नगण्य ही कहे जायेंगे।) हमारा दिमाग इस बात को मान बैठा है कि घर सजाना तो घर की स्त्रियों का ही कार्य है। हम यदि अपने पिता, भाई या पति को ही झाड़ू लगाते देख लें तो स्वयं ही असहज हो जाते हैं क्योंकि हमने कभी यह देखा ही नहीं है, ऐसा सोचा ही नहीं है।

कितना अच्छा होता कि काम का बँटवारा लिंग के आधार पर नहीं बल्कि रूचि के आधार पर होता, ज़रूरतों की प्राथमिकता के हिसाब से होता। जिन पुरुषों को खाना बनाना अच्छा लगता वे घर भर के लिए खाना बनाते और तब तक स्त्रियाँ कोई और काम निबटा लेती। यदि किसी पुरुष को खाना बनाना नहीं पसंद तो जब तक स्त्री उसके लिए खाना बनाती वह घर की सफाई ही कर लेता या बर्तन ही माँज लेता या वाशिंग मशीन में कपड़े ही धो लेता। माना पिता बच्चे को दूध नहीं पिला सकता है, पर क्या नैप्पी बदल देने से उसका ओहदा छोटा हो जायेगा? जिस समाज ने स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार दिया है यह उसी समाज की ज़िम्मेदारी है कि वह पुरुषों को उसके घर के प्रति कर्तव्यों का भी पाठ पढ़ाए। तब सही मायने में एक स्वस्थ समाज और सफल परिवार की स्थापना होगी।

वर्तमान पीढ़ी बुजुर्गों का करें सम्मान, अपनत्व के साथ जरूरत का रखें ध्यान

एल.डी. मानिकपुरी
सहायक जनसम्पर्क अधिकारी

'बेटा जब भी काम में जाओगे तो बस यही कह देना कि मैं काम में जा रहा हूं और काम से लौटने के बाद भोजन के समय पूछ लेना कि भोजन कर लिए क्या ? इससे ज्यादा मुझे कुछ और नहीं चाहिए बेटा। मैं पैसे या अन्य वस्तुओं के लिए कोई मांग भी नहीं करूंगा। अब इस दुनिया तुम्हारी माँ नहीं है, तुमको मालूम है तुम्हारी बहन ससुराल चली गई है, जो कुछ हो अब तुम ही लोग हो। यह कोई कहानी का अंश नहीं है बल्कि इस तरह एक वृद्ध पिता की अपेक्षा अपने बच्चों से होती है।' संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा है कि 'वृद्ध व्यक्ति ज्ञान और अनुभव के अमूल्य स्रोत हैं और उनके पास शांति, सतत विकास और हमारे गृह की सुरक्षा में योगदान करने के लिए बहुत कुछ है।'

यह महत्वपूर्ण संयोग है कि हिंदू पंचांग के अनुसार, पितृपक्ष शुरू हो चुका है। और आज अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस है। बुजुर्गों का सम्मान, प्रेम, सहयोग और आत्मीयता और उनकी जरूरतों को समझना आज की पीढ़ी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आए दिन खबर पढ़ने, सुनने को मिल जाता है कि परिवार, समाज में बुजुर्गों का अपमान और उनके स्वास्थ्य, जरूरतों को अनदेखी किया जाता है, ऐसे में हम सबकी जिम्मेदारी है कि किसी भी परिस्थितियों में अपने वृद्धजन का सम्मान में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहिए। एक तरफ पितृ पक्ष चल रही है, जिसमें मृत व मोक्ष प्राप्त रिश्ते को जल अर्पण किया जा रहा है, ऐसे में हम जीवित दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता व घर परिवार में रहने वाले वृद्धजन का ध्यान रखने की आवश्यकता है। वे अपने दुःख-दर्द को किसके पास साझा करें यह सोचते हुए दिन काट रहे हैं। विदित हो कि 14 दिसंबर 1990 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के रूप में नामित किया था।

जैसे कि प्रत्येक जीवधारी उत्पन्न होने के पश्चात् क्रमशः, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, अधेड़ावस्था एवं वृद्धावस्था से गुजरता है। वृद्धावस्था को जीवन संध्या भी कहा जाता है, क्योंकि यह जीवन का अंतिम पड़ाव होता है। इस अवस्था तक आते आते मानव शरीर थकने लगता है, शारीरिक क्रियाएं उम्र के साथ साथ शरीर को शिथिल करने लगती हैं। वैसे तो चिकत्सा जगत में आश्चर्य जनक प्रगति हुई है, परन्तु कोई बुजुर्ग आर्थिक रूप से पराधीन है अथवा निम्न स्रोत का उपभोक्ता है, तो निश्चित तौर पर उसके लिए रोग का निदान कर पाना मुश्किल हो जाता है। संवेदन हीनता, किसी बीमार को आश्रय और सुकून देने में सक्षम नहीं हैं। यह तो सत्य है की प्रत्येक इन्सान को मौत आनी है, परन्तु यह भी सत्य है ऐसा कोई निश्चित नहीं है की पति और पत्नी एक साथ दुनिया से विदा लें, अर्थात दोनों की मृत्यु एक समय पर हो किसी एक को पहले जाना होता है। दाम्पत्य जीवन में अकेला रहने वाला व्यक्ति एकाकी पन का शिकार होता है। किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन साथी की सबसे अधिक आवश्यकता प्रौढ़ अवस्था में होती है। प्रौढ़ावस्था में अपने विचारों के आदान प्रदान का एक मात्र मध्यम जीवन साथी ही बनता है। वृद्धवस्था में बीमारी एवं दुःख दर्द में सेवा, सहानुभूति, सहयोग मुख्यतः जीवन साथी से प्राप्त होता है। इसलिए वृद्ध व्यक्ति को भी अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए उसी विचारधारा के लोगों की जरूरत होती है।

प्रत्येक वृद्ध इतना सौभाग्यशाली नहीं होता, की वह जीवन के अंतिम पड़ाव तक आत्मनिर्भर बना रहे, अर्थात उसका आए स्रोत उसके भरण पोषण के लायक जीवन पर्यंत बने रहें। अनेक वृद्धों को आर्थिक रूप से अपने परिजनों जैसे पुत्र, पुत्री, भाई इत्यादि पर निर्भर रहना पड़ता है। उसके व्यक्तिगत खर्चे परिजनों की आय से पूरे होते हैं, जिसमे अनेक बार असहज स्थितियों का सामना इन वृद्धजनों को करना पड़ता है। व्यक्ति का आत्मसम्मान भी दांव पर लग जाता है। कभी कभी आवश्यकताएं पूर्ण भी नहीं हो पातीं। बीमारी, इत्यादि में साधनों का अभाव कचोटता है। उसे मानसिक वेदनाओं का शिकार होना पड़ता है। कभी उसे आत्मग्लानी होती है, उसे अपना जीवन निरर्थक लगने लगता है। महिला वृद्ध जो पहले गृहणी रही हैं उनके लिए आर्थिक निर्भरता कोई व्यथा का कारण नहीं बनती क्योंकि वह पहले भी अपने पति पर निर्भर थी उसके पश्चात् अन्य परिजन पर निर्भर हो जाती है। परन्तु पुरुष जिसका पहले परिवार का पालनहार था और अब उसे स्वयं किसी अन्य परिजन की आय पर निर्भर होना पड़ता है।

सामाजिक व्यवस्था ने बुजुर्गों के लिए अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है। संयुक्त परिवार बिखर कर एकल परिवार बन चुके हैं। बढ़ती जनसंख्या की समस्या, बढ़ता जीवन स्तर एवं बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के कारण प्रत्येक दम्पति के लिए सीमित परिवार की अवधारणा को स्वीकार करना आवश्यक हो गया है। पुत्री को विवाह कर ससुराल विदा करना होता है और पुत्र को अपने अच्छे भविष्य की तलाश में अपने परिवार, अपने शहर से दूर जाना पड़ता है। अंत में परिवार में रह जाते हैं सिर्फ बुजुर्ग पति और पत्नी। ऐसे बुजुर्ग दम्पति को अपने स्वास्थ्य की देख भाल स्वयं ही करनी पड़ती है, अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता सताने लगती है। विकलांगता और वह भी वृद्धावस्था में सिर्फ निराशा, हताशा, उपेक्षा का कारण बनती है और जीवन को बोझिल बनाती है।

इसलिए वर्तमान व नव पीढ़ी को यह प्रशिक्षित होना भी जरूरी है कि घर, परिवार व समाज में रहने वाले तमाम वृद्धजनों का देखभाल, अपनत्व व आवश्यक जरूरतों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। वैसे तो सरकार वृद्धजनों के लिए अनेक योजनाएं संचालित की इसके बावजूद उन्हें प्यार और सम्मान जो घर, परिवार से मिल जाए तो उनका बुढ़ापा निश्चय ही अनेक बाधाओ को पार करते हुए कट जाएगा। इसलिए हम सबकी जिम्मेदारी है कि बुजुर्गों का करें सम्मान, उन्हें दे भरपूर प्यार और रखें ध्यान।

1 अक्टूबर अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस

वृद्धजन दिवस में स्वास्थ्य, सुरक्षा और सहयोग का लें संकल्प

आप की बात

आप की बात

इस कॉलम में अपने विचार या प्रतिक्रिया भेजने के लिए हमारे ई-मेल
pioneer.editorial@gmail.com
पर भी भेज सकते है।
www.dailypioneer.com

स्कूली शिक्षा

स्कूल चाहे जैसा हो, वास्तविक अनुभवों की कक्षा में कोई जगह नहीं है। शिक्षकों को सिलेबस निपटाने की चिंता है और बच्चों को अच्छे ग्रेड्स की। इसलिए शिक्षक लगातार ज्ञान उगलते हैं और बच्चे इसे जस का तस गटकने का प्रयास करते हैं। ज्ञानार्जन की यह तरकीब साधने में जो थोड़े से बच्चे सफल रहते हैं, वे अच्छे विद्यार्थी मान लिए जाते हैं और सत्ता की सीढ़ियों में मनचाही मंजिल तक पहुंच पाते हैं। असफल और औसत ठहराए गए बच्चों की बड़ी संख्या जीवनभर अपनी किस्मत पर रोती है। लेकिन अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का लोहा मनवाने वाले प्रख्यात लोगों में से अधिकतर की स्कूली उपलब्धियां बहुत उल्लेखनीय नहीं रहीं। उनकी योग्यताओं के स्रोत स्कूल की चारदीवारी के बाहर खोजे जा सकते हैं। स्कूली जीवन के बाहर खुद की पहल से उन्होंने अनुभवों का जो संसार रचा, वह जीवनपर्यंत उनकी पूंजी बना। विज्ञान, कला, साहित्य और व्यवसाय के क्षेत्र की ज्यादातर हस्तियों ने मामूली स्कूलों से शिक्षा पाई। वास्तव में सीखना निहायत अंदरूनी मामला है जो बुनियादी रूप से सीखने वाले की पहल और एकाग्रता पर निर्भर है। अतः स्कूली शिक्षा को व्यापक दृष्टिकोण से देखने व इसे जीवन से जोड़ने की आवश्यकता आज बहुत अधिक है।

-सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

जयशंकर का बयान

संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपने बयान से आज विश्व की बड़ी शक्तियों को आईना दिखाने का काम किया है। उन्होंने कहा, वह जमाना चला गया जब कुछ बड़े देश अपना एजेंडा तय करते थे एवं अपेक्षा करते थे कि अन्य सभी देश उनका अनुसरण करें। उन्होंने यह कह कर कनाडा और अमेरिका को भी यह संदेश देने का प्रयास किया है कि राजनीतिक सुविधानुसार आतंकवाद पर कार्रवाई स्वीकार्य नहीं है। आज जहां कनाडा खालिस्तानी चरमपंथियों को संरक्षण देने का कार्य कर रहा है वहीं अमेरिका भी आज उसका समर्थन करने में लगा हुआ है। विदेश मंत्री ने यही समझाने का प्रयास किया है कि हम कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के बेतुके बयानों से कतई सहमत नहीं है एवं इसका विरोध करते हैं। उन्होंने विश्व के कुछ बड़े देशों के एजेंडे की भी आलोचना की है जो चाहते हैं कि रूस-यूक्रेन युद्ध मुद्दे पर भारत उनकी हां में हां मिलाए। दुनिया को यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत को जहां पश्चिमी देशों का सहयोग चाहिए, वहीं पश्चिमी देशों के लिए भारत का सहयोग व दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण है। यह भारतीय विदेश नीति की विजय है।

- मनमोहन राजावत, शाजापुर

राज्यों के बीच विवाद

तमिलनाडु-कर्नाटक के बीच थोड़े-थोड़े समय के बाद कावेरी जल को लेकर विवाद और आंदोलन चलते रहे हैं। इस बार सुप्रीम कोर्ट की सहमति के बावजूद बेंगलुरु में पानी देने पर रोक के लिए बेंगलुरु बंद रखा गया और इसमें राजनीतिक दलों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। एक ही देश के दो राज्यों के बीच कभी जल बंटवारे को लेकर, कभी सीमा विवाद को लेकर और कभी जातिगत दुर्भावना को लेकर हमारे देश में साल-दर-साल नए-नए विवाद खड़े होते जा रहे हैं। दुख की बात यह है कि विवादों की चिंगारी को प्रमुख राजनीतिक दल अपने वोटबैंक स्वार्थ को हवा देकर गंभीर बना देते हैं। विडंबना है कि एक ही दल की दो राज्यों की इकाइयां अक्सर ऐसे विवादों में परस्पर-विरोधी दृष्टिकोण अपनाती हैं, जबकि अक्सर उनका आलाकमान खामोश तमाशाई बना रहता है। सवाल है कि ऐसे विवादों में शामिल दोनों राज्यों के राजनीतिक दल जनता में संवाद विकसित करने तथा समस्याओं के व्यापक हल तलाशने के बजाय उनको लड़ाने में क्यों लग जाते हैं? यह प्रवृत्ति देश के विकास के लिए घातक है।

-विभूति बुपक्या, खाचरोद

राम मंदिर ट्रस्ट की भूमि को लेकर झूठे आरोप लगाने वालों को विधायक आशीष छाबड़ा ने दिया कानूनी नोटिस

पायनियर संवाददाता ➤ बेमेतरा
www.dailypioneer.com

विधायक आशीष छाबड़ा ने उनके ऊपर रायपुर में प्रवेश कॉन्फ्रेंस कर सनातन हिंदू सभा के प्रांत अध्यक्ष राजीव लोचन श्रीवास्तव पार्षद नीतू कोठारी एवं अन्य लोगों को अपने अधिवक्ता के माध्यम से झूठा आरोप लगाने एवं छवि धूमिल करने का आरोप लगाते हुए कानूनी कानूनी नोटिस भेजा है जिसमें मुख्य रूप से विधायक आशीष छाबड़ा ने नोटिस प्राप्तकर्ताओ को कहा है कि राम मंदिर ट्रस्ट की अचल संपदा का अंतरण एवं विनिमयन पंजीकृत दस्तावेजों के आधार पर किए गए हैं जिसमें विधायक आशीष छाबड़ा अथवा उनके परिजन का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई संबंध नहीं रहा है फिर भी अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा के चलते नोटिस प्राप्तकर्ताओं ने तथ्यों को गढ़कर प्रत्यक्षता परिलक्षित कर विधायक की राजनीतिक छवि को खराब करने का प्रयास किया है जिससे विधायक आशीष छाबड़ा एवं उनके परिजनों को मानसिक संत्रास हुआ है नोटिस प्राप्तकर्ताओं के द्वारा झूठ एवं मनगढ़ंत आरोप लगाया गया है जिसके संबंध में उनके पास किसी प्रकार का कोई साक्ष्य नहीं है इसमें विधायक आशीष सम्राट हो उनके परिवार के किसी

सदस्य का किसी प्रकार का कोई हाथ है इस नोटिस में विधायक आशीष छाबड़ा ने नोटिस प्राप्त कर्ताओं को सात दिवस का समय भी दिया है जिसमें वह सार्वजनिक रूप से अपने वक्तव्य का खंडन कर माफी नामा देकर इस मामले को समाप्त कर सकते हैं अन्यथा विधायक आशीष छाबड़ा इस मामले में सिविल एवं दाडिक कार्यवाही करने के लिए सक्षम न्यायालय में अग्रसर होंगे ज्ञात होगे सनातन हिंदू समाज के प्रांत अध्यक्ष राजीव लोचन श्रीवास्तव तथा बेमेतरा की पार्षद नीतू कोठारी सहित कुछ लोगों ने रायपुर में एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर विधायक एवं उनके परिवार पर आरोप लगाया जिसका विधायक आशीष छाबड़ा ने कुछ दिनों पूर्व प्रेस वार्ता लेकर इन बातों का खंडन किया है साथ ही साथ विधायक आशीष छाबड़ा ने प्रेस वार्ता में स्पष्ट भी किया है कि राम मंदिर भूमि अंतरण से उनका वह उनके परिवार का किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है उपरोक्त अंतरण सुमित कौर सलूजा पति बलमीत सलूजा उर्फ बंटी सलूजा के नाम पर किया गया है जिससे उनका किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं रहा है इस मामले में अगर कहीं कोई गलती हुई है या किसी प्रकार का कोई गलत कार्य किया है तो संबंधितों पर निश्चित रूप से कार्रवाई की जानी चाहिए मात्र झूठा आरोप लगाकर छवि खराब करना और अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा पूर्ति के लिए किसी परिवार को मानसिक संत्रास देना उचित नहीं है जिसके चलते उन्होंने कानूनी नोटिस संबंधितों को दिया है

पंडरिया विधानसभा में प्रखर राष्ट्रवादी समाज सेवक प्रदीप केवट भाजपा प्रत्याशी हो सकते हैं

पायनियर संवाददाता ➤ कवर्धा
www.dailypioneer.com

पंडरिया विधानसभा क्षेत्र में भाजपा उम्मीदवार बनने के इच्छुक बहुत से नाम है इसमें एक नाम पंडरिया विधानसभा के बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के जिला संयोजक, प्रखर, राष्ट्रवादी समाज सेवक शासकीय सेवा त्याग कर अपने राष्ट्र सेवा में समर्पित करने,प्रदीप केवट,भारतीय जनता पार्टी मे शामिल होकर संकल्पित भाव से आमजन की सेवा में लगे हुए हैं आज के वक्त में ऐसे समाज सेवक की जरूरत है छत्तीसगढ़ के पंडरिया विधानसभा में आवश्यकता हैके सक्रिय नेता

समाज सेवक एवं किसानों के सुख-दुख में हमेशा साथ खड़े रहने वाले प्रदीप केवट राजनीति में सक्रियता दिखाई दे रही है तथा एक के बाद एक पंडरिया विधानसभा में सीटों में टिकट पाने के इच्छुक के नाम सामने आने लगे हैं ऐसा ही एक छत्तीसगढ़ के जाने-माने विधानसभा पंडरिया,से एक नाम बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के जिला संयोजक प्रदीप केवट,का भी नाम सामने आ रहा है इसे भी भाजपा प्रत्याशी बनाया जा सकता है भाजपा के राजनीतिक गलियारों में प्रदीप का नाम कोई नया नहीं है पढ़ा-लिखा और शिक्षित भी है और स्थानीय भी है और इस बार सभी पार्टी में स्थानीय प्रत्याशी की मांग बढ़ गया है प्रदीप केवट,हर समाज के लोगों से मेल मिलाप है और हर प्रकार के कार्यों में सक्रियता रहता है इसलिए इन्हें हर वर्ग के लोग पसंद करते है आज के वक्त में समाज सेवक का जरूरत है।

जिला पंचायत सदस्य तुकाराम ने ग्रामीणों की समस्या का किया त्वरित निराकरण

पायनियर संवाददाता ➤ कवर्धा
www.dailypioneer.com

हमेशा अपने क्षेत्र के ग्रामीणों की छोटी-बड़ी समस्याओं को दूर करने और मांगों को पूरा करने के लिए तत्पर रहने वाले जिला पंचायत सदस्य एवं युकां के प्रदेश उपाध्यक्ष तुकाराम चन्द्रवंशी ने शुक्रवार को एक बार फिर अपनी सक्रियता दिखाते हुए कवर्धा विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत सोनपुरी के ग्रामीणों की मांग व समस्या का समाधान किया। दरअसल शुक्रवार को श्री चन्द्रवंशी नवनिर्मित इंदौरी नगर पंचायत के लोकार्पण कार्यक्रम में सिरकत करने पहुंचे थे। बताया जाता है कि इसी कार्यक्रम में ग्राम पंचायत सोनपुरी के ग्रामीणों ने तुकाराम चन्द्रवंशी से मुलाकात उनके समक्ष पंचायत के आश्रित ग्राम नवागांव से बोटेपार पहुंच मार्ग की समस्या रखी और मार्ग निर्माण की मांग की। ग्रामीणों ने बताया की यहां आवागमन के लिए मार्ग ही नहीं है। जिसकी मांग वे वर्षो से करते आ रहे हैं और इस संबंध में कई बार शासन-प्रशासन के समक्ष शिकावा शिकायत कर चुके है लेकिन आज पर्यंत उनकी मांग को पूरा नहीं किया गया है। जिसे लेकर इस बार नाराज ग्रामीणों ने विधानसभा चुनाव का बहिष्कार तक करने का ऐलान कर डाला है। इतना ही नहीं उन्होने बकायदा मार्ग में चुनाव बहिष्कार का बोर्ड भी लगा दिया है। इस पूरे मामले की जानकारी होने के बाद तुकाराम ने सक्रियता दिखाते हुए मौके पर पहुंचकर स्थल मुआयना किया और मौके से ही जिला कलेक्टर से दूरभाष पर चर्चा कर उन्हें वस्तुस्थिति की जानकारी दी तथा ग्रामीणों की मांग व समस्या से अवगत कराया। जिस पर कलेक्टर ने समस्या का जल्द से जल्द समाधान कराए जाने का आश्वासन दिया। क्षेत्र के जिला पंचायत सदस्य तुकाराम चन्द्रवंशी की इस सक्रियता को देख ग्रामीणों ने प्रशन्नता व्यक्त की। यहां बताना लाजिमी होगा कि जिला पंचायत सदस्य एवं युकां के प्रदेश उपाध्यक्ष तुकाराम चन्द्रवंशी अपनी इसी तरह की सक्रियता के लिए जाने व पहचाने जाते हैं। इससे पहले भी हाल के दिनो में उन्हों बाढ़ प्रभावित ग्रामीणों सहित अन्य ग्रामीणों की समस्याओं का त्वरित निराकरण कराने में विशेष रूचि दिखाई थी।

जिला मुख्यालय में कांग्रेस पार्टी का नवनिर्मित राजीव भवन का रविंद्र चौबे ने किया उद्घाटन

पायनियर संवाददाता ➤ बेमेतरा
www.dailypioneer.com

प्रदेश के कैबिनेट मंत्री रविंद्र चौबे ने बेरला रोड पर नवनिर्मित कांग्रेस के राजीव भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर चौबे ने कांग्रेस के जिला अध्यक्ष सहित सभी कांग्रेस जनों को बधाई और धन्यवाद देते हुए कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में जिले के तीनों विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी इसी राजीव भवन से नामांकन फार्म जमा करने निकलेंगे, उन्होंने कहा कि जिला मुख्यालय में इस भवन का निर्माण हम सभी के लिए खुशी की बात है, उन्होंने क्षेत्र के पूर्व विधायक स्वर्गीय लक्ष्मण प्रसाद वैद्य, शिवलाल कुर्रे एवं पूर्व ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष स्वर्गीय गणेश प्रसाद पुरोहित को याद करते हुए कहा कि कांग्रेस की शुरुआत यही से हुई थी, और स्वर्गीय डा चेतन सिंह वर्मा ने अपने विधायकी कार्यकाल में नगर में कांग्रेस भवन निर्माण की नींव रखी थी, उन्होंने कहा कि प्रत्येक जिला मुख्यालय में राजीव भवन निर्माण का निर्णय लिया गया था, जिसके तहत यहां भी भवन निर्माण का कार्य पूर्ण हुआ है, इसके लिए जिला कांग्रेस अध्यक्ष बंसी पटेल विशेष तौर पर बधाई के पात्र हैं, जिन्हें इस कार्य का श्रेय प्राप्त हुआ है, रविंद्र चौबे ने आजादी एवं कांग्रेस के इतिहास को एक बताते हुए कहा कि कांग्रेस में कहीं भेदभाव नहीं रहा है कांग्रेस ने हमेशा मजदूर किसानों की सुध ली है लेकिन वर्तमान में नया संकट उत्पन्न हो रहा है संविधान में संशोधन की बात हो रही है। इस अवसर पर उन्होंने राहुल गांधी के यात्रा का जिक्र करते हुए छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा जनता के हित में किया जा रहे कार्यों का उल्लेख किया।

जिले की तीनों सीटो के साथ प्रदेश 75 पार रहेगी कॉंग्रेस, विधायक

इस दौरान क्षेत्र के विधायक आशीष छाबड़ा ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी कांग्रेस जनों को बधाई देते हुए जिला मुख्यालय में भवन निर्माण की परिकल्पना साकार होना बताया, और यहीं से जिले के तीनों विधानसभा क्षेत्र में प्रचंड मतों से जीतने के लिए संकल्प का आवाहन किया, उन्होंने प्रदेश में 75 पर की सरकार बनाने का दावा भी किया, नवागढ़ विधायक गुरुदयाल बंजारे ने भी भवन निर्माण पर खुशी जाहिर करते हुए जिले के तीनों विधानसभा क्षेत्र में फिर से कांग्रेस को अधिक मतों से जीताने की अपील की, उन्होंने इस अवसर पर अपने कार्यकाल में आचरण और व्यवहार से ठेस पहुंचने पर कार्यकर्ताओं से क्षमा याचना भी की इस परिपेक्ष में उन्होंने जिला कांग्रेस अध्यक्ष बंसी पटेल के नाम का विशेष तौर पर उल्लेख किया। साथ ही विधायक बनने या नहीं बनने पर भी अपनापन बनाए रखने की अपील कार्यकर्ताओं से की। इस अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष बंसी पटेल ने कैबिनेट मंत्री चौबे विधायक छाबड़ा, बंजारे सहित सभी कार्यकर्ताओं का सहयोग के लिए आभार जताया।

छत्तीसगढ़ प्रदेश शासकीय शिक्षक फेडरेशन ने स्व. शंकर गुहा नियोगी को श्रद्धासुमन अर्पित किया

पायनियर संवाददाता ➤ दल्लीराजहरा
www.dailypioneer.com

कामरेड स्व. शंकर गुहा नियोगी के शहादत दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रदेश शासकीय शिक्षक फेडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष शंकर साहू के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल में प्रमुख रूप से केशव राम भूआर्य, जयप्रकाश बघेल, पवन साहू, दिनेश निषाद फ्रेंड्स युवा विकास समिति के सचिव-भूषण यादव व उपाध्यक्ष पुरुषोत्तम यादव ने वार्ड क्रमांक-14 समाधि स्थल में जाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया व उनके द्वारा किए गए कार्यों को याद किया गया। छत्तीसगढ़ प्रदेश शासकीय शिक्षक फेडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष शंकर साहू ने बताया कि कामरेड शहीद शंकर गुहा नियोगी जी हमेशा गरीब छात्रों को अच्छी शिक्षा मुहैया हो सकें व किसानों, युवा वर्ग एवं मेहनतकश मजदूरों के लिए हमेशा संघर्ष करते हुए उनके जीवन स्तर को हमेशा ऊंचा उठाने का प्रयास किया तथा गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान किया जा सके इसके लिए उन्होंने केम्प क्षेत्र में हेमंत प्राथमिक शाला-दल्ली राजहरा का निर्माण किया तथा गरीबों को बहुत कम पैसे में अच्छी चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो इसके लिए उन्होंने शहीद अस्पताल दल्ली राजहरा का निर्माण किया, जो कि बहुत ही सराहनीय प्रयास था, उसके साथ ही उन्होंने हमेशा किसान, मजदूर, नौजवानों के हक व अधिकार के लिए हमेशा संघर्ष किया। कामरेड नियोगी के कार्यों को हमेशा छत्तीसगढ़ जनता याद करते हैं तथा उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना ही कामरेड नियोगी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

चोरी के आरोपी को गिरफ्तार कर रिमांड पर भेजा गया जेल

दल्लीराजहरा। चोरी की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक जितेंद्र कुमार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार नायक, जिला बालोद व राजहरा नगर पुलिस अधीक्षक राजेश बागडे के मार्गदर्शन में दिये गये दिशा निर्देश के परिपालन में त्वरित चोरी के अज्ञात आरोपी को पकड़ने थाना स्तर पर टीम गठित किया गया। थाना डौण्डी क्षेत्रान्तर्गत प्रार्थी विवेक अग्रवाल पिता प्रेमचंद अग्रवाल साकिन वार्ड क्र. 04 नंदई बसंतपुर जिला राजनांदगांव ने थाना डौण्डी आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि नल जल योजना के तहत पाईप लाईन बिछाने के लिये एचडीपीई की 9 बंडल पाईप आमाडूला के मंडलपारा के सडक किनारे रखा था। इसके उपरांत राजनांदगांव से ग्राम आमाडूला मंडलपारा में जाकर देखा जहां एचडीपीई की 9 बंडल पाईप रखा था, पर वहां 300 -300 मीटर का 3 बंडल 63 एम एम का पाईप नहीं था। किसी अज्ञात व्यक्ति के द्वारा 300 -300 मीटर का 3 बंडल 63 एम एम का पाईप कीमती करीब 1 लाख 55 हजार रूपये को आमाडूला मंडलपारा के सड़क किनारे से चोरी कर ले गया था। रिपार्ट पर थाना डौण्डी में अपराध क्र. 208/ 2023 धारा 457,380 भादवि का अपराध पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण के आरोपी के पता तलाश दौरान संदेही पुरूषोत्तम गावडे पिता हलालखोर गावडे उम्र 28 वर्ष, राजेन्द्र कुमार मण्डावी पिता राय सिंह मण्डावी उम्र 32 वर्ष निवासी चिहरो थाना डौण्डी को अभिरक्षा में लेकर घटना के संबंध में पूछताछ दौरान चोरी करना स्वीकार करने आरोपीयों के कब्जे से चोरी गये 300 ङ्क 300 मीटर का 3 बंडल 63 एम एम का पाईप कीमती करीब 1 लाख 55 हजार रूपये को आरोपियों के कब्जे से जप्त किया गया। आरोपियों द्वारा जुर्म स्वीकार करने पर गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया। प्रकरण के कार्यवाही में थाना प्रभारी डौण्डी निरीक्षक सुनील तिर्की, उप निरीक्षक धनेश्वर साहू.. प्रधान आरक्षक. विष्णु तारम, आरक्षक रवि निर्मलकर, जानेश्वर करचाल, की सराहनीय भूमिका रही।

हस्ताक्षर साहित्य समिति ने हिंदी पखवाड़ा के अंतिम दिवस पर विचार गोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन किया

पायनियर संवाददाता ➤ दल्लीराजहरा
www.dailypioneer.com

14 सितंबर से 28 सितंबर तक हिंदी दिवस पखवाड़ा मनाया जाता है। इसी क्रम में नगर के साहित्यकारों की संस्था हस्ताक्षर साहित्य समिति ने हिंदी पखवाड़ा के अंतिम दिवस 28 सितंबर को काव्य गोष्ठी एवं हिंदी की दशा और दिशा पर विचार गोष्ठी का आयोजन स्थानीय निषाद समाज भवन में किया गया। जिसमे वक्ताओं ने जमकर हिंदी भाषा के उत्थान के किये मिलकर सामूहिक प्रयास करने की वकालत की। हस्ताक्षर साहित्य समिति समय- समय पर हिंदी भाषा एवं उससे जुड़े विभिन्न पहलू को रेखांकित करने एवं साहित्य के प्रति चिंतन को लेकर आयोजन करती रही है। 28 सितंबर को समिति द्वारा रखी गई विचार गोष्ठी में हिंदी की दशा और दिशा पर सरिता सिंह गौतम ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी भाषा देश के लोगो को ही नही विदेशियों को भी आकर्षित करती रही है। तभी तो हिन्दी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपना परचम लहरा रही है। हिंदी की व्यापकता को नहीं पहचान पाने के कारण अपने ही देश मे उपेक्षित सी रह गई है। यही वजह है कि आज भी हिंदी को दोयम दर्जा ही प्राप्त है। हिंदी को संविधान में राजभाषा के रुप में मान्यता ही नहीं मिली है। हिंदी भाषा भारतीयों की आत्मा है।कोटि कोटि कंठों की यह भाषा भारतीय प्रतिबद्धता और लोक चैतन्य की भाषा है।हिंदी भाषी जनसमुदाय न लुप्त होंगे, न पराजित और न अस्त होंगे न वे अपनी भाषा को लुप्त पराजित,अस्त और विकृत होने देंगे। सरिता गौतम ने आगे कहा कि लोग अपने बच्चों को न केवल हिंदी के महत्व से परिचित कराए बल्कि हिंदी में बात करने ,पढ़ने के लिए प्रेरित करें। साथ ही हिंदी साहित्य गौरवशाली इतिहास से परिचित कराए ताकि हिंदी भाषा को विश्व भाषा का दर्जा प्राप्त हो सके। वरिष्ठ साहित्यकार संतोष ठाकुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि-हिंदी मातृभाषा होते आज प्रचार, प्रसार की दरकार लिए हुए मुहाने पर खड़ी हुई है।

हिंदी है राजभाषा जग में अलख जगा दो
जन,जन की है ये भाषा,जननी है इसकी संस्कृत।
अमित सिन्हा ने अपनी रचना
'गीत गाता चल मुसाफिर,गीत गाता चल'
क्या पाया क्या खोया, उसका क्यों हिसाब करें। , के माध्यम से अपनी ओर ध्यान खींचा। संतोष ठाकुर ने अपनी रचना आज हम कैसे जी रहें भागदौड़ ही जिंदगी हैं क्या कहिए, भय, तनाव में आदमी है क्या कहिए' पढ़ी।

घनश्याम पारकर ने आज गणेश उत्सव में जो विकृति देखने को मिल रही है उस पर चिंता जताई-
जेमे नहीं तेमे लम्बोदर ला बइठावत हें,
धोती ला छोड़ के फूलपेंट ला पहिरावत हैं
यहीं देखें बर गेंव एक दिन गणेश ला,
देखत रहि गेंव,वो कर सवारी अऊ भेष ला।

अमित प्रखर ने जन नायक भगवान श्री राम के अस्तित्व पर सवाल उठाने वालों को अपनी सशक्त रचना के माध्यम से करारा जवाब दिया। वाहवाही बटोरी। राम ही प्रारब्ध है,राम ही निष्कर्ष है, राम बिन उत्थान कैसा,राम तो उत्कर्ष है।

भाजयुमो अध्यक्ष डिकेश पटेल ने मुख्य नगरपालिका अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

पायनियर संवाददाता ➤ कुम्हारी
www.dailypioneer.com

भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा कुम्हारी के अध्यक्ष डिकेश पटेल की अगुवाई में नगर पालिका परिषद क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले समस्याओं को देखते हुई मुख्य नगर पालिका परिषद अधिकारी को ज्ञापन दिया गया। नगर के महामाया रोड, राष्ट्रीय राजमार्ग पर आवारा मवेशियों के बैठने से रोड जाम, दुर्घटनाओं का शिकार आमजनों, यात्रियों को होना पड़ रहा है, ऐसे मवेशियों को गौठान भेजा जाये और इस समस्या का स्थाई समाधान किया जाए। बड़ा तरिया (शीतला तालाब) वर्तमान मे बड़े तरिया गार्डन है, पहले वहां एक रास्ता हुआ करता था, नगरवासी उसे अपने उपयोग मे लाते थे, वह रास्ता पुनः खोला जाये। वार्ड क्र.03 अम्बेडकर भवन (सामुदायिक भवन) ठेकेदार द्वारा एक दिन की राशि 15000 लिया जा रही है जो आम जनता के लिए काफी अधिक है, इस पर तत्काल विचार कर उचित निर्णय लिया जाए। नालियों का जाम रहना, जिससे प्रत्येक वार्ड में मलेरिया के मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है। ऐसे में डेंगू के प्रकोप की आशंकाएं भी निःसंदेह बढ़ रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना का आम जनों को शीघ्र लाभ देने आदि प्रमुख विषय रहे। भाजपा युवा मोर्चा के अध्यक्ष एवं युवा भाजयुमो कुम्हारी के कार्यकर्ताओं द्वारा मुख्य नगर पालिका अधिकारी को मुख्यतः 17 बिन्दुओं पर ज्ञापन दिया गया तथा समस्या निवारण करने 7 दिनों का समय दिया गया है । नियत समय तक समस्या निदान नहीं होने पर भाजयुमो द्वारा आन्दोलन किया जाएगा। इस अवसर पर गोविन्द पटेल युवा मोर्चा महामंत्री, पार्षद विनोद बंजारे, फिंगेश्वर साहू, उधो साहू, उमाकांत साहू, हुलाज साहू, बंटी सेन, ऋषि रात्रे, प्रताप बघेल, हिमांशु पटेल, लकी पटेल, सुमित, प्रियांशु, दीपेश, रवि, बॉबी, राहुल, पिंटू देवांगन, शिवम सहित सभी युवा मोर्चा के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

नगर की समस्यायों को लेकर पालिका प्रशासन सदैव गम्भीर, सजग और तत्पर है । नियमानुसार यथोचित कार्यवाही समय पर की जावेगी ।
जितेंद्र कुशवाहा
मुख्य नगरपालिका परिषद अधिकारी कुम्हारी

डोंगी तराई उल्टी दस्त के प्रभावित मरीज दूसरे दिन भी अस्पताल में

बीते शुक्रवार को एक 14 साल छात्रा की मौत हो गई, अधिकारियों को नहीं मिली लीकेज पाइपलाइन का ठिकाना

पायनियर संवाददाता ➤ बेमेतरा
www.dailypioneer.com

साजा विकासखंड के सरहद से लगे ग्राम पंचायत डोंगीतराई में पेयजल नल जल योजना के पाइपलाइन लीकेज होने पर उल्टी दस्त की शिकायत पर 24 घंटे लगातार ढूढने पर भी विभाग की टीम को लीकेज पाइप लाइन नही मिल पाया। दूसरे दिन शनिवार को भी विभाग के एक सब इंजीनियर के नेतृत्व में ठेकेदार और विभाग के मैदानी कर्मचारी ग्राम पंचायत डोंगीतराई में नल जल योजना के अंतर्गत सप्लाई किए जाने वाले पानी टंकी से पूरे गांव में पानी की सप्लाई कर दिन भर लीकेज पाइपलाइन ढूंढने में लग रहे पीएचई विभाग का दावा है कि ग्राम डोंगी तराई में नल जल योजना के अंतर्गत गांव में कोई भी पाइपलाइन लीकेज नहीं है। इस संबंध में जानकारी देते

हुए पीएचई विभाग के ईई आर के धनंजय ने बताया कि गांव वाले भी स्पष्ट जानकारी नहीं दे पा रहे है। ग्राम पंचायत सरपंच से भी जानकारी ली गई मगर नल जल योजना का कोई भी पाइपलाइन गांव में लीकेज नहीं मिला है। उन्होंने बताया कि 1 वर्ष पूर्व नल जल योजना के अंतर्गत निर्मित पानी टंकी एवं पूरे सिस्टम को ग्राम पंचायत को हैंड ओवर किया जा चुका है। और ग्राम पंचायत के ही देखरेख में नल जल योजना गांव गांव में संचालित है ।इसके मरम्मत की पूरी जिम्मेदारी ग्राम पंचायत की है। धनंजय ने बताया कि दूसरे दिन शनिवार को भी पी एच ई की पूरी टीम गांव में लीकेज पाइपलाइन ढूंढने में लगा रहा है मगर ग्राम पंचायत में किसी भी वार्ड में कोई भी पाइपलाइन लीकेज नहीं मिला नल जल योजना के सभी पाइप लाइन सही है, और नियमित रूप से घर-घर पानी की सप्लाई हो रही है। पीएचसी विभाग के द्वारा सभी शासकीय हैंड पंप एवं बोरवेल में क्लोरीन डाला गया है और पानी टंकी की सफाई भी की गई है। वही ग्राम पंचायत का भी विभाग को कोई सहयोग नहीं मिल पा रहा है। घटना के बाद से 2 दिन बीत गए मगर अभी तक ग्राम पंचायत सचिव गांव में नहीं पहुंचे हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र साजा में उल्टी दस्त से पीड़ित 14 मरीजों की भर्ती की गई है, इस संबंध में जानकारी देते हुए बी एम ओ साजा डॉक्टर अश्वनी कुमार वर्मा ने बताया कि सभी मरीज पूरी तरह से स्वस्थ है, और सभी मरीजों को शनिवार शाम को छुट्टी दे दी गई है।श्री वर्मा ने बताया कि गांव में स्वास्थ्य विभाग के द्वारा सर्वे किया गया है, जिसमें गांव का कोई भी ग्रामीण उल्टी दस्त एवं अन्य गंभीर बीमारी से ग्रसित नहीं है। गांव में क्लोरीन की टेबलेट का वितरण तथा ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव किया गया है।

साजा एसडीएम विश्वासराव मास्के ने जानकारी दी है कि पी एच ई एवं स्वास्थ्य विभाग के द्वारा गांव में सतत निगरानी की जा रही है। सभी उल्टी दस्त के अस्पताल में भर्ती सभी पीड़ित मरीज पूरी तरह से स्वस्थ हैं। गांव वालों को पर्याप्त सरकारी सुविधाएं प्रदान कर दी गई है, डायरिया पूरी तरह से गांव में नियंत्रण में है। तथा सरकारी अस्पताल में भर्ती किए गए सभी मरीज स्वस्थ हैं।

गत वर्ष भी हुआ था गांव में डायरिया

पिछले वर्ष भी इसी तरह ग्राम डोंगीतराई में उल्टी दस्त की शिकायत पर स्वास्थ्य विभाग के द्वारा मरीजों को का इलाज किया गया था। दूषित पेयजल के नाम पर गांव में चर्चा हो रही है लेकिन शासन के द्वारा गांव में बनाए गए पानी टंकी और नल जल योजना की पाइपलाइन सही पाए गए हैं फिर भी ऐतिहात के तौर पर पी एच ई विभाग के अलावा स्वास्थ्य विभाग का पूरा हमला शनिवार दिन भर गांव में घूम-घूम कर ग्रामीणों की जानकारी ले रहे थे। तथा पाइपलाइन से पानी सप्लाई कर लीकेज ढूंढने में विभाग के मैदानी हमला जुटा रहा।

एक 14 वर्षीय छात्रा की हुई की मौत

बता दे की ग्राम पंचायत डोंगी तराई में दूषित पानी पीने से जहां 10 लोग डायरिया से प्रभावित हो गए थे वहीं एक 14 वर्षी छात्र लक्ष्मी यादव की भी मौत हो गई थी इसके बाद फिर सभी को अस्पताल में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती किया गया।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, संभाग जगदलपुर जिला-बस्तर

// मैनुअल निविदा सूचना //

दूरभाष नम्बर-07782-222865 ई-मेलआईडी-eeresjagdalpur@gmail.com
क्रमांक/3449/व.ले.लि./ग्रायांसेवा/2023-24 जगदलपुर, दिनांक 27/09/2023

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्यों हेतु **प्रथम बार** मुहरबंद मेन्युअल निविदा आमंत्रित की जाती है:-

क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रूपये लाख में)	निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि
1	2	3	4
1	मेडिकल कालेज डिमरापाल में ई.टी.पी. स्थापना सिविल कार्य विकास खण्ड तोकापाल	16.60	13.10.2023

2. उपरोक्त निर्माण कार्यों के निविदा की सम्बधी शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। साथ ही यह जानकारी विभागीय वेब साइट http://res.cg.gov.in से भी दिनांक 07.10.2023 के पश्चात डाउनलोड की जा सकती है।

(डी.पी.देवांगन)
कार्यपालन अभियंता
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा,
संभाग जगदलपुर

G-05821/3

महाराजा अग्रसेन जयंती 2023 की पत्रिका का समाज के वरिष्ठजनों ने किया विमोचन

आयोजन में होंगे 60 से अधिक कार्यक्रम, जयंती के दिन भव्य शोभायात्रा व अग्रभोज

पायनियर संवाददाता ➤ रायगढ़
www.dailypioneer.com

गौरी शंकर मंदिर चैक स्थित अग्रोहा भवन में शुक्रवार को अग्र समाज द्वारा आयोजित महाराज श्री अग्रसेन जयंती की पत्रिका का भव्य विमोचन समारोह आयोजित हुआ। सर्वप्रथम महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा पर माल्यार्पण और द्वीप प्रचलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। आयोजन समिति के सदस्यों ने मंच पर आसीन अतिथियों का दुपट्टे एवं फूल माला से अभिनंदन किया गया। इसके पश्चात इस वर्ष की पत्रिका का विमोचन हुआ। मंच पर समाज के वरिष्ठ जनों में मुख्य रूप से नंदकिशोर अग्रवाल (एन. आर.),बजरंग अग्रवाल (सूरजपुर), राधेश्याम अग्रवाल (लेन्ध्रा), सत्यनारायण अग्रवाल (सत्तू भैया), हनुमान जिंदल, गौरीशंकर अग्रवाल, मोहनलाल अग्रवाल (कोतबा), गोपाल दास गुप्ता, विजय अग्रवाल (कोतरा रोड),रतनलाल केड़िया, अनिल अग्रवाल (बाराद्वार) राजू केड़िया,डॉ राजू अग्रवाल एवं पूर्व विधायक विजय अग्रवाल विराजमान थे।

इस वर्ष जयंती को सुचारू रूप से चलने के लिए रायगढ़ अग्र समाज के सदस्य त्रिलोक महमिया और बजरंग अग्रवाल (जूटमिल) को आयोजन समिति का प्रभारी एवं महिलाओं में कविता विकास अग्रवाल पायल विकास अग्रवाल पुस्तक को प्रभारी बनाया गया है। सर्वप्रथम श्री अग्रसेन सेवा संघ के अध्यक्ष बजरंग अग्रवाल (लेन्ध्रा) ने अपने उद्बोधन में सभी को जयंती की बधाई देते हुए जयंती के समस्त कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता दर्ज करने का आग्रह किया। श्री अग्रसेन सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष मुकेश मित्तल कलानोरिया और प्रदीप गर्ग ने जयंती संबंधित जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष जयंती में 60 से अधिक कार्यक्रम होंगे और दस दिवसीय अग्रसेन जयंती चलेगी महाराजा श्री अग्रसेन जी के जन्म उत्सव के दिन नगर में भव्य शोभायात्रा समाज की तरफ से निकल जाएगी एवं रात्रि को आगरा भोज का आयोजन किया जाएगा। जयंती में आयोजित मुख्य कार्यक्रमों के प्रभारी ने कार्यक्रम के संबंध में जानकारी देते हुए समाज को कार्यक्रम से अवगत कराया। सफल मंच संचालन श्री अग्रसेन सेवा संघ के सचिव संजय अग्रवाल कार्ड ने किया। सफल मंच संचालन अग्रसेन सेवा संघ के सचिव संजय अग्रवाल (कार्ड) ने किया। जयंती आयोजन समिति के मीडिया प्रभारी प्रकाश निगानिया ने बताया कि 5 अक्टूबर से जयंती के कार्यक्रम प्रारंभ होंगे।

जयंती पर होगी स्पर्धाएं व सांस्कृतिक कार्यक्रम

महाराजा श्री अग्रसेन जयंती में इस वर्ष से अधिक प्रतियोगिताएं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। जिनमे में श्री अग्रसेन क्रिकेट ट्राफी,अग्रमैराथन, बैडमिंटन, सूकर, बॉक्स क्रिकेट, ह्यूमन लूडो, सांप सीढ़ी,जुंबा डांस, स्किपिंग, एयर राइफल, सब खेलो सब जीतो, मटका फोड़, अग्र साइक्लोन, स्विमिंग, रोल स्केटिंग, पुष्पहार प्रतियोगिता, एक ईंट एक रुपये, अग्र वंश वृक्ष सजाओ, रंग भरो,गणित का ज्ञान, सामान्य ज्ञान,ट्राय साइकिल,शतरंज, कैरम, मेरी चार लाइन, अग्र दौड़, धीमी साइकिल, धीमी स्कूटी, गोला फेक,लॉन टेनिस,मेरी दाढ़ी सुपरस्टार, रंगोली, शालिग्राम सजाओ, सेल्फी कॉर्नर,जैसा देश वैसा भेष,लेजी डांस एक्ट, उरली सजाओ, बेबी गुडलिया दौड़,हल्दात के गहने सजाओ,रिश्तो की डोर,डांस बैटल,टी-शर्ट प्रिंटिंग,नोट गिनो,लड्डू गोपाल की झांकी,फैंसी ड्रेस,कपल ऑफ द ईयर,क्रोशिया से नेकलेस बनाना,मेहंदी प्लेटर सजाओ, म्यूजिकल हाउजी, मेरे पापा मेरे दोस्त,राम-राम लिखो, फायरलैस कुकिंग,रेट्रो नाइट्स,मिस एंड मिसेज, पेपर पल्स आर्ट,हाई हील लेमन स्पून रेस,घूमर,अग्र आनंद मेला,बैनर स्लोगन,चूड़ी सजे हाथ आदि कार्यक्रम आयोजित होंगे।

सिवनी पहुंचकर जांच अधिकारी ने खंगाले दस्तावेज

मृत व्यक्ति के नाम 1 लाख 35 हजार केसीसी लोन निकालने का मामला

पायनियर संवाददाता ➤ चांपा
www.dailypioneer.com

सेवा सहकारी समिति सिवनी चांपा में मृत व्यक्ति के नाम 1 लाख 35 हजार केसीसी लोन निकालकर हजम करने के मामले में आज जांच अधिकारी सिवनी पहुंचे। जांच अधिकारी ने मामले से जुड़े सभी दस्तावेज खंगाला। जांच अधिकारी देवेश चतुगोष्ठी ने सेवा सहकारी समिति के प्रबंधक ललित देवांगन और शिकायतकर्ता आशीष राठौर का बयान भी दर्ज किया। इस पूरे मामले में सेवा सहकारी समिति के प्रबंधक ललित देवांगन ने अपने बयान में कहा कि उप पंजीयक सहकारी संस्था के जरिए इस मामले में जानकारी हुई। उसने कोई भी गलत काम नहीं किया है। इस मामले के दोषी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। इसी तरह शिकायतकर्ता आशीष राठौर से भी बात की गई तो वो अपनी शिकायत पर कायम रहते हुए दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।जांच अधिकारी ने मृतक सागर सिंह के भाई का भी बयान लिया, जिसमें मृतक के भाई ने कहा कि सागर सिंह के केसीसी लोन निकालने की जानकारी उसे नहीं है।मामले में जांच पूरी होने के बाद रिपोर्ट सहकारी संस्थाएं के उप पंजीयक को सौंपी जायेगी। मामले में कार्रवाई उप पंजीयक ही करेंगे। बहरहाल इस पूरे मामले में 1 लाख 35 हजार लोन तो निकला है और आहरण भी हुआ है, लेकिन कौन इस घटनाक्रम का मास्टरमाइंड है, जांच से स्पष्ट हो जाएगा।

शिकायत की जांच दस्तावेजों और बयान के आधार पर हुई है। प्रारंभिक तौर पर केसीसी लोन तो निकला है पर आहरण के संबंध में बैंक से जानकारी जुटाकर रिपोर्ट उप पंजीयक को सौंपी जाएगी।

-देवेश चतुगोष्ठी, जांच अधिकारी

जिला स्तरीय टीबी मुक्त पंचायत पहल पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया

पायनियर संवाददाता ➤ मुंगेली
www.dailypioneer.com

मनीयारी सभा कक्ष के मीटिंग हॉल में मुख्य कार्यपालन अधिकारी- जिला पंचायत मुंगेली प्रभाकर पाण्डे के निर्देशानुसार संयुक्त संचालक पंचायत मुंगेली भूमिका देसाई की अध्यक्षता में जिला स्तरीय टीबी मुक्त पंचायत पहल पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य जिले की 370 ग्राम पंचायतों को टीबी मुक्त करने के लिए राज्य स्तर से डब्लूएचओ कंसल्टेंट्स डॉ. रितु कश्यप के द्वारा टीबी मुक्त पंचायत के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य योजना बनाने पर चर्चा किया गया और वर्ष 2025 तक टीबी मुक्त भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए तमाम विभाग एक साथ जुटेंगे इस उद्देश्य हेतु कार्यशाला आयोजित की गई।

सीएमएचओ ने बताया की, टीबी मुक्त भारत की शुरूआत सबसे छोटी ईकाई ग्राम पंचायत से होगी। टीबी मुक्त ग्राम पंचायत का लक्ष्य हासिल करने के लिए पंचायत विभाग की सालाना कार्य योजना ग्राम प्रधान डेवलपमेंट प्रोग्राम (जीपीडीपी) को अमली जामा पहनाने के लिए पंचायत विभाग की ओर से स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से प्रत्येक ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों को तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाना है। इसी अवधारणा से उप स्वास्थ्य केन्द्र एवं ग्रामीण स्तर पर कार्यरत् स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा आयुष्मान भारत हेल्थ एवं वेलनेस सेंटर एवं ग्राम पंचायतो के सहयोग से टीबी मुक्त की दिशा में प्रयास किया जा रहा है। इस मौके पर संयुक्त संचालक-पंचायत मुंगेली भूमिका देसाई ने पंचायत विभाग की ओर से सभी आवश्यक सहयोग करने हेतु आश्वासन दिया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. देवेन्द्र पैकरा, द्वारा खण्ड चिकित्सा अधिकारियों को टीबी मुक्त पंचायत हेतु आवश्यक निर्देश दिया। उपरोक्त अवसर पर जिला क्षय उन्मूलन अधिकारी डॉ. सुदेश रात्रे, खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. जीएस दाऊ, डॉ. ए. आर. बजारे, डॉ. ज्वाला कौशिक, डॉ. रूपसिंह आयाम, विकासखण्ड कार्यक्रम प्रबंधक मनीष गुप्ता,निमिश मिश्रा, शैलेन्द्रपाण्डे, समन्वयक, अमिताभ तिवारी, धीरज रात्रे, अमित सिंह, अश्वनी नायक, जिला मितानिन समन्वयक सुमन सुमेश जायसवालल

पथ विक्रेताओ को व्यस्थित करने नगर निगम से निकली राजस्व एवं एनयूएलएम की विशेष टीम

यातायात बाधित करने वालों पर की जा रही कार्रवाई

पायनियर संवाददाता ➤ रायगढ़
www.dailypioneer.com

जिला कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा के मार्गदर्शन में एवं निगम आयुक्त सुनील कुमार चंद्रवंशी के निर्देशानुसार शहर के अंदर सड़क किनारे व्यवसाय करने वाले पथ विक्रेताओं को व्यवस्थित करने विशेष मुहिम चलाई जा रही है जिसमे उन्हें यातायात बाधित स्थलो से उठाकर व्यवस्थित किया जा रहा है साथ ही कार्यवाही भी की जा रही है। विदित हो कि आये दिन शहर के मुख्य मार्गो में छोटे गुमटी ठेला पथ विक्रेताओं के अस्त ब्यस्त दुकान और पसरा लगाने के कारण यातायात को बाधित होते देख जिला कलेक्टर तारन प्रकाश सिन्हा के मार्गदर्शन में निगम आयुक्त सुनील कुमार चन्द्रवंशी ने निगम के राजस्व एवं एनयूएलएम टीम को विशेष रूप से पथ विक्रेताओं के व्यवस्थापन कार्य में लगाया है प्रतिदिन शहर के चिन्हांकित स्थलों अंतर्गत गाँधी प्रतिमा चौक स्थित कई क्षेत्रों से फल-फूल व्यवसायी जो यातायात को प्रभावित करते हुए सड़क पर व्यवसाय कर रहे थे उनके सामान को हटाकर व्यवस्थित किया गया वही कलेक्ट्रेट से लेकर डिग्री कॉलेज तक भी व्यवसायियो को व्यवस्थित किया गया कई लोगो सख्त हिदायत दी गई है तो काई पथ विक्रेताओं पर जुर्माने की राशि और यूजर चार्ज की वसूली भी की जा रही है। निगम आयुक्त चन्द्रवंशी ने कहा कि यातायात बाधित स्थलों से पथ विक्रेताओं को हटाकर व्यवस्थित किया जा रहा है समझाइस दी जा रही है जुर्माने के साथ कठोर कार्यवाही भी की जाएगी।

कलेक्टर ने माह अक्टूबर में ग्रामसभा के आयोजन हेतु दिए आवश्यक निर्देश

पायनियर संवाददाता ➤ मुंगेली
www.dailypioneer.com

कलेक्टर ने माह अक्टूबर में ग्रामसभा के आयोजन हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि माह अक्टूबर से ग्रामसभा की बैठक का आयोजन हेतु जनपद पंचायतवार प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालयों एवं उनके आश्रित ग्रामों में ग्रामसभा का आयोजन करने के लिए एक समय सारिणी तैयार कर लें। ताकि एक तिथि में किसी ग्राम पंचायत के एक ही ग्राम में ग्रामसभा का आयोजन हो सकें। जिससे सरपंच एवं सचिव ग्रामसभा में आसानी से उपलब्ध रह सकेंगें। कलेक्टर ने कहा कि माह अक्टूबर में आयोजित ग्रामसभा में पूर्व बैठक के पालन प्रतिवेदन पर चर्चा करे। पंचायतों के विगत तिमाही के आय-व्यय की समीक्षा एवं अनुमोदन किया जाए। पिछले 06 माह में विभिन्न योजनाओं से स्वीकृत कार्य के नाम, प्राप्त राशि स्वीकृत राशि, व्यय राशि एवं कार्य की अद्यतन स्थिति का वाचन किया जाए। महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजनांतर्गत ग्रामीण परिवारों द्वारा रोजगार की मांग तथा उपलब्ध कराये गये रोजगार की स्थिति की समीक्षा की जाए। इसी तरह कलेक्टर ने ग्राम गौठानों के प्रबंधन एवं संचालन, सुराजी ग्राम योजना के तहत नरवा, गरूवा, घुरूवा एवं बाड़ी से संबंधित कार्यो की प्रगति, सामाजिक सहायता कार्यक्रम अंतर्गत संचालित पेंशन योजनाओं का सामाजिक अंकेक्षण एवं हितग्राहियों का सत्यापन, जरूरतमंद व्यक्तियों के लिये पंचायतों द्वारा वितरित खाद्यान्न एवं उसके लाभान्वितों के नामों का वाचन, जन्म, मृत्यु एवं विवाह पंजीयन से संबंधित प्रकरणों के लंबित, निराकृत एवं वितरित प्रमाण पत्रों की जानकारी देने, मौसमी बीमारियों के निदान एवं निवारण पर चर्चा करने एवं उससे निपटने चिकित्सकीय सुविधाओं का अवलोकन करने तथा इस संबंध में जागरूकता फैलाने, ग्राम पंचायतों में अनिवार्य कर के आरोपण एवं वसूली की प्रगति की समीक्षा करने।

महंत को चुनावी मैदान में घेरने विरोधियों की भी कार्ययोजना नहीं हो पा रही सफल

पायनियर संवाददाता ➤ सक्ति
www.dailypioneer.com

छत्तीसगढ़ प्रदेश में नवंबर 2023 में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आ रहे हैं,वैसे ही विपक्षी पार्टियों की बैचेनी भी विधानसभा क्षेत्र सकती में बढ़ती जा रही है,यह तय माना जा रहा है विधानसभा क्षेत्र सकती से कॉग्रेस के कद्दावर नेता छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ चरणदास महन्त ही कॉग्रेस पार्टी से प्रत्याशी होंगे,भाजपा, आप,बसपा एवँ कॉग्रेस के नेता जिनकी डॉ महन्त के साथ छत्तीस के आंकड़े होने की बातें कहीं जाती हैं,वे डॉ. महन्त को घेरने के लिए दिन रात मंथन कर रहे हैं, वही डॉ चरणदास महन्त को कॉग्रेस पार्टी ने चुनाव अभियान समिति का मुखिया बना दिया, जिसके कारण वे प्रत्याशी चयन से लेकर सगठन के कार्यक्रमो में व्यस्त दिखाई दे रहे हैं, सूत्रों की माने तो भाजपा इस समय निर्णय नहीं कर पा रही कि किसे पार्टी का प्रत्याशी बनाया जाए, इधर कॉग्रेस पार्टी के कथित विरोधी खेमे के नेता भाजपा को हर सहयोग करने का भरोसा दे रहे हैं,तो वहीं इसमे चुनावी सर्वे आड़े आ रहा है,भुपेश सरकार के किसानों की धान खरीदी, बिजली हाफ आवस योजना, हर वर्ग के लोगों को मिल रही है, हर चुनाव में जिला बड़ा मुद्दा रहा है,इसका लाभ भी महन्त जी को मिल रहा है, प्रदेश एवँ गांवो के रुझानों को देखकर कॉग्रेसी भी जो कभी फूल छाप थे वे भी कॉग्रेस पार्टी से टूटने को तैयार नहीं है, सबको उम्मीद हैं प्रदेश में फिर कॉग्रेस सरकार बनाएगी, इसलिए पार्टी से खुलकर बगावत नहीं कर रहे हैं,गत विधानसभा चुनाव में 30 हजार से अधिक मतों से जीते भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के विधायक डॉ.महन्त को हराना नामुमकिन लग रहा है, रणनीतिकारो का मानना है कि गत चुनाव में भाजपा से मेधाराम साहू, बसपा से गौतम राठौर,प्रत्याशी थे।

चलती ट्रेनों से यात्रियों के हो रहे मोबाइल चोरी, जीआरपी रायपुर में सक्ति के अमरलाल अग्रवाल ने कराई रिपोर्ट दर्ज

पायनियर संवाददाता ➤ सक्ति
www.dailypioneer.com

वर्तमान में भारतीय रेलवे सुपरफास्ट ट्रेनों एवं अन्य यात्री ट्रेनों में सुरक्षा के अनेको उपाय कर रही है,तथा ट्रेनों की बोगियो में आरपीएफ के जवान भी गश्त करते हैं किंतु इसके बावजूद एसी की बगियां भी अनेकों मर्तबा यात्रियों को क्षति पहुंचा रही है,इसी श्रृंखला में शक्ति शहर के होटल गिरिराज रन बसेरा के संचालक अमरलाल अग्रवाल ठेकेदार 25 सितंबर को अपने परिवार के साथ शिवनाथ एक्सप्रेस से नागपुर से रायपुर लौट रहे थे, तथा शिवनाथ एक्सप्रेस के कोच क्रमांक- Bw का सीट क्रमांक- 49 एवम 52 था,तथा अमरलाल अग्रवाल ने अपने मोबाइल को अपनी सीट के नजदीक चार्जिंग पॉइंट पर लगाया हुआ था तथा इसी बीच अचानक किसी ने वहां से मोबाइल को गायब कर दिया, तथा अमरलाल अग्रवाल को पता चला तो उन्होंने रायपुर पहुंचकर जीआरपी थाने में तत्काल इसकी रिपोर्ट दर्ज कराई तथा जीआरपी थाने के द्वारा मोबाइल चोरी की रिपोर्ट को मोबाइल गुम के हिसाब से दर्ज किया गया एवं 25 सितंबर को चोरी हुवे मोबाइल के संबंध में आज दिनांक तक कोई जानकारी नहीं मिल सकी है,तथा अमरलाल अग्रवाल का कहना है कि उन्होंने जीआरपी पुलिस को भी अपने मोबाइल के संबंध में सारी जानकारियां उपलब्ध करवा दी है, किंतु उसके बावजूद न जाने क्यों जीआरपी पुलिस मोबाइल बरामद करने में सफलता हासिल नहीं कर पाई है,वहीं ऐसी घटनाओं से जहां रेल यात्रियों की संपत्तियों की सुरक्षा को लेकर भी सवालिया निशान लग गया है,तथा भारतीय रेलवे भले ही यात्री ट्रेनों में इस बात को लेकर इंगित करती है कि यात्री अपने सामान एवम संपत्तियों की सुरक्षा स्वयं करें किंतु इसके बावजूद लंबी दूरी की यात्रा करने वाले रेल यात्री क्या अपनी सीट पर बैठे ही रहेंगे, आखिर में लंबी दूरी में उन्हें आराम की भी आवश्यकता होती है एवं लोग अपने सामानों को अपने सीट के नजदीक ही रखकर इस प्रत्याशा में आराम करते हैं कि उनके कोच में पुलिस के आरपीएफ जवान कहीं ना कहीं गश्त कर रहे होते हैं एवं वैसे भी Ac बोगी में प्रवेश द्वार पर घुसते ही रेलवे का अटेंडर भी रहता है तथा इसके बावजूद ऐसे असामाजिक तत्वों द्वारा एसी बोगी से मोबाइल की चोरी कर लेना एक बड़ी घटना है, तथा भारतीय रेलवे को चाहिए कि इस संबंध में आवश्यक संज्ञान लेते हुए ऐसी व्यवस्था बनाएं की रेल यात्रियों को यात्रा के दौरान उनकी संपत्तियों का नुकसान ना हो सके एवं उन्हें ऐसी घटनाओं से बचाया जा सके,उल्लेखित हो की ऐसे ही एक घटना शक्ति शहर के पेट्रोल पंप व्यवसायी के साथ भी घटित हुई थी, पेट्रोल पंप व्यवसायी अपने परिवार के साथ सुपरफास्ट ट्रेन से यात्रा कर रहे थे।

आशीष ने 5 वीं बार रक्तदान कर लोगों को दिया रक्तदान महादान का संदेश

पायनियर संवाददाता ➤ चांपा
www.dailypioneer.com

रक्तदान महादान की परिकल्पना के साथ नगर के युवा उद्योगपति आशीष अग्रवाल ने आज पितृ पक्ष में अपनी माताजी की पुण्यतिथि के अवसर पर अपना पांचवा रक्तदान किया। वे आयुष्मान ब्लड बैंक बरपाली चौक में जाकर अपना ब्लड ग्रुप ओ पॉजिटिव का रक्तदान किया। मीडिया से चर्चा करते हुए उन्होंने बताया की इससे पहले वे कोरोना कॉल के समय में 3 महीने के अंदर में दो बार बहुत ही जरूरतमंद गर्भवती महिला को अपना रक्तदान दिया उसके बाद एचडीएफसी बैंक के 25 वर्ष पूर्ण होने पर उन्होंने बैंक पर रक्तदान किया एवं अग्रसेन जयंती के अग्रवाल समाज के रक्तदान शिविर पर ब्लड दिया था। आशीष अग्रवाल एक युवा उद्योगपति के साथ साथ।दादी जी और श्याम बाबा जी के अनन्य भक्त भी है और सामाजिक कार्यों में लगातार सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। वे innwy न्यूज़ और सवाल आपका के डायरेक्टर एवं स्पेशल कॉरस्पॉडेंट छत्तीसगढ़ दैनिक दबंग केसरी के बिलासपुर संभाग ब्यूरो दैनिक संदेश के बिलासपुर संभाग ब्यूरो भी हैंउन्होंने आगे कहा कि जिस प्रकार से एक माता-पिता के द्वारा बेटी का कन्यादान करने का महत्व और पुण्य होता है, ठीक उसी प्रकार हर एक व्यक्ति के लिए अपने जीवन में रक्तदान का महत्व है क्योंकि रक्तदान महादान है और हम इससे किसी जरूरतमंद व्यक्ति की जान बचा सकते हैं। अपने एवं अपने परिवार के लिए हर इंसान करता है, पर जो दूसरों के लिए सोचता है या जरूरतमंदों को उसकी ज़रूरतें को पूरा करता है वह भी एक पुण्य का काम है,और प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में रक्तदान करना चाहिए। रक्तदान पूरी तरह से सुरक्षित है क्योंकि रक्तदान से पहले आपकी जांच होती है और आप उसके लायक हैं तभी आपको रक्तदान के लिए कहा जाता है, किसी भी तरह की समस्या या रक्त की कमी होने पर वे स्वयं ही आपको मना कर देते हैं, रक्तदान करने का एक वैज्ञानिक महत्व भी है कि इससे शरीर में रक्त प्रवाह अच्छा होने लगता है और रक्त तेजी से बनने लगता है, रक्तदान रक्त में आयरन के अतिरिक्त स्तर को कम करने में मदद कर सकता है जिससे हेमोक्रोमैटोसिस को रोका जा सकता है। रक्तदान से कमजोरी नहीं आती। प्रकाशित साहित्य के अनुसार, रक्त की मात्रा (प्लाज्मा) 24-48 घंटों के भीतर पुनः भर जाती है। दान के बाद स्वस्थ वयस्कों में लाल रक्त कोशिकाओं की पूर्ति 3-4 सप्ताह में हो जाती है। और स्वस्थ व्यक्ति हर तीन महीने बाद रक्तदान कर सकता है।

रक्तदान का महत्व न केवल उन हजारों लोगों की जान बचाना है जो जीवन से वंचित हैं, बल्कि कई अन्य लोगों की जान बचाना भी है जो विभिन्न बीमारियों से प्रभावित हैं और उन्हें कई बीमारियों से लड़ने में मदद करना है।

विधानसभा क्षेत्र में पद यात्रा बनी चर्चा का विषय

राजीव युवा मितान क्लब सात दिवसीय पदयात्रा को मिला जबरदस्त जनसमर्थन

पायनियर संवाददाता ➤ रायगढ़
www.dailypioneer.com

प्रदेश नेतृत्व के निर्देशानुसार रायगढ़ विधानसभा क्षेत्र में युवा मितान क्लब के समन्वयक और युवा कांग्रेस के शहर जिलाध्यक्ष आशीष जायसवाल को पार्टी ने बड़ी जिम्मेदारी सौपी। जिसमें उन्हें सात दिवसीय पदयात्रा के माध्यम रायगढ़ विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में बूथ स्तर में गांव गांव जाकर राजीव युवा मितान क्लब के कार्यों की समीक्षा एवं आम जनता से मुलाकात कर उन्हें सरकार की जनहितैषी योजनाओं का प्रचार प्रसार करने को कहा गया था। इस दौरान उन्होंने पहले पुसौर विकासखंड से पद यात्रा का आरंभ किया। जिसके बाद लगातार तीन दिन युवा कांग्रेस अध्यक्ष आशीष जायसवाल और युवा मितान क्लब के पदाधिकारी उनके साथ पुसौर विकासखंड में पद यात्रा में शामिल रहे हैं। कार्यक्रम की तय रूप रेखा अनुसार पुसौर के 3 दिवसीय पदयात्रा कार्यक्रम में 30 पोलिंग बूथो का धुँवाधार दौर किया गया,बाद उसके बाद सरिया की ओर रुख करते हुए आशीष जन जन से मुलाकात कर सरकार की योजनाओं की जानकारी देते हुए युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओ को आने वाले विधानसभा चुनाव के लिए चार्ज किया। उक्त पदयात्रा में रायगढ़ लोकसभा युवा कांग्रेस के प्रभारी परमजीत पम्मी शामिल हुए,आशीष जायसवाल के पदयात्रा कार्यक्रम को गाँव गाँव मे युवाओ जबरदस्त जनसमर्थन एवम आम जन का भरपूर आशीर्वाद मिल रहा है,आशीष की भाषा शैली एवम उनके सरल स्वभाव को लेकर इन दिनों पदयात्रा के माध्यम से वह चर्चा का विषय बन चुके है,और उनके पदयात्रा के प्रत्येक पड़ाव में उन्हें जबरदस्त जनसमर्थन प्राप्त हो रहा है, आशीष गांव गांव में जाकर लोगों से मुलाकात के दौरान उन्हें हितग्राही कार्ड योजना के लाभ को समझाते हुए,कार्ड भरवाये जाने एवम वितरण का कार्य भी किया, पुसौर सरिया में पद यात्रा निकालने के आशीष जायसवाल के नेतृत्व की यह यात्रा पदयात्रा के 7 वे एवं आखरी दिन रायगढ़ विधानसभा क्षेत्र के पूर्वांचल क्षेत्र पहुंची ग्राम पंचायत पंडरीपानी से यहां यात्रा चालू की गई जिसका समापन ग्राम पंचायत विश्वनाथ पाली में किया गया। उक्त कार्यक्रम की जानकारी देते हुए युवा कांग्रेस अध्यक्ष आशीष जायसवाल ने बताया कि कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के आव्हान पर उन्हे रायगढ़ विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायतों में जाकर लोगों से मुलाकात कर सरकार की योजनाओं को घर घर तक पहुंचाने को कहा गया था। जिसके फल स्वरूप राजीव युवा मितान क्लब के पदाधिकारी और युवा कांग्रेस अध्यक्ष आशीष जायसवाल के नेतृत्व में युवा कांग्रेस के पदाधिकारियो ने पद यात्रा निकाल कर गांव गांव में जाकर सरकार की योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को दी। पदयात्रा में रायगढ़ विधायक प्रकाश नायक विभिन्न स्थानो पर शामिल होते हुए जनता से रुबरु हुए, जिला पंचायत सदस्य कैलाश नायक उक्त यात्रा में विभिन्न स्थानो में शामिल हुए और युवाओ में ऊर्जा का संचार किया साथ ही कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. राजू अग्रवाल, अरुण गुप्ता, प्रदीप मिश्रा समेत अन्य बहुत से वरिष्ठ युवा, नेताओं ने शिरकत की।

जिला न्यायालय में सफाई कर्मचारियों को स्वच्छता पखवाड़ा की दी गई जानकारी

पायनियर संवाददाता ➤ मुंगेली
www.dailypioneer.com

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय, बिलासपुर के निर्देशानुसार तथा जिला एवं सत्र न्यायाधीश मुंगेली चन्द्र कुमार अजगल्ले के मार्गदर्शन में जिला न्यायालय परिसर में स्वच्छता के संबंध में 15 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसी तारतम्य में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव मयंक सोनी द्वारा जिला न्यायालय के सभी सफाई कर्मचारियों को 15 सितम्बर से 02 अक्टूबर तक विशिष्ट योजना पखवाड़ा स्वच्छता के बारे में अवगत कराया गया तथा लोगों को स्वच्छता के उपर श्रमदान गतिविधियों को शुरू करने के लिए बताया गया। उन्होंने लोगों को स्वच्छता ही सेवा के 2023 की थीम ''कचरा मुक्त भारत'' बनाये जाने हेतु प्रेरित करते हुए न्यायालय परिसर को स्वच्छ बनाये रखने की बात कही। साथ ही उपस्थित अधिवक्ताओं को भी अपने आस-पास स्वच्छता बनाये रखने हेतु प्रेरित किया।

इस भवसागर में हिंदुओं के आठ धर्म गुरु हैं, चार शंकराचार्य व चार रामानंदाचार्य

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

अनंत विभूषित जगतगुरू रामानंदाचार्य स्वामी नरेंद्राचार्य महाराज दक्षिणपीठ ननीज धाम जिला रत्नागिरी महाराष्ट्र के रामानंदाचार्य पीठाधीश्वर हैं। स्वामी नरेंद्राचार्य जी महाराज एक अवतारी पुरुष हैं, जिनकी वाणी, स्पर्श व सानिध्य में शक्ति है। आपका जन्म एवं अवतार कार्य सनातन हिंदू धर्म भारतीय संस्कृति के रक्षण एवं हिंदू धर्म को विश्व में श्रेष्ठता के शिखर पर पहुंचाने के लिए हुआ है। महाराज द्वारा जहां एक ओर जन-जन में धर्म का अलख जगाया जा रहा है, वहीं अंध श्रद्धा निर्मूलन का कार्य भी किया जा रहा है।

एक ओर जहां एक गृहस्थ को एक छोटे से मंत्र के माध्यम से मोक्ष का मार्ग बताते हैं, वहीं भटकते हुए लोगों को भक्ति मार्ग बताते हुए आर्थिक मानसिक एवं शारीरिक समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्शन करते हैं। स्वामी जी द्वारा न केवल आध्यात्मिक बल्कि मानव मात्र के लिए सामाजिक कर्तव्यों का भी निर्वहन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत स्वामी जी द्वारा सामाजिक उपक्रमों जैसे निशुल्क शिक्षा, निशुल्क प्रवेश, निशुल्क शिक्षण, निशुल्क टेक्निकल शिक्षक, निशुल्क मध्यान्ह भोजन, निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण, ग्राम स्वच्छता अभियान, ब्लड डोनेशन निशुल्क विधिक सलाह, निशुल्क चिकित्सा परामर्श के अंतर्गत निशुल्क इलाज एवं निशुल्क भोजन एवं राजमार्गों में 24 घंटे निशुल्क 42 एंबुलेंस की सेवा, निशुल्क आपातकालीन सेवा के अंतर्गत प्राकृतिक आपदा जैसे भूकंप बाढ़ सुनामी इत्यादि नैसर्गिक आपदा के समय आवश्यक सामग्री का निशुल्क वितरण, कपड़े खाना, मेडिसिन एवं आर्थिक सहायता, कृषि उपकरण के अंतर्गत अकाल ग्रस्त किसानों के लिए, गरीब परिवारों के लिए निशुल्क बीज, पावर पंप, खेत में लगने वाले आवश्यक औजार एवं विविध प्रकार की निशुल्क सहायता, किसानों को खेती में उत्सुकता बढ़ाने के लिए जगह-जगह शिविर के माध्यम से डिजिटल प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रशिक्षण एवं कुंभ मेला में दिशा निर्देशों के किताबों का निशुल्क वितरण, पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के अंतर्गत वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण के लिए रैन वाटर हार्वेस्टिंग का कार्य, दुर्बल घटक पुनर्वासन कार्यक्रम के अंतर्गत गरीब एवं विकलांग महिलाओं के लिए स्वरोजगार, जरूरतमंद किसानों एवं गरीब परिवारों के लिए दुग्ध व्यवसाय हेतु किसान एवं व्यापारियों के लिए दूध देने वाली अच्छी नस्ल की बकरी

एवं गाय का निशुल्क वितरण, गृह उद्योग के लिए सहायता, नशा मुक्ति उपक्रम अंतर्गत प्रवचन के माध्यम से तीन लाख से अधिक लोगों की नशा मुक्ति कार्य, अंध श्रद्धा निर्मूलन के तहत अंधश्रद्धा को लोगों के मन से हटाना और अपने अच्छे विचार एवं व्यवहार के माध्यम से लोगों को जीवन जीने की कला सीखना आदि सामाजिक उपक्रम के माध्यम से सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन किया जा रहा है।

स्वामी जी कहते हैं कि सभी प्राणी मात्र में एक ही ईश्वर का अस्तित्व होता है, वह सर्वव्यापी है, वह सभी प्राणियों की अंतरात्मा है, जो जो घटित होता है वह उस प्राणी का कर्म है। सभी प्राणियों में वह वास करता है, वह चित्तस्वरूपी होकर निर्गुण है, मनुष्य मात्र के जो अच्छे व बुरे सुख-दुख के भोग होते हैं, वह उसके कर्म अनुसार उसे प्राप्त होते हैं। विश्व के व्यवहार में ईश्वर सहभागी नहीं होता। वह तटस्थ रहता है, सब कुछ उसके कर्म अनुसार घटित होता है। प्रत्येक व्यक्ति को संचित प्रारब्ध के अनुसार सुख दुख प्राप्त होता रहता है। आज के इस असुरक्षित विश्व में मार्गदर्शन के दृढ़ आधार की आवश्यकता है। आप कहीं भी रहें , चाहे अफ्रीका के घने जंगल में अथवा किसी महासागर में कहीं भी हो मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं। आप मुझे भक्ति दें मैं आपको स्थैर्य दूंगा। ऐसा कहने वाले स्वामी जी के विचार ही नहीं अपितु आप इसे अपने जीवन में आजमाकर देखें, फिर सतगुरु को मानें।

स्वामी जी का दो ही मूल मंत्र है कि, तुम जियो और दूसरों को जीने में सहायता करो तथा सपने में भी किसी के प्रति बुरा मत सोचो। तुम्हारा कल्याण होगा।

जगतगुरु नरेंद्राचार्य महाराज ने लाखों लोगों को व्यसन से मुक्ति दिलाई है। जगतगुरु नरेंद्राचार्य महाराज के मार्गदर्शन पर चलकर संपूर्ण भारत में लाखों लोगों ने लाभ प्राप्त किया है ।

पूरी मानव जाति को प्रेम सद्भावना दया एवं शांति का संदेश देने वाले तथा हर व्यक्ति के मन में अध्यात्म व सात्विकता की ज्योति जलाने वाले जगतगुरु नरेंद्राचार्य जी महाराज आने वाले वर्षों में पूरे विश्व का मार्गदर्शन करने वाले धर्मगुरु होंगे तथा उनका स्व स्वरूप संप्रदाय सारे विश्व मैं अग्रणी होगा।

ऐसे त्रिभुवानंद, अद्वैत, अभेद, निरंजन, निरावलंब, निर्गुण परब्रह्म, सच्चिदानंद भक्त प्रतिपालक, नानीज निवासी पीठाधीश्वर जगतगुरु नरेंद्राचार्य जी महाराज द्वारा अपने श्रीमुख से प्रवचन करने व समस्या मार्गदर्शन करने का सौभाग्य देने स्वामी नरेंद्राचार्य जी महाराज का एक दिवसीय प्रवचन दर्शन एवं समस्या मार्गदर्शन का कार्यक्रम 1 अक्टूबर 2023 दिन रविवार को कृषि उपज मंडी परिसर डोंगरगांव जिला राजनांदगांव छत्तीसगढ़ में आयोजित है। इस दिव्य भव्य आयोजन में सहभागी बनकर दर्शन लाभ लेने का स्वर्ण अवसर को हाथ से जाने ना दे ।

हार्ट अटैक के पेशेंट युवक की खुद के पैसे से इलाज कर जान बचाई

पायनियर संवाददाता ➤ मनेन्द्रगढ़
www.dailypioneer.com

मनेन्द्रगढ़ के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टरों की टीम ने एक हार्ट अटैक के पेशेंट युवक की खुद के पैसे से इलाज कर जान बचाई। जानकारी के अनुसार मनेन्द्रगढ़ के आमाखेरवा से आये कुंदन नामक युवक जो की अपने सीने में दर्द की शिकायत लेकर अस्पताल आया था। डॉक्टर विकास पोद्दार और डॉक्टर ऋषभ दबे ने जब युवक जांच की तो पता चला की युवक को हार्ट अटैक आया है. जाँच में पता चला की युवक के शरीर में थक्का जमा है. जिसे पिघलाना आवश्यक था। इसके लिए जो इंजेक्शन मरीज को लगाये जाते हैं वह काफी महँगी होती है. जो चालीस से पचास हजार रुपये की कीमत की होती है. साथ ही मरीज के परिजनों के पास इतना पैसा नहीं था. इस दौरान मरीज की स्थिति काफी ख़राब होती जा रही थी. मरीज की बीपी जाते देख डॉक्टरों की टीम ने अपने पैसे से इंजेक्शन मंगवाकर लगाया गया. जिसके बाद पेशेंट की जान बची।

अस्पताल के प्रभारी सीएमएचओ डॉक्टर एस. एस. सिंह ने बताया कि डॉक्टर ऋषभ दबे के द्वारा इस तरह दूसरी बार खुद के पैसे खर्च कर मरीज की जान बचाई गयी है. अस्पताल के टीम ने पांच घंटे तक मेहनत कर मरीज की जान बचाई गयी है। मैं सभी डॉक्टर और नर्सिंग स्टाप को बधाई देता हूँ. ये हमारे लिए गर्व की बात है।

विक्स कफड्रॉप्स ने भारत के 142 करोड़ वॉइस चैंपियंस की शक्ति प्रदर्शित की युवराज सिंह के साथ अपना नया चीयर एंथम, विक्स कोहली इंडिया बोल पेश किया

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

भारत को खिच-खिच फ्री वॉइस देने की अपनी प्रतिबद्धता के लिए मशहूर भरोसेमंद ब्रांड, विक्स कफ ड्रॉप्स ने अपना नया चीयर एंथम #VicksKholIndiaBol पेश करने के लिए महान क्रिकेटर युवराज सिंह के साथ गठबंधन किया है। #VicksKholIndiaBol चीयर एंथम क्रिकेट के प्रति हमारे देश का असीम उत्साह प्रदर्शित करता है। इसका उद्देश्य इस क्रिकेट सीज़न में 142 करोड़ वॉइस चैम्पियंस को अपनी टीम का उत्साह बढ़ाने में समर्थ बनाना है। विक्स कफड्रॉप्स अपने प्रतिष्ठित अभियानों के लिए मशहूर है, जो प्रदर्शित करते हैं कि इस ब्रांड ने कैसे हमेशा भारतीयों को अपने जीवन के महत्वपूर्ण लम्हों में बिना किसी खिच-खिच के बोलने में समर्थ बनाया है। इस क्रिकेट सीज़न में विक्स कफ ड्रॉप्स क्रिकेट प्रशंसकों पर केंद्रित होकर एक नया म्यूज़िकल टेक पेश कर रहा है, और उन्हें अपनी टीम को प्रोत्साहित करने के लिए खिच-खिच फ्री वॉइस प्रदान कर रहा है। साहिल सेठी, कैटेगरी लीडर - पर्सनल हेल्थकेयर, पी एंड जी इंडिया ने कहा, इस क्रिकेट सीजन विक्स कफ ड्रॉप्स लाखों लोगों को खिच-खिच फ्री वॉइस देकर चीयर करने की प्रेरणा देने और पूरे जोश से अपनी टीम का उत्साह बढ़ाने में समर्थ बनाने के लिए युवराज सिंह के साथ गठबंधन में #VicksKholIndiaBol एंथम लॉन्च करके बहुत उत्साहित है। इस एंथम के बोल प्रदर्शित करते हैं कि वॉइसेज़ में किस प्रकार सबसे ज़ोर से चीयर करने की क्षमता होती है, चीयर्स किस प्रकार मैच का रुख़ बदल सकते हैं और देश के कोने-कोने से आए क्रिकेट प्रशंसकों का उत्साह कई गुना बढ़ा सकते हैं। कोई भी चीयर अनसुना न रह जाए, इसके लिए हमने देश के अनुमानित 6.3 करोड़ हियरिंग इंपेयर्ड लोग, जो इस खेल के लिए उतने ही उत्साहित हैं, के लिए इस एंथम का भारतीय साइन लैंग्वेज में एक दिलचस्प संस्करण बनाने के लिए 'इंडिया साइनिंग हैंड्स' के साथ साझेदारी की है। इस एंथम के साथ विक्स कफ ड्रॉप्स हमारे देश को परिभाषित करने वाली विविधता में एकता की ख़ुशी मना रहा है।

एनएमडीसी अधिकारियों ने कहा हिंदी भाषा सहज और सरल

पायनियर संवाददाता ➤ किरंदुल
www.dailypioneer.com

किरंदुल परियोजना में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2023 तक राजभाषा पखवाडा आयोजित किया गया।इस आलोक में संजय पाटील, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी परियोजना में भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं एनएमडीसी मुख्यालय के दिशा-निर्देशों के अनुरूप राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया।

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी 14 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस पर अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन पुणे में हुआ। मुख्य अतिथि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी भाषा की सरलता उसकी सामर्थ्य है और वह सभी भारतीय भाषाओं की सहोदर है। हमारी परियोजना में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2023 के बीच राजभाषा पखवाडे के दौरान हिंदी कार्यों को और अधिक करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसेकि हिंदी टंकण, क्विज, हिंदी निबंध हिंदी नारा (स्लोगन) लेखन, सामान्य ज्ञान इत्यादि का आयोजन किया गया।दिनांक 29 सितंबर 2023 को राजभाषा पखवाडा का समापन समारोह व पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित हुआ।मुख्य अतिथि पद्मनाभ नाईक मुख्य महाप्रबंधक व विशिष्ट अतिथि आर. राजाकुमार महाप्रबंधक (उत्पादन), एम. सुब्रमण्यम महाप्रबंधक (विद्युत), एस. के. कोचर,महाप्रबंधक (खनन),एम. प्रसाद, महाप्रबंधक (एमएंडएस), सी श्रवण कुमार, महाप्रबंधक (भू-विज्ञान),के वीर प्रकाश,महाप्रबंधक (सामग्री),एस गुहा, उप महाप्रबंधक (वित्त). ए. के. सिंह, सचिव, एमएमडब्ल्यू यूनियन व दामोदर नाग, संयुक्त सचिव, एसकेएमएस प्रतिनिधि सहित वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम में सर्वप्रथम मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया। मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों ने राजभाषा हिंदी पर अपने विचार व्यक्त किए करते हुए कहा कि हिंदी का प्रचार-प्रसार कंपनी एवं परियोजना में अविरल रूप से किया जा रहा है।स्वभाषा में अभिव्यक्ति बेहद प्रभावशाली होती है जिसके लिए हिंदी भाषा जैसा सुगम और सरल माध्यम नहीं हो सकता। स्वागत भाषण जी. वेलबथन, उप महाप्रबंधक (कार्मिक) ने किया जबकि यूनियन के पदाधिकारियों ने भी अपने विचार रखे।मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों ने पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन् न प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन संजय पाटील,सहा महाप्रबंधक (राजभाषा) ने किया एपी पाण्डव,आशुलिपिक,व वेदप्रकाश ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम योगदान दिया।

खोंड़ के ग्रामीणों ने निरीक्षण पर पहुंचे सहायक आयुक्त को घेरा

कन्या आश्रम के मनमानी और अड़ियल रवैए से परेशान होकर ग्रामीणों ने उठाया ये कदम

पायनियर संवाददाता ➤ सूरजपुर
www.dailypioneer.com

मामला जिले के सूरजपुर के अंतर्गत आने वाले ग्राम पंचायत खोड़ गांव स्थित आदिम जाति कल्याण विभाग के कन्या आश्रम का है जहां भ्रष्टाचार और अनियमितता एवं कन्या आश्रम अधीक्षक से त्रस्त जनता ने यह क़दम उठाया बताया जाता है कि ग्रामीणों के बार बार शिकायत के बाद निरीक्षण के लिए पहुचे विभाग के सहायक आयुक्त को ग्रामीणों के नाराजगी का सामना करना पड़ा, जहा नाराज़ ग्रामीणों ने सहायक आयुक्त को लगभग दो घंटे तक मौके से जानें नही दिया, वही बंधक बनाए जाने जैसा हालात बना रहा,, जानकारी के मुताबिक़ कन्या आश्रम के एक छात्रा को इलाज़ के अभाव में सिर में घाव बन जाने व देखभाल के अभाव के कारण समस्त ग्रामीण आश्रम अधीक्षक पर कार्यवाही करने की मांग कर रहे थे। वही निरीक्षण के लिए पहुंचे सहायक आयुक्त विश्वनाथ रेड्डी के द्वारा कार्यवाही का अश्वासन ना दिए जानें पर ग्रामीण आक्रोशित हो गए। वहीं ग्रामीणों के पुछे जाने पर सहायक आयुक्त ने कन्या आश्रम की व्यवस्था को उत्कृष्ट बताया जिससे वहां के ग्रामीण भड़क गए, तथा ग्रामीणों को यह कह डाला कि अभी पुलिस बुलाकर सभी को गिरफ्तार कराता हूं, इससे वहां उपस्थित ग्रामीणजन आक्रोशित हो गए और कहा कि जब तक सभी ग्रामीणों गिरफ्तार नहीं करवाएंगे उन्हें जाने नहीं दिया जायेगा। जिसकी जानकारी एसडीएम भैयाथान को मिलने के बाद, मौके पर पहुंचकर तीन दिनों मे जांच कर अधीक्षक के खिलाफ कार्यवाही का भरोसा दिलाया तब जाकर ग्रामिणों का आक्रोश शांत हुआ। क्या कहते हैं,,,तो वहीं छत्तीसगढ़ राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह से पुछे जाने पर कहा की मै बाहर था और अभी रास्ते में ही हूं, मुझे इस मामले की जानकारी नहीं है। वहीं जिले के सहायक आयुक्त विश्वनाथ रेड्डी से भी पायनियर अखबार ने उनका पक्ष लेना चाहा किन्तु उन्होंने ने फ ोन रिसीव नहीं किया।

साफ-सफाई के अभाव में छात्राओं के सिर में पड़े कीड़े

ग्रामीणों ने बताया कि अधिकारियों की खुली छूट मिलने के कारण आश्रम अधीक्षिका छात्राओं के साथ जमकर मनमानी कर रही है। ग्राम केशर निवासी एक छात्रा से अधक्षिका अपने शिशु की सेवा में रखी थी तथा उससे अपने बच्चे के गंदे व दुर्गंधित कपड़ों को साफ कराती थी। मनमानी से तंग छात्रा आश्रम छोड़कर अपने घर चल गई है। साफ-सफाई एवं देख-रेख के अभाव में 4 छात्राओं के सिर में गहरे घाव बन गए हैं। एक छात्रा के सिर के घाव से कीड़ा भी निकला है। जबकि अन्य छात्राओं के घाव गंभीर रूप ले रहे हैं। विभाग के ऐसे अधिकारियों व आश्रम अधीक्षिका के हाथों छात्राओं को छोड़कर उन्हें मनमानी करने की छूट नहीं दी जा सकती। मामले में दोषी अधिकारी-कर्मचारियों पर कार्रवाई नहीं हुई तो ग्रामीण उग्र आंदोलन करने से नहीं चुकेंगे।

रजत जयंती समारोह कार्यक्रम के उपलक्ष पर 25वीं वर्षगांठ का आयोजन

पायनियर संवाददाता ➤ मनेन्द्रगढ़
www.dailypioneer.com

शासकीय प्राथमिक विद्यालय दक्षिण पारा, ग्राम पंचायत बंजी, विकासखंड मनेंद्रगढ़, के रजत जयंती समारोह कार्यक्रम के उपलक्ष पर 25वीं वर्षगांठ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुरेंद्र जायसवाल, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष राजू केसरवानी, जागो सेवा संस्थान अध्यक्ष परमेश्वर सिंह , प्रदेश सचिव एन एस यू आई स्वप्निल सिन्हा,पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष ध्रुपद चौहान, पूर्व वि.खं. शिक्षा अधिकारी डी पी मिश्रा, प्राचार्य हायर सेकेंडरी स्कूल बुंदेली अयूब लाल की उपस्थिति में सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ महतारी एवं मां सरस्वती के छायाचित्र पर फूल माला एवं दीप प्रज्वलित कर राज गीत 'अरपा पैरी के धार' गा कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। ज्ञात हो की प्राथमिक विद्यालय दक्षिण पारा बंजी की स्थापन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के शासनकाल में आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में शिक्षा की व्यापकता हेतु 'शिक्षा गारंटी योजना' के तहत एक सितंबर 1998 को हुआ था। इस योजना में प्रत्येक 1 से 2 किलोमीटर के दायरे में बसे गांवों एवं मोहल्ले में शिक्षा से वंचित 20 से 25 बच्चों का चिन्हांकित करके नया शिक्षा गारंटी केंद्र खोलना था। प्रथम में नभाग सिंह ने इस केंद्र के गुरु के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया था। चूंकि अब सभी शिक्षा गारंटी केंद्र प्राथमिक विद्यालय के रूप में परिवर्तित हो चुके हैं। इस विद्यालय के पढ़े हुए बच्चे उच्च कक्षाओं में पहुंच कर अपना नाम रोशन किया है, जिसमें कई बच्चों के एकलव्य विद्यालय में चयन हुआ। और अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए आईआईटी एनआईटी बीएससी, एमएससी, तक अपनी पहुंच बनाया है, और कुछ अध्ययनरत हैं। इसका श्रेय यहां के शिक्षक नाभाग सिंह को जाता है। इस रजत जयंती कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों द्वारा दिया गया जिसमें प्राथमिक विद्यालय दक्षिण पर के बच्चे, कस्तूरबा बालिका आवासीय विद्यालय बंजी, माध्यमिक शाला बंजी, आश्रम शाला बंजी के बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। जिसे उपस्थित अतिथियों एवं ग्रामीण जनों ने भूरी भूरी प्रशंसा की। और शिक्षक नभाग सिंह एवं विद्यालय परिवार को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित किया। इस कार्यक्रम में कई शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

नौकरी और मुआवजे के मांग को लेकर एस ई सी एल खदान में ग्रामीणों सहित भारी संख्या में महिलाओं ने शुरू किया आंदोलन

पायनियर संवाददाता ➤ सूरजपुर
www.dailypioneer.com

एसईसीएल के आमगांव ओपन कास्ट परियोजना के लिए पटना गांव के किसानों की अधिग्रहित भूमि के बदले भूस्वामियों को नौकरी व मुआवजा की माँग को लेकर ग्रामीणों का विरोध देखने को मिला,,जहां ग्रामीणों ने खदान में कोयला उत्खनन व परिवहन रोक दिया। वहीँ खदान के गेट पर कांग्रेस के तेज तर्रार नेत्री राष्ट्रीय सचिव शशि सिंह के नेतृत्व में हजारों महिलाओं ने अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर एसईसीएल के ख़िलाफ़ जमकर नारेबाजी की, दरअसल आमगांव ओपन कास्ट परियोजना के लिए अधिग्रहित भूमि के बदले 464 लोगों को नौकरी दी जानी थी जहां कोल प्रबंधन के द्वारा अब तक 37 लोगों को नौकरी प्रदान की गई है, जहां ग्रामीणों का आरोप है कि एसईसीएल प्रबंधन की उदासीनता के कारण समस्त दस्तावेज पूर्ण किए जाने के बावजूद 427 किसानों को लंबे समय से नौकरी के लिए एसईसीएल के क्षेत्रीय कार्यालय चक्कर काटते नज़र आ रहे हैं, जहां ग्रामीण सहित भारी संख्या में महिलाओं ने अनिश्चितकालीन हड़ताल शुरू कर नौकरी और मुआवजे की मांग को लेकर अड़े हुए थे वहीं कोल परिवहन व उत्खनन ठप्प हो चुका है जिससे क्षति का अनुमान करोड़ों में लगाया जा रहा है।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है

विजय इंग्लिश मीडियम स्कूल ने स्वच्छता दीदियों को किया सम्मानित

पायनियर संवाददाता ➤ मनेन्द्रगढ़
www.dailypioneer.com

नगर के प्रतिष्ठित विद्यालय विजय इंग्लिश मीडियम हायर सेकेण्डरी स्कूल में स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत नगरपालिका मनेन्द्रगढ़ की दीदियों का सम्मान किया गया।

स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत विजय इंग्लिश मीडियम स्कूल में प्राचार्य इन्द्रा सेंगर व संस्था सचिव संजय सेंगर के निर्देशन में नगरपालिका मनेन्द्रगढ़ एवं संस्था में ही कार्यरत स्वच्छता कर्मियों को तिलक लगा कर एवं उपहार व मिठाई प्रदान करते हुए उनके महान कार्य के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्था की शिक्षिका शुभ्रा भट्टाचार्य ने कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है परन्तु तन और मन तब ही स्वस्थ रह सकता जब हमारा माहौल और परिवेश स्वच्छ हो और यह महान कार्य आप स्वच्छता कर्मियों-दीदियों के कारण ही संभव है। आप लोगों का योगदान अमूल्य है क्योंकि आप लोग ठंडी-गर्मी-बरसात की परवाह किये बगैर अपने कार्य में लगे रहते हैं ताकि हम लोग स्वच्छ परिवेश में रह सके। आप लोगों के उस योगदान को तो कभी नहीं भूलाया जा सकता जब कोरोना काल में आप लोग अपने प्राणों की परवाह किए बगैर हमारे मोहल्लों एवं नगरों की स्वच्छता हेतु अपने कार्य में लगे रहते थे। मैं संस्था प्राचार्य इन्द्रा सेंगर व संस्था सचिव और पूरे विद्यालय की ओर से आप सभी के महान कार्य के लिए आप लोगों की प्रसंशा करती हूँ। कार्यक्रम में आगे संस्था की शिक्षिका पूनम सोरेने के कहा कि आज के इस बढ़ती हुई आबादी के दौर में गंदगी और कचड़ों की कल्पना सहज ही की जा सकती है किन्तु आप स्वच्छता कर्मियों के महान कार्य के कारण ही हम सभी स्वच्छ माहौल व परिवेश में रह पा रहे हैं। इसके लिए आपलोगों के योगदान की जितनी प्रसंशा की जाये कम है।

एक्सिस बैंक ने लॉन्च किया 'निओ फॉर बिजनेस' एमएसएमई के लिए मोबाइल-फर्स्ट बिजनेस बैंकिंग

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

एक्सिस बैंक ने 'निओ फॉर बिजनेस' के लॉन्च की घोषणा की है। यह एक स्पेशल ट्रांजेक्शन बैंकिंग प्लेटफॉर्म है जो विशेष रूप से भारतीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए तैयार किया गया है। एमएसएमई की वास्तविक, वर्तमान और उभरती लेनदेन बैंकिंग आवश्यकताओं के लिए तैयार की गई यह अपनी तरह की पहली पेशकश है। भारत में 6.5 करोड़ से ज्यादा एमएसएमई है, सकल घरेलू उत्पाद में 30 प्रतिशत से अधिक योगदान के साथ एमएसएमई अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। अब एमएसएमई नकदी के बजाय डिजिटल भुगतान को तेजी से अपना रहे हैं, 28 प्रतिशत नकद लेनदेन की तुलना में 72 प्रतिशत भुगतान डिजिटल मोड में हो रहे हैं। डिजिटल होने के साथ इस क्षेत्र में और विकास की अपार संभावनाएं है और एक्सिस बैंक इसे एक बड़े अवसर के रूप में देख रहा है। एक्सिस बैंक ने एमएसएमई सेगमेंट में तेज गति देखी है, जिसका कि बैंक की तरक्की में भी बड़ा योगदान है। एमएसएमई की उभरती व्यावसायिक जरूरतों और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, एक्सिस बैंक का 'निओ फॉर बिजनेस' प्लेटफॉर्म बैंकिंग और बैंकिंग से परे सुविधाओं की एक विस्तृत श्रृंखला देता है

कार्यालय अधीक्षण अभियंता, लोक निर्माण विभाग, दुर्ग मण्डल, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

दुर्ग, दिनांक 20/09/2023

// ई-प्रोक्योरमेंट बेरोजगार इंजीनियर निविदा सूचना //
(प्रथम आमंत्रण)

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल की ओर से बेरोजगार स्नातक इंजीनियरों के लिए ऑनलाईन निविदायें प्रपत्र ''अअ'' में प्रतिशत दर पर निम्नलिखित कार्य हेतु दिनांक 10.10.2023 तक आमंत्रित की जाती है:-

निविदा आमंत्रण सू.क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (राशि लाख में)
01/दुर्ग (राज.)/2023	जिला राजनांदगांव वि.ख. डोंगरगांव के ग्राम कुतुलबोड उपस्वास्थ्य केवद्र भवन पहुंच मार्ग का निर्माण कार्य लं. 255 मीटर	45.24

टीप
1. उक्त एनआईटी बेरोजगार डिग्री इंजीनियम के लिये आमंत्रित है।
2. उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की समान्य शर्तें, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब portal एवं विभागीय वेबसाइट http://eproc.cgstate.gov.in से डाऊनलोड की जा सकती है।
3. पंजीकृत डाक द्वारा कार्यालय में भेजे जाने वाले लिफाफे के ऊपर एन.आई.टी. क्रमांक एवं कार्य का नाम अनिवार्य रूप से अंकित किया जायें।

अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग, दुर्ग मण्डल दुर्ग
दूरभाष - 0788-2210876

G-05794/4

जिला अस्पताल, सरकारी दफ्तरों की मांग को लेकर बंद रहा मानपुर, आज कलेक्टर ने बातचीत के लिए बुलाया

बड़ा आंदोलन खड़ा करने की तैयारी, 3 से अनिश्चितकालीन प्रदर्शन के पर्चे गांव-गांव बांट रहे

पायनियर संवाददाता ➤ राजनांदगांव/मानपुर
www.dailypioneer.com

आदिवासी बाहुल्य जिला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में बखेड़ा खड़ा हो गया है। शनिवार को मानपुर चमाचम बंद रहा। संघर्ष समिति ने यह बंद बुलाया था जिसको पूरा समर्थन मिला। सरकारी दफ्तरों की यहां स्थापना न होने को लेकर यह विरोध चल रहा है। अब अनश्चितकालिन प्रदर्शन और चुनाव के बहिष्कार के आवाज भी बुलंद हो रही है।

यहां के लोग शासन-प्रशासन की दफ्तरों के व्यवस्थापन की तैयारियों का विरोध कर रहे हैं। विधायकइंद्रशाह मंडावी को लेकर भी लोगों में तीव्र आक्रोश है। इधर, एमएमसी जिला प्रशासन ने रविवार को मोहला में प्रदर्शनकारियों को बातचीत के लिए बुलाया है। कलेक्टर मसलों पर सहमति का रास्ता ढूंढने का प्रयास कर रहे हैं।

सरकारी दफ्तरों की मांग करते हुए मानपुर ने बगावती सुर अख्तियार कर लिए हैं।पहले ही मानपुर पंचायत की ग्राम सभा में ग्रामीणों ने जिले से मानपुर का नाम पृथक किए जाने का प्रस्ताव पारित कर दिया है। इसके बाद शनिवार को बंद बुलाया गया। चौकन्नी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मानपुर पूरी तरह बंद रहा। दूसरी ओर संघर्ष समिति अब दूर-दराज के गांवों तक पहुंचकर समर्थन जुटा रहा है।

3 अक्टूबर को चक्काजाम के साथ अनिश्चितकालीन आंदोलन खड़ा करने लोगों को एकजुट किया जा रहा है। गांव गांव में पांपलेट बांटे जा रहे हैं। प्रदर्शनकारियों के लिए भोजन की भी व्यवस्था रखी गई है। दिन ब दिन यह आंदोलन और मजबूत हो रहा है। नए जिले के सेटअप में मानपुर में सरकारी दफ्तर न मिलने को लेकर गहरी नाराजगी लोगों में पनप गई है। यहां जिला अस्पताल, परिवहन कार्यालय, महिला एवं बाल विकास विभाग औररोजगार कार्यालय के संचालन की मांग की जा रही है। लंबे समय से जारी इस विवाद का अब तक कोई हल नहीं निकल पाया है।

घिरे हुए हैं विधायक, व्यापारी मित्र का हित आदिवासियों पर भारी

इस विवाद में विधायक व संसदीय सचिव इंद्रशाह मंडावी को लेकर जिले में काफी आक्रोश पनप रहा है। वे शुरु से ही इन मामलों में विवादों के केंद्र में बने हुए हैं। उन पर जिला कार्यालय के भूमि चयन, जमीन के अधिग्रहण और कई तरह से अपनी व्यवसायी मित्रों को लाभ पहुंचाने और गरीबों को पीछे धकेलने का आरोप लगता रहा है। जिला कार्यालय के लिए चयनित स्थल को लेकर तो काफी बखेड़ा भी खड़ा हुआ था और बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने इसे लेकर प्रदर्शन किया था। कहा जाता है कि, इस क्षेत्र में एक व्यापारी के इशारों पर ही विधायक निर्णयों में हस्तक्षेप कर उसे फायदा पहुंचा रहे हैं। मंडावी ने तो उन्हें आयोग में जगह भी दिलवाई है। यह फै क्टर उन्हें आदिवासी हितों के विरोधी के तौर पर सामने ला रहा है। यही नहीं क्षेत्र के विकास में पिछड़ते और निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार सहित अवैध उत्खनन के मामलों में भी मंडावी घिरे हुए हैं।

अब अपनी टिप्पणी पर शर्मिंदगी जताई

ऐसे ही शुक्रवार को विधायक इंद्रशाह मंडावी की निम्नस्तर की टिप्पणी को लेकर भी काफी आलोचना हुई। हालांकि उन्होंने शनिवार को इस मामले पर लिखित माफी मांग ली। वे अब इसपर शर्मिंदगी जता रहे हैं। गौरतलब है कि उन्होंने अपने विधानसभा क्षेत्र के बुकमरका इलाके में बन रहे रास्ते के संदर्भ में ग्रामीणों की मौजूदगी में मीडिया कर्मियों से बातचीत में यह बातें कही थी। उन्होंने कहा था कि - जो छापना है छाप दो... सुबह यही पेपर बच्चों के शौच साफ करने के काम में आता है। मीडिया को लेकर दिए गए शर्मनाक बयान से विवाद खड़ा हो गया था और पत्रकारों ने मौके पर ही अपनी नाराजगी व्यक्त कर दी थी। बाद में विधायक ने भी इस पर माफी मांग ली। लेकिन उन पर लग रहे लगातार आरोप और ग्रामीणों के विरोध की झुंझलाहट अब साफ नज़र आने लगी है।

आश्वासन पर अमल नहीं हुआ : संजीव शाह

इस पूरे मामले को लेकर मोहला-मानपुर विधानसभा से भाजपा के विधायक प्रत्याशी व जिला अध्यक्ष संजीव शाह ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि -मैं जनता के साथ हूं। जिले के गठन के दौरान ही मानपुर विखं के लोगों ने धरना दिया था। वे अपने मुख्यालय में अस्पताल और सरकारी कार्यालयों पर स्पष्ट चर्चा और लिखित नतीजा चाहते थे। विधायक ने उस दौरान नागरिक दल को आश्वस्त किया था लेकिन उन्होंने उस पर अमल नहीं किया। हालही में जिले की पहली वर्षगांठ में विधायक ने मोहला में अस्पताल का भूमिपूजन किया जिससे भी मानपुर के लोगों को लग रहा है कि वे छले गए हैं।

गंडई में हाईटेक सब्जी मंडी निर्माण के लिए मिला कायार्देश

सर्व सुविधायुक्त सब्जी मंडी की सौगात गंडई के लिए बड़ी उपलब्धि

पायनियर संवाददाता ➤ गंडईपंडरिया
www.dailypioneer.com

जिला कार्यालय में विगत 26 सितंबर को मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से गंडई में बनने वाले हाईटेक सब्जी मंडी के लिए वर्चुअल भूमिपूजन किया गया है. जिसमें कार्य की लागत 14 करोड़ 79 लाख 17 हजार रुपए प्रस्तावित है। प्रस्तावित प्रथम चरण में 11 करोड़ 40 लाख 82 हजार का कार्य वर्तमान में होना है। इस कार्य का जिम्मा मेसर्स आलोक बिल्डटेक प्राइवेट लिमिटेड दुर्ग को दिया गया है. जिसका संचालक आलोक शिवहरे है। बीते शुक्रवार को दोपहर 12 बजे कृषि विपणन बोर्ड दुर्ग के एसडीओ एवं उनकी पूरी टीम ने लेआउट दिए।

गौरतलब हो कि 3 जनवरी 2022 को मुख्यमंत्री का गंडई प्रवास हुआ था। जहां गंडई को सर्वसुविधायुक्त हाईटेक सब्जी मंडी देने की घोषणा की थी. हाईटेक सब्जी मंडी में कृषक सूचना केंद्र, ऑफिशियल भवन, मोटर सायकल स्टैंड, पार्किंग लैब, एटीएम की सुविधा सहित जन सुविधा के लिए बोरवेल्स, टॉयलेट, दो मुख्य गेट होगा, किसान सदन, विद्युत एवं सब स्टेशन बाउंड्रीवॉल, सीसी रोड, पहुंच मार्ग सीमेंट युक्त आरसीसी नाली, वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम सहित अन्य सुविधाए इस हाईटेक सब्जी मंडी में उपलब्ध होगी। ले आउट के दौरान एसडीओ पुष्पेंद्र चौहान, आर्किटेक्ट सुशील दशोरे, इंजीनियर मूलचंद साहू, कृषि उपज मंडी गंडई अध्यक्ष संजू सिंह चंदेल, वरिष्ठ कांग्रेसी एवं सदस्य शत्रुहन मन्नू चंदेल सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

तुमड़ीबोड में विकास कार्यों का भूमिपूजन व लोकार्पण

पायनियर संवाददाता ➤ डोंगरगांव नगर
www.dailypioneer.com

विधानसभा क्षेत्र के तुमड़ीबोड में 1 करोड़ 39 लाख के विकास कार्यों का भूमिपूजन व लोकार्पण विधायक छग राज्य ग्रामीण व पिछड़ावर्ग क्षेत्र विकास प्राधिकरण अध्यक्ष दलेश्वर साहू द्वारा किया गया। इस मौके पर विधायक ने कहा कि मुख्यमंत्री किसान हैं, और विधायक भी किसान है, जिससे क्षेत्र के किसान, मजदूर व श्रमिकों की उत्तरोत्तर प्रगति हुई है। छग की संस्कृति संरक्षण व संवर्धन हुआ। ग्राम पंचायत द्वारा आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि विधायक व छग राज्य ग पिछड़ावर्ग क्षेत्र विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष दलेश्वर साहू थे।अध्यक्षता जिला पंचायत सदस्य महेंद्र यादव ने की। विशेष अतिथि वरिष्ठ कांग्रेस नेता गुलाब वर्मा, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सदस्य क्रांति बंजारे, जनपद पंचायत अध्यक्ष टिकेश

साहू, जपंउपाध्यक्ष सुयश नाहटा, पूर्व जपंउपाध्यक्ष व जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष मदन साहू, पूर्व जिला पंचायत सदस्य सोनू राम साहू, जनपद सदस्य भुनेश्वरी साहू थे। सभा को जनपद अध्यक्ष टिकेश साहू, किसाननेता मदन साहू, जिला पंचायत सदस्य महेंद्र यादव ने भी संबोधित किया। उक्त अवसर पर तहसील साहू संघ संरक्षक अमरनाथ साहू, सरपँच टीकम पटेल, तहसील अध्यक्ष हेमंत साहू व उपसरपंच भूपेंद्र सोनवानी, पुरुषोतम साहू, सचिव एवेंद्र साहू सहित गणमान्यजन उपस्थित थे।

इन कार्यों का हुआ भूमिपूजन व लोकार्पण

विधायक द्वारा प्रयोगशाला भवन 7.63 लाख, कला मंच 6.93 लाख, पुस्तकालय 9 लाख, आदिवासी सामुदायिक भवन 10 लाख, यादव सामुदायिक भवन 4 लाख, एसएलडब्लू सेड 4.78 लाख, व्यावसायिक परिसर 2 दुकान 2.50 लाख, हॉट बाजार 46 लाख, स्वशक्ति परामर्श केंद्र जीर्णोद्धार 2.80 लाख का लोकार्पण हुआ। वहीं साहू समाज भवन 5 लाख, अटल समरसता भवन 19.39 लाख, प्रशिक्षण भवन बिहान समूह 10 लाख, पटेल सामुदायिक भवन 6.5 लाख के लिए भूमिपूजन हुआ।

भाजपा पार्षद दल ने मंत्री को याद दिलाई मांगे, ज्ञापन सौंपा

राजनांदगांव। नगरीय प्रशासन मंत्री शिवकुमार डहरिया के राजनांदगांव प्रवास के दौरान भाजपा पार्षद दल ने उन्हें नगर पालिक निगम में भ्रष्टाचारसहित अन्य मामलों को लेकर ज्ञापन सौंपा है। पार्षदों ने कहा कि -शहर की सड़क के लिए स्वीकृत राशियों को रोके रखा गया है जिसे तत्काल शुरु किए जाने की जरुरत है। उन्होंने मंत्री के सामने अपनी बात रखते हुए कहा कि -स्वीकृत कार्यों के कार्यादेश रोके रखे जाने पर भ्रष्टाचार का अंदेशा है। निगम में करोड़ों के कई टेंडर अब भी रुके हुए हैं। भाजपा पार्षद दल ने कहा कि ज्ञापन के माध्यम से हमने उन्हें शहर की बदहाल व्यवस्था से अवगत कराते हुए उनसे पूर्व में हुई चर्चा को याद दिलाया है। 7 बिंदुओं का ज्ञापन सौंपते हुए पार्षदों ने शहर की बुनियादी सुविधाओं, निगम कर्मियों के वेतन और पार्षद निधी जारी किए जाने के विषय पर भी अपनी बात रखी है। उन्होंने पूर्व में प्रति वार्ड हेतु 25 लाख रुपए की स्वीकृति प्रदाय किए जाने को लेकर सौंपे गए मांगपत्र पर स्वीकृति न दिए जाने पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि -मंत्री को राजनांदगांव के विकास की चिंता नहीं है।

महाराजपुर में बनेगा उप स्वास्थ्य केंद्र भवन, हुआ भूमिपूजन

पायनियर संवाददाता ➤ छुरिया
www.dailypioneer.com

छुरिया विकासखंड के ग्राम महाराजपुर में जनपद सदस्य व जिला कांग्रेस महामंत्री चुम्मन साहू ने उप स्वास्थ्य केंद्र भवन का भूमिपूजन किया।चुम्मन साहू ने अपना शुगर और ब्लड प्रेशर भी चेक करवाया। उन्होंने उपस्थित सभी ग्रामवासियों को बधाई देते हुए कहा प्रदेश सरकार की कुशल नेतृत्व में आज गांव गांव जो विकास हो रहा है वह मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की देन है। जिन्हें प्रदेश में किसान के बेटा के नाम से जाना जाता है। सरकार की जन कल्याणकारी योजना आज गांव गांव व शहरो में देखने को मिल रहा है। इस दौरान सरपंच ग्राम पंचायत महराजपुर थान सिंग कंवर,अध्यक्ष ग्राम विकास समिति महराजपुर विदेशी राम कंवर, बनवाली राम कंवर, दांवन कंवर, विकासखंड कार्यक्रम प्रबंधक छुरिया रोशन नंदेश्वर, अंजली यादव, कुमारी थानेश्वरी साहू एवं समस्त मितानिन एवं ग्रामवासी उपस्थित हुए।

कांग्रेस ने सौंपी शाहिद को राजनांदगांव लोकसभा की जिम्मेदारी

पायनियर संवाददाता ➤ राजनांदगांव
www.dailypioneer.com

छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री शाहिद भाई को राजनांदगांव लोकसभा का प्रभारी नियुक्त किया गया है।छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी की प्रभारी सुश्री शैलजा के निर्देश पर छत्तीसगढ़ सह प्रभारी डॉ चंदन यादव, सांसद सप्तगिरि उल्का, विजय जांगिड़ की सहमति से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने आगामी चुनाव को देखते हुए राजनांदगांव लोकसभा के अंतर्गत तीन जिलों जिसमे कवर्धा, पंडरिया, खैरागढ़ एवं मोहला मानपुर विधानसभा की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी है। साथ ही राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र के डोंगरगढ़, राजनंदगांव, डोंगरगांव, खुज्जी विधानसभा की जिम्मेदारी पूर्व सांसद पी आर खूंटे को प्रदान की गई है। शाहिद भाई लगातार दूसरी बार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री बने हैं। वही कोरबा जिला कांग्रेस संगठन के प्रभारी के रूप में बेहतर कार्य कर वर्तमान में बालोद जिला कांग्रेस प्रभारी की जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे हैं। शाहिद

भाई के नियुक्ति से संपूर्ण लोकसभा क्षेत्र के कांग्रेस कार्यकताओं में विशेष उत्साह का संचार हुआ है। उन्होंने इस जिम्मेदारी के लिए प्रदेश प्रभारी सैलजा, सह प्रभारी डा चंदन यादव सांसद सप्तगिरि उल्का, विजय जांगिड़,मुख्यमंत्री भूपेश बघेल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी महामंत्री मलकीत सिंह गेंदु के प्रति आभार व्यक्त किया है।

भागवत की टीम में 13 महामंत्री, 59 संयुक्त महामंत्री शामिल

पायनियर संवाददाता ➤ राजनांदगांव
www.dailypioneer.com

जिला कांग्रेस कमेटी राजनांदगांव ग्रामीण की कार्यकारिणी की घोषणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज जी के अनुमोदन पश्चात प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रभारी महामंत्री संगठन एवं प्रशासन मलकीत सिंह गैंदु ने सूची जारी की है। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता रूपेश दुबे ने बताया कि जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भागवत साहू के द्वारा प्रस्तावित कार्यकारिणी के नाम पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने अपनी मुहर लगा दी है।आने वाले चुनाव को देखते हुए जल्द कार्यकारिणी घोषित होने से नवनियुक्त पदाधिकारी सहित कार्यकताओं में खासा उत्साह देखा जा रहा है। कोषाध्यक्ष अंगेश्वर देशमुख, उपाध्यक्ष गुलाब वर्मा, मन्ना लाल यादव, गोवर्धन देशमुख,मोतीलाल साहू, पंकज बांधव, हर्षिता स्वामी, रमेश खंडेलवाल, अंजुम अल्वी,यशवंत तिवारी, प्रभा साहू को नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही 13 महामंत्री बनाए गए हैं इनमें महेंद्र यादव, चुम्मन साहू, दुर्गेश द्विवेदी, इकरामुद्दीन सोलंकी, पुष्पा वर्मा, अजय मारकंडे, बलीराम साहू,संध्या देशपांडे आशा मांडवी, रामदास चंद्रवंशी, रवि कुमार साहू, वीरेंद्र बोरकर, उर्मिला साहू शामिल हैं। मीडिया प्रवक्ता का दायित्व खिलेश्वर पाल,राहुल तिवारी, विष्णु सोनी को सौंपा गया है। संयुक्त महामंत्री की भूमिका में पुरन नेताम, विपिन यादव,तरुण सिन्हा, प्रकाश शर्मा, नरेश शुक्ला, कांति भंडारी, चमरा राम पटेल, हेमंत वैष्णव, विपिन गोस्वामी, मूलचंद जैन, रईस अहमद शकील, शिशुपाल भारती, राजू सिंह राजपूत, महेंद्र साहू, चंद्रेश वर्मा,ओम प्रकाश साहू, तुकज साहू,इंद्रजीत सिंह बिट्टू, संजय संचेती,नरेश उईके, हेमलता बंजारे,संध्या साहू, प्रमोद सिंह ठाकुर, चुम्मन साहू, केशव यादव,गिरीश साहू, मिथिलेश ठाकुर,भोज राम साहू, संजय श्रीवास्तव, गिरधर निषाद,राजेश साहू,धीरज मेश्राम,राम साहू, इंद्रपाल सिंह राजा, विजय शर्मा, प्रवीण पारख,कमलेश वर्मा,भारत भूषण मेश्राम, महेश्वर साहू, जैश डाकलिया, अनिल मेश्राम, रज्जू जान, नेतराम साहू,राजकुमार साहू,हुकुम श्रीवास, अशफाक तंवर, टीकम साहू, रोहित सोनकर, गिरधारी साहू, प्रमोद वैष्णव, आबिद खान, जीवन साहू, कार्तिक नंदेश्वर, देवेंद्र दुबे, अमीन खान, प्रीति भेलेस, कली राम चंद्रवंशी, योगेंद्र वैष्णव, लालचंद साहूशामिल किए गए हैं। जिला संगठन में सचिवके पद पर नरेंद्र देवांगन, बबलू कसार,महेंद्र वैष्णव, मुस्ताक खान, विक्की पटेल, किशन वैष्णव, ओंकार साहू,लीलू दास खरे, डोमार साहू, उत्तम ठाकुर, मीना साहू,संगीता साहू,सेवक वर्मा,शेख निजामुद्दीन, कामता प्रसाद, सुरेश सहारे, नवीन लूनिया, विमल अग्रवाल, ओम प्रकाश साहू, परमानंद साहू,वीणा चंद्रवंशी, चमरू श्रीवास, एकनाथ सिन्हा, हुलासी ढीमर, सूरज साहू, कामता प्रसाद, दामोदर बागडे, महेश दिवाकर,रवि बाघमरे, ठाकुर राम देवांगन, हेमलता बंजारे, अजय अग्रवाल, प्रकाश महानदी,देवारू मलेकर, राजकुमार मांडले, राहुल वैष्णव,जितेंद्र देवांगन, लेख चंद वर्मा, लक्ष्मी सांखला, शैलेंद्र सिन्हा,प्रतिमा साहू, गौतम वर्मा,घनश्याम साहू, संतोष सिन्हा,ठाकुर राम साहू, गणेश सिन्हा, हेमंत साहू,प्रकाश ठाकुर,दिलीप चंद्राकर, रवि साहू, जागेश्वर देवांगन, चंद्रशेखर मातेकर,महेश्वर वर्मा, तेजस्वी वर्मा, सोमनाथ निषाद, राकेश साहू,मुकेश सहारे, गौतम सेन,महेश सेन,शकील कुरेशी,चंद्रशेखर सोनी, शरद चंद्राकर, ऋषि शर्मा, राहुल यादव,अगनू साहू, प्रियंक जैन, गिरधारी सेन, मनोहर कंडरा, पन्ना साहू, दिलीप कुमार साहू, गोपाल टावरी,गजेंद्र साहू आदि शामिल हैं।

क्विक न्यूज

ओमप्रकाश साहू बनाये गए संयुक्त महामंत्री

राजनांदगांव। जिला कांग्रेस कमेटी राजनांदगांव ग्रामीण की कार्यकारिणी की घोषणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज के अनुमोदन पश्चात प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रभारी महामंत्री (संगठन प्रशासन) मलकीत सिंह गैंदु ने सूची जारी की है। जिला कांग्रेस कमेटी ग्रामीण राजनांदगांव के अध्यक्ष भागवत साहू के द्वारा जिला कांग्रेस कमेटी की प्रस्तावित कार्यकारिणी के नाम पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने अपनी मुहर लगा दी है, जिसमें जनपद सभापति ओमप्रकाश साहू को संयुक्त महामंत्री नियुक्ति किया गया है। नियुक्ति पर ओमप्रकाश साहू ने संगठन के शीर्ष नेतृत्व व जिलाध्यक्ष भागवत साहू, विधायक भुनेश्वर बघेल का आभार व्यक्त करते हुवे कहा कि संगठन ने जो जवाबदारी दी है, उसे पूरी निष्ठा से करेंगे नियुक्ति पर क्षेत्रवासियों ने बधाई व शुभकामनाएं दिए।

कांग्रेस महिलाओं को धोखा दिया, मोदी ने मजबूत निर्णय लिया : पारख

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़ दौरे पर आए कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे के महिला आरक्षण के संबंध में दिए गए बयान पर भारतीय जनता पार्टी ने आपत्ति जताई है। भाजपा के वरिष्ठ नेता खूबचंद पारख ने कहा कि कांग्रेस ने आजादी के बाद से अब तक महिलाओं को धोखा देने के अलावा कुछ नहीं किया। 30 साल से महिला आरक्षण बिल कांग्रेस की वजह से लटका रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में यह कदम उठाया है और इस पर भी कांग्रेस भ्रम फै लाने का काम कर रही है। कांग्रेस ने राज्यसभा में जो महिला आरक्षण बिल पारित कराया था, वह किसी काम का नहीं था। मोदी ने संसद के दोनों सदनों में जो महिला आरक्षण विधेयक पारित कराया है, वह स्वयं में संपूर्ण है। सुनिश्चित किया गया है कि देश की महिलाओं को उनका हक मिले। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे महिला आरक्षण को चुनावी जुमला बता रहे हैं, वह भूल रहे हैं कि केंद्र में कांग्रेस की लटकाने और भटकाने वाली सरकार नहीं है। यह निर्णय मोदी की मजबूत सरकार ने लिया है। जिसने धारा 370 जैसे कानूनों को समाप्त किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा प्रारंभ से ही महिला आरक्षण की समर्थक रही है। जबकि मनमोहन सरकार की सहयोगी कई पार्टियां इसका लगातार विरोध करती रही। उनके दबाव में की आड़ में कांग्रेस पार्टी महिला आरक्षण विधेयक को लटकती रही। अब वही विरोध करने वाली पार्टियां न केवल मोदी सरकार के प्रस्ताव को मजबूरी में समर्थ किया, बल्कि अभी भी आरक्षण के नाम पर उलझने की कोशिश कर रही है। देश की माता-बहनें सब देख रही हैं, समय आने पर अपना जवाब देंगी।

भाजपा परिवर्तन यात्रा रही नाकाम, भरोसा यात्रा को मिलेगा जनता का समर्थन

राजनांदगांव। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर आगामी 2 अक्टूबर से शुरू हो रहे कांग्रेस के भरोसा यात्रा की तैयारी को लेकर लोकसभा प्रभारी पूर्व सांसद पीआर खूंटे ने शनिवार को स्थानीय साहू भवन में लंबी बैठक की। जिलेभर के कार्यकताओं और विधायकों के साथ बैठक करते प्रभारी ने कहा कि भरोसा का यात्रा को जनता का समर्थन मिलना तय है। उन्होंने भाजपा के परिवर्तन यात्रा को नाकाम करार देते कहा कि जनता ने परिवर्तन यात्रा को नकार दिया है। इससे यह साबित होता है कि कांग्रेस सरकार के प्रति जनसमर्थन बरकरार है। उन्होंने कहा कि भरोसा यात्रा का स्तर काफी ऊंचा है, इसलिए जनता के बीच जाकर सभी सरकार की उपलब्धियों का जमकर प्रचार-प्रसार करे। स्थानीय कांग्रेस भवन में प्रभारी का पदाधिकारियों और वरिष्ठ नेताओं ने स्वागत किया। इस दौरान डोंगरगढ़ विधायक भुनेश्वर बघेल, शहर कांग्रेस अध्यक्ष कुलबीर छाबड़ा, शाहिद भाई, पूर्व महापौर नरेश डाकलिया, सुदेश देशमुख, निखिल द्विवेदी, श्रीकिशन खंडेलवाल, आफताब आलम, अमित चंद्रवंशी, सूर्यकांत जैन, धनेश पाटिला, मेहुल मारू, मन्ना यादव, शहर महिला कांग्रेस अध्यक्ष माया शर्मा, शकील रिजवी, रूपेश दुबे समेत अन्य लोग उपस्थित थे।

माँ बम्लेश्वरी महिला स्व सहायता समूह खैरा को मिला है काम

गोदाम में डंप पोषण आहार अब तक वहीं पड़ा, विभाग ने आंगनबाड़ी को नहीं सौंपा

पायनियर संवाददाता ➤ राजनांदगांव
www.dailypioneer.com

आंगनबाड़ी केंद्रों को तक रेडी टू इट पहुंचने के बजाय रास्ते मे दूसरी जगह खपाने के मामले का खुलासा होने के बाद भी अब तक महिला बाल विकास विभाग ने कोई कार्रवाई नहीं की है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के पति के सुने गोदाम में पोषण आहार खाली करने के मामले में हल्ला मचने के बाद ग्रामीणों ने विभाग के परियोजना अधिकारी को सूचित किया। परन्तु अब तक गोदाम में डंप पोषण आहार को अपने कब्जे में लेकर आंगनबाड़ी केंद्र के सुपुर्द नहीं किया गया है। जिसके चलते निर्धारित समय में पात्र हितग्राहियों को पोषण आहार का वितरण नहीं हो पा रहा है। पूरा मामला महिला बाल विकास विभाग परियोजना कार्यालय घुमका के अंतर्गत ग्राम भालुकोंहा के आंगनबाड़ी में भेजे जाने वाले पोषण आहार का है। उक्त पोषण आहार को केन्द्रों तक पहुंचाने का टेंडर माँ बम्लेश्वरी महिला स्व सहायता समूह खैरा को दिया गया है। जानकारी के अनुसार 6 माह से 5 साल तक के बच्चों, गर्भवती महिलाओं, किशोरी बालिकाओं और कुपोषित बच्चों को प्रत्येक सप्ताह एक पैकेट पोषण आहार दिये जाने का प्रावधान है। लेकिन वितरण के जिम्मेदार महिला समूह और कार्यकताओं की मिलीभगत से पूरी योजना पटरी से उतर जाने की खबर है। गौरतलब है कि महिला बाल विकास विभाग परियोजना कार्यालय घुमका को 6 सेक्टर में बांटा गया और 156 आंगनबाड़ी संचालित है। प्रत्येक सेक्टर के आंगनबाड़ियों में पोषण

आहार पहुंचाने के लिए महिला समूहों को टेंडर दिया गया है और सुपरवाइजरों को तमाम योजनाओं की निगरानी का जिम्मेदारी दिये जाने के बाद भी इतनी महत्वपूर्ण योजना में अनियमितता की शिकायतों को लेकर विभाग में कोई हरकत नही है।

परियोजना अधिकारी विमला शर्मा ने लगातार अवकाश का कारण बताकर अपना पल्ला झाड़ लिया है और स्पष्ट जानकारी देने से बचने की कोशिश कर रही हैं।खबरों के अनुसार घुमका क्षेत्र के भालुकोंहा में भेजे गए रेडी टू इट के पैकेट कार्यकर्ता के पति के बंद पड़े गोदाम में बुधवार शाम को खाली किये जाने के बाद बवाल मच गया है। काफी मात्रा में पोषण आहार के सरकारी पैकेट को चुपके से उक्त गोदाम में खाली किया गया है। जबकि गोदाम काफी दिनों से बंद बताया जा रहा है।

लंबे समय से डंप होने का अंदेशा

आशंका जताई जा रही है कि काफी दिनों से उक्त गोदाम में पोषण आहार के पैकेट डंप हो रहें हैं और विभाग को खबर नहीं है। सूत्रों के मुताबिक गांव में जरूरतमंद बच्चों को फर्जी तरीके से वितरण किये जाने का रिकॉर्ड तैयार कर शासन को चूना लगाया जा रहा है। पोषण आहार वितरण में गड़बड़ी की लगातार शिकायतों की खबर मिल रही है और इस तरह की गड़बड़ियों के बाद विभाग की मॉनिटरिंग की जमीनी हकीकत की पोल खुलने के बाद महिला बाल विकास विभाग के जिम्मेदार अफसरों को अब जवाब देना मुश्किल हो गया है। मौके पर पहुंचे कुछ ग्रामीणों ने पोषण आहार पैकेट को चोरी छुपे बंद गोदाम में डंप करते देख महिला बाल विकास विभाग के परियोजना कार्यालय में मोबाइल से सूचना दिया। बावजूद इसके कोई भी जिम्मेदार अधिकारी ने वस्तुस्थिति की जानकारी लेना जरूरी नहीं समझा जिससे ग्रामीणों का आरोप है कि रेडी टू इट पैकेट की हेराफे री में विभाग के जिम्मेदारों की मिलीभगत हो सकता है ज्ञात हो कि पूर्व में कई गम्भीर शिकायतो को लेकर सरकार ने रेडी इट पैकेट तैयार करने का पूरा काम सरकारी नियंत्रण में ले लिया है इसके बाद अब वितरण में गड़बड़ियो की शिकायत मिलने के बाद कुपोषण मुक्ति के लिए चलाये जा रहे अभियान की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो रहें है।

माता कौशल्या के राम, हमर भांचा राम

छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश की सीमा पर मवई नदी के किनारे सीतामढ़ी-हरचौका में राम वन गमन पर्यटन परिपथ के अंतर्गत 07 करोड़ 45 लाख रूपए की लागत से राम वाटिका एवं अधोसंरचना विकास के कार्य कराए गए हैं। यहां भगवान श्रीराम की विशाल प्रतिमा, रामायण व्याख्या केन्द्र, कैफेटेरिया, सियाराम कुटीर, पर्यटक सूचना केन्द्र, नदी तट एवं अधोसंरचना विकास कार्यों का लोकार्पण किया गया। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि भगवान श्रीराम के आशीर्वाद से छत्तीसगढ़ में तेजी से बदलाव हो रहा है। भगवान श्रीराम हमारी प्रेरणा रहे हैं। उनके आदर्शों पर चलने के लिए उनकी स्मृतियों को सहेजने के लिए हम श्रीराम वनगमन पर्यटन परिपथ का विकास कर रहे हैं। हमने चंदखुरी में माता कौशल्या मंदिर के परिसर का विकास किया है। यह दुनिया में एकमात्र माता कौशल्या का मंदिर है। शिवरीनारायण, राजिम, रामगढ़, सिहावा में हम भगवान श्रीराम से जुड़े पुण्यस्थलों का लोकार्पण कर चुके हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम लोग लगातार छत्तीसगढ़ी संस्कृति को सहेजने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। राष्ट्रीय आदिवासी महोत्सव के माध्यम से आदिवासी संस्कृति को राष्ट्रीय फलक में दिखाने का प्रयास किया। राष्ट्रीय रामायण महोत्सव के माध्यम से श्रीराम से जुड़े आदर्शों की प्रस्तुति हुई। हमारी बोली भाषा को सहेजने का कार्य हुआ। बोरे बासी जैसी हमारी खाद्य परंपरा फिर से स्थापित हुई। अब तो अफसर भी चाव से बोरे बासी खाते हैं

चंद्रखुरी

चंद्रखुरी मंदिर

भगवान राम ननिहाल के रूप में विख्यात चंदखुरी छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से लगभग 27 किमी दूर आरंग तहसील में है। यहां उन्होंने अपने बचपन के अधिकांश समय व्यतीत किए थे। यहीं जलसेन नामक तालाब के बीच में पूरे भारत वर्ष में एकमात्र और दुर्लभ माता कौशल्या का मंदिर है। साथ ही यहां माता कौशल्या और राम जी का प्राचीन मंदिर है। यहां प्राचीन शिवमंदिर भी है। चंदखुरी में ही लंकाधिपति राजा रावण के राज वैद्य सुषेण समाधि स्थल है।

जगदलपुर

तीरथगढ़ जलप्रपात

चारों दिशाओं से घने वनों और पहाड़ों से घिरे बस्तर जिला मुख्यालय जगदलपुर क्षेत्र से भगवान राम ने वनगमन किया था। यहां से चित्रकोट का मार्ग प्रशस्त होता है। शोध के अनुसार राम जी इसी रास्ते से होकर भद्राचलम (आंध्रप्रदेश) की ओर गमन किए थे। चित्रकोट और तीरथगढ़ जलप्रपात के समीप कुटी बनाकर राम ने अपनी पत्नी सीता व छोटे भ्राता लक्ष्मण के साथ कुछ वर्ष व्यतीत किए थे। चित्रकोट राम-सीता की लीलास्थली के रूप में जनश्रुत है।

सीतामढ़ी हर चौका

सीतामढ़ी हर चौका

छत्तीसगढ़ सरकार भगवान राम के वनवास काल के प्रथम पड़ाव कोरिया जिले में स्थित सीतामढ़ी हरचौका का विकास कर रही है। नदी किनारे अवस्थित अनेक गुफाओं में 17 कक्ष हैं, जो सीता की रसोई के नाम से भी विख्यात है। वनवास के दौरान अपना आरंभिक समय प्रभु श्रीराम ने यहीं बिताया और माता सीता और भ्राता लक्ष्मण ने उनका साथ निभाया।

छत्तीसगढ़ के इन स्थानों पर पड़े थे प्रभु श्रीराम के चरण

रामाराम

चिटमिटिन अम्मा देवी मंदिर

रामाराम सुकमा जिला मुख्यालय से मात्र 8 किमी दूर स्थित है। मान्यता है कि यहां भगवान राम ने अपने वनवास काल में दक्षिण दिशा की ओर गमन के दौरान रामाराम पहुंचे थे। यहां चिटमिटिन अम्मा देवी का प्राचीन मंदिर है। किंवदंती के अनुसार राम जी ने यहां भू-देवी की आराधना की थी। रामाराम में प्रतिवर्ष फरवरी माह माह में भव्य मेले का आयोजन होता है। बस्तर के इतिहास के अनुसार 608 वर्षों से यहां मेले का आयोजन हो रहा है।

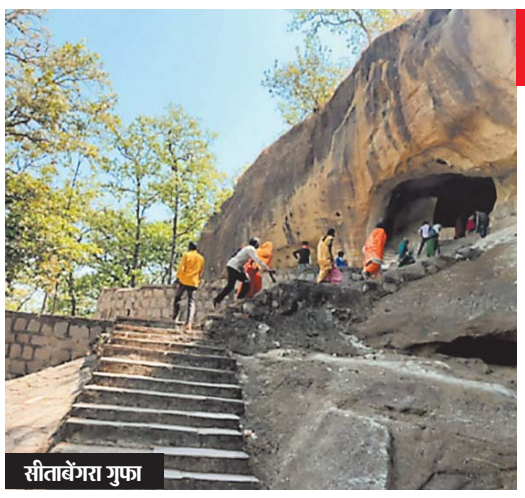
सीताबेंगरा गुफा

रामगढ़ की पहाड़ी

सरगुजा जिले में स्थित रामगढ़ की पहाड़ी में तीन कक्षों वाली सीताबेंगरा गुफा है। वनवास के दौरान राम ने इसे सीता कक्ष कहा था। ऐसी मान्यता है कि यहां स्थित गुफाओं में रामजी की महर्षि विश्रवा से भेंट हुई थी। यह भी जन आस्था है कि रामगढ़ की एक गुफा में राम के पदचिह्न मौजूद हैं। विद्वानों के अनुसार यह भारत की सबसे पुरानी नाट्यशाला मानी जाती है कहते हैं कि कवि कालिदास ने अपने कालजयी काव्य 'मेघदूतम्' की रचना यहीं की थी।

श्रृंगी ऋषि आश्रम

सिहावा

ऋषि-मुनियों की तपस्थली सिहावा धमतरी जिले में है। यहां की विभिन्न पहाड़ियों में श्रृंगी ऋषि, कंक ऋषि, गौतम ऋषि, शरभंग ऋषि, अंगिरा ऋषि, अगस्त्य ऋषि, मुचकुंद ऋषि आदि के आश्रम हैं। कहा जाता है कि भगवान राम ने इन आश्रमों रहकर ऋषि-मुनियों से धर्म की शिक्षा प्राप्त की थी। ऐसी किंवदंती है कि श्रृंगी ऋषि द्वारा पुत्रयेष्ठि यज्ञ करने के फलस्वरूप माता कौशल्या ने पुत्र राम को जन्म दिया था।

शिवरीनारायण

शिवरी नारायण मंदिर

जोंक, शिवनाथ और महानदी के संगम के लिए विख्यात यह प्राचीन नगरी जांजगीर-चांपा जिले के अंतर्गत आती है। जहां भगवान श्रीराम ने शबरी के जूठे बेर खाये थे। यहां नर-नारायण और शबरी मंदिर है। मंदिर के समीप बरगद का एक ऐसा वृक्ष है जिसके पत्ते दोने के आकार के हैं। शबरी का मंदिर पुरुषोत्तम तीर्थ के रूप में विख्यात है। माघी पूर्णिमा के समय शिवरीनारायण में मेला लगता है, जो छग का सबसे बड़ा मेला है।

तुरतुरिया

तुरतुरिया आश्रम

यह जगह बलौदाबाजार-भाटापारा जिले में है। किवंदती के अनुसार यही बालुकिनी पर्वत के समीप आदिकवि वाल्मीकि का आश्रम था और यही राम-सीता के पुत्रों लव व कुश का जन्म हुआ था। यहीं पर राम जी ने महर्षि वाल्मीकि से भेंट की थी। पास ही चट्टानों के बीच से बलभद्री नाले का पानी प्रभावित होता है। जहां से तुर-तुर की ध्वनि निकलती है। इसी से इस स्थल का नाम तुरतुरिया पड़ा है।

राजिम

कुलेश्वर महादेव मंदिर

इस प्राचीन नगरी को छत्तीसगढ़ का प्रयोग कहा जाता है, जहां सोंढूर, पैरी और महानदी का संगम है। यह गरियाबंद जिले के अंतर्गत आता है। माना जाता है कि वनवास के दौरान भगवान राम ने यहां अपने कुलदेवता महादेव की पूजा-अर्चना की थी। इसीलिए यहां कुलेश्वर महादेव का मंदिर है। यहां स्थित लोमश ऋषि आश्रम में राम ने कुछ समय व्यतीत किए थे। यहां भी सीता वाटिका है और भगवान राजीवलोचन का प्रसिद्ध मंदिर है। यहां प्रतिवर्ष आयोजित मेला का आयोजन किया जाता है।

IF Samvad- 38713/1

पायनियर हलचल...

मध्यप्रदेश में भाजपा, छत्तीसगढ़ में संकट

2023 का चुनावी संग्राम दिन-प्रतिदिन रोचक होते जा रहा है। मध्यप्रदेश में आखिरी-आखिरी भाजपा फिर सत्ता के नजदीक दिख रही है। ठीक इसी तरह छत्तीसगढ़ में कांग्रेस बढ़त बनाए हुए है। पर यह बढ़त कैसी है, और कितनी है, इस पर मंथन की अत्यंत आवश्यकता है। अगर मध्यप्रदेश में भाजपा सरकार की वापसी होती है, तो छत्तीसगढ़ में संकट के बादल छाये रहेंगे। 2018 से दोनों राज्यों के राजनीतिक सफर को देखें तो बहुत सी राजनीतिक गतिविधियां फिर दोहराने की प्रबल सम्भावना दिख रही है। दरअसल में 2018 के विधानसभा चुनाव परिणाम में मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ दोनों ही राज्यों में कांग्रेस को बहुमत मिली। अंतर यह था कि मध्यप्रदेश में हार-जीत का फासला नजदीकी था, तो वहीं छत्तीसगढ़ में कांग्रेस को रिकार्ड बहुमत मिली। मध्यप्रदेश में जीत का फासला नजदीकी होने की वजह से कमलनाथ और कांग्रेस 5 साल तक सरकार नहीं चला सके। भाजपा जोड़-तोड़ कर मध्यावधि में फिर सत्ता में वापस हो गई। अब 2023 में भी मध्यप्रदेश में फिर मुकाबला काफी नजदीकी होने के आसार है, हां यह बात अलग है कि जिस तरह छत्तीसगढ़ में कांग्रेस 20 है, ठीक उसी तरह मध्यप्रदेश में भी भाजपा 20 बताई जा रही है। अभी तक के सर्वे रिपोर्टों की बात करें तो छत्तीसगढ़ में भाजपा 37 से 41 सीट पर जीत हासिल करते बताई जा रही है। यदि वास्तव में ऐसा हुआ तो छत्तीसगढ़ में राजनीतिक संकट बना रहेगा।

कांग्रेसी विधायकों की गिरफ्तारी का राज ?

कहते हैं कि आधा दर्जन से अधिक कांग्रेसी विधायक ईडी और आईटी के राडार पर हैं, जिसमें कुछ मंत्रियों के नाम भी शामिल हैं। उनमें से दो पर कभी भी शिकंजा कसा जा सकता है। दोनों कांग्रेसी विधायकों को आदालत द्वारा जमानत लेने का फरमान सुनाया जा चुका है। यदि वह जमानत नहीं लेते हैं तो उनकी कभी भी गिरफ्तारी हो सकती है। दूसरी ओर राजनीतिक जानकारों का मानना है कि ईडी किसी भी कांग्रेसी विधायक या नेता को विधानसभा चुनाव परिणाम तक गिरफ्तार नहीं करेगी, सिर्फ उनके उपर कार्रवाई का कोरम पूरा करके रखेगी। इसके पीछे तर्क यह है कि यदि विधानसभा चुनाव परिणाम काफी नजदीकी रहे, तब यह विधायक गेम चेन्जर साबित होंगे, ठीक मध्यप्रदेश की तरह। खैर इसमें कितनी सच्चाई है यह तो आने वाले दिनों में ही स्पष्ट हो सकेगा। लेकिन ईडी की कार्रवाई जिस तरह से धीमी हुई है, इससे राजनीतिक आशंका पर विराम नहीं लगाया जा सकता।

पीएससी घोटाला के बाद युवा मतदाता किस ओर?

छत्तीसगढ़ में कथित पीएससी घोटाले ने कोहराम मचा रखा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बिलासपुर की सभा में एक बार फिर पीएससी घोटाले का राग अलापा, मोदी ने साफ तौर पर कहा यदि राज्य में भाजपा की सरकार बनी तो पीएससी मामले की जांच होगी। ज्ञात हो राज्य में किसानों के बाद युवा मतदाताओं की खासी संख्या है। पीएससी में हुई धांधली के बाद युवा मतदाता कांग्रेस से बिदकते दिख रहे। गांव-शहर, गरीब-अमीर सबका सपना होता है कि उनके बच्चे पढ़ लिखकर कुछ अच्छा करें, बेहतर सर्विस पर जाएं। लेकिन चुनावी साल में पीएससी परिणाम ने इन सभी वर्ग के सपनों को चकनाचूर कर दिया है। जिसको लेकर युवा वर्ग कांग्रेस सरकार से बिदक चुके हैं। पीएससी मामले में हाईकोर्ट ने फिलहाल यथास्थिति बनाए रखने का निर्देश दिया है, लेकिन कोर्ट ने यह भी तर्क दिया कि एक ही परिवार के सभी सदस्यों का चयन होना महज एक संयोग नहीं हो सकता। कोर्ट द्वारा रोक लगाने के बाद भाजपा ने इसे बड़ा मुद्दा बना दिया है। युवा मतदाताओं की संख्या को देखते हुए भाजपा इस मुद्दे को हाथ से नहीं जाने देना चाह रही। अब देखना यह है कि यहां का युवा कौन सी पार्टी की ओर रुख करता है।

छत्तीसगढ़ के भाजपा नेताओं पर भरोसे का संकट

पिछले 15 साल तक सत्ता की मलाई खाने वाले छत्तीसगढ़ के भाजपाई नेता सोच रहे हैं कि 2023 में छत्तीसगढ़ की जनता तस्तरी में उन्हें सत्ता परोसकर दे देगी। शायद यही कारण है कि यहां के ज्यादातर भाजपा नेता पावरलेस हैं। हर छोटे से बड़े नेता में महज 5 साल में ही हतासा का भाव आ चुका है। इनके हतासा के कारण ही केन्द्रीय नेतृत्व का इन नेताओं पर भरोसा नहीं रहा। बड़े -नेताओं की बात छोड़ दें वह तो पूरे तरह से हासिए पर जा चुके हैं। भाजपा का संचार विभाग भी धधकते दिख रहा। सुभाष राव, रसिक परमार, अमित चिमनानी, केदार गुप्ता जैसे अन्य विंग के नेता महज शो-पीस बन चुके हैं। आलम यह है कि छत्तीसगढ़ राज्य में प्रचार-प्रसार के लिए उत्तरप्रदेश के प्रयागराज से एक नेता की भाजपा ने यहां ड्यूटी लगाई है।

13 में सन्नाटा

विधानसभा चुनाव के लिए इसी माह के शुरुआती सप्ताह में विगुल बज सकता है। लेकिन भाजपा में सन्नाटा पसरा हुआ है। भाजपा के 13 में से कई विधायकों को समझ ही नहीं आ रहा कि क्या करें? किसके पास जाएं। इन 13 में से कईयों की पूछ परख न के बराबर हो गई है। इनके राष्ट्रीय नेता इनको पूछ नहीं रहे। 2018 में किसी तरह से यह अपनी सीट बचाने में कामयाब हुए, 2023 में क्या होगा? इसको लेकर सन्नाटा है। दरअसल में भाजपा के 13 विधायकों में भी कईयों की स्थिति बहुत ही खराब है। 2018 की बात करें तो पूर्व मंत्री अजय चन्द्राकर किन परिस्थितियों में चुनाव जीते हैं, वह किसी से छुपा नहीं है। 2018 में कुरुद विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस की ओर से नीलम चन्द्राकर का नाम लगभग तय था, बाद में लक्ष्मीकांत साहू को कांग्रेस ने टिकट दे दिया। नतीजन कांग्रेस तीसरे स्थान पर रही, निर्दलीय नीलम दूसरे स्थान पर रहे। अजय चन्द्राकर का समीकरण फिट बैठा वह त्रिकोणीय मुकाबले में तकरीबन 12 हजार मतों से चुनाव जीतने में कामयाब हुए। लेकिन इस बार कांग्रेस और शैलजा इन सभी सीटों पर निगरानी बनाये हुए हैं। वहीं दूसरी ओर भाटापारा से शिवरतन शर्मा त्रिकोणीय मुकाबले में जीत हासिल करने में कामयाब हुए थे। भाटापारा में भी मुकाबला त्रिकोणीय रहा चैतराम साहू छजकां से मैदान में रहे उन्हें तकरीबन 46 हजार मत मिले, कांग्रेस प्रत्यासी को 51490 मत मिले थे। इस बार भाटापारा में भी शिवरतन के लिए संकट की स्थिति बनी हुई है। वही हाल मस्तूरी विधानसभा का है, यहां पर डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी और बसपा के बीच मुकाबला रहा कांग्रेस तीसरे स्थान पर रही, नतीजन डॉ. बांधी चुनाव जीत गए। अकलतरा में सौरभ सिंह महज 1854 मतों से जीत दर्ज कर सके। रजनीश सिंह, ननकीराम कंवर समेत अन्य भाजपा विधायकों की स्थिति बेहद खराब है। इन तमाम सीटों पर कांग्रेस इस बार जीत दर्ज करने की इरादे से उतरने को तैयार है। इसलिए 13 में भी सन्नाटा पसरा हुआ है।

टिकट बांटने के दौर में टिकट के लाले

भाजपा में इन दिनों सेकण्ड लाइन के नेताओं को आगे लाने की कवायत चल रही है। यही कारण है कि एक बार के सांसद अरुण साव, युवा नेता पूर्व मंत्री केदार कश्यप, ओपी चौधरी

जैसे नेताओं को फ्रंट फुट में लाया जा रहा है। वहीं तीन बार के मुख्यमंत्री रहे डॉ. रमन सिंह, अपराजय योद्धा बृजमोहन अग्रवाल जैसे नेता बुरे दौर से गुजर रहे हैं। जिस दौर में इन नेताओं पर टिकट बांटने की जबावदारी होनी चाहिए वहां इनके खुद के टिकट के लाले पड़े हुए हैं। बिलासपुर की सभा में मोदी ने ऐलान करके कहा हमारा एक ही नेता है 'कमल का फूल' दरअसल में भाजपा छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि राजस्थान, मध्यप्रदेश और अन्य राज्यों में क्षेत्रीय-क्षत्रपों के कद को कम कर सेकण्ड लाइन को आगे कर रही है। यही कारण है कि राजस्थान में बसुंधरा राजे, छत्तीसगढ़ में डॉ. रमन, मध्यप्रदेश में शिवराज जैसे नेता इस बार के विधानसभा चुनाव में हासिए पर जाते दिख रहे हैं।

editor.pioneerraipur@gmail.com

बैंक डकैती सुलझाने वाले पुलिस कर्मियों को मिलेगा सम्मान एवं विशेष प्रोत्साहन : सीएण भूपेश बघेल

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने रायगढ़ जिसे के एक्सिस बैंक डकैती केस को 24 घंटे के भीतर सुलझाने वाली रायगढ़ और बलरामपुर जिले की पुलिस के लिए सम्मान एवं विशेष प्रोत्साहन देने की बात कही है। बिहार के गैंग द्वारा रायगढ़ जिले के एक्सिस बैंक में करोड़ों रूपए की डकैती को अंजाम दिया गया था। लेकिन छत्तीसगढ़ पुलिस की तत्परता और आपसी सामंजस्य की वजह से इसी तरह से बैंक डकैतियों को अंजाम देने वाला गैंग 24 घंटे के भीतर ही शत प्रतिशत रकम के साथ पकड़ा गया। छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा इस डकैती को सुलझाने और बिहार के बैंक डकैती गैंग को पकड़ने के पश्चात छत्तीसगढ़ के पुलिस महानिदेशक अशोक जुनेजा द्वारा इस केस में सराहनीय कार्य करने वाले पुलिस कर्मियों को आउट आफ टर्न प्रमोशन, सैलरी इंक्रीमेंट, नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करने की अनुशंसा की है, जिले मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने यथावत स्वीकार करने की बात कही है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा है कि छत्तीसगढ़ पुलिस अपनी पूरी कर्तव्यनिष्ठा के लिए काम कर रही है और उत्कृष्ट कार्यों का सम्मान उन्हें मिलना चाहिए। इस अवसर पर रायगढ़ जिले के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सदानंद कुमार तथा बलरामपुर जिले के पुलिस अधीक्षक लाल उमेद सिंह ने बैंक डकैती सुलझाने में शामिल पुलिस कर्मियों के साथ मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते हुए उनका आभार प्रकट किया।

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क अधिकारी संघ के प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से मिलकर आभार व्यक्त किया

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क अधिकारी संघ के प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से उनके निवास कार्यालय में सौजन्य मुलाकात कर जनसंपर्क विभाग के सेटअप रिविजन सहित विभाग की अन्य माँगों को पूरा करने के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया। संघ के अध्यक्ष संयुक्त संचालक बालमुकुंद तंबोली ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य बनने के उपरांत लगभग 22 वर्षों के बाद आपकी पहल से जनसंपर्क विभाग का सेटअप रिविजन हुआ है, जिससे विभाग में 3 अपर संचालक, 3 संयुक्त संचालक, 10 उपसंचालक सहित अन्य पदों में वृद्धि हुई। इससे बहुत लंबे समय से पदोन्नति से वंचित अधिकारियों की पदोन्नति हो पाई है। उन्होंने कहा कि सेटअप रिविजन होने से विभागीय दायित्वों का निर्वहन बेहतर कार्य क्षमता और कार्यकुशलता के साथ हो पाएगा। इसके लिए संघ आपके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है। उन्होंने कहा कि विभाग की जरूरतों को देखते हुए संचार उपकरणों की मांग की गई थी, जो लगभग पूर्ण होने की स्थिति में है। साथ ही जनसंपर्क विभाग के अधिकारियों को भी राज्यस्तरीय अधिमान्यता प्राप्त हुई। संघ के प्रतिनिधियों ने ओल्ड पेंशन स्कीम लागू होने के लिए भी मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पुरानी पेंशन की सुविधा आरंभ कर दिये जाने से जनसंपर्क विभाग के अधिकारियों में भी काफी खुशी है। साथ ही 70-80-90 प्रतिशत स्टाइपेंड की व्यवस्था समाप्त करने के मुख्यमंत्री के निर्णय से विभाग में नवनियुक्त 16 अधिकारी लाभान्वित हुए हैं। संघ के प्रतिनिधियों ने कहा कि डीए और एचआरए में वृद्धि के निर्णय से भी विभाग के सभी अधिकारी कर्मचारी लाभान्वित हुए हैं। संघ के अध्यक्ष तंबोली ने कहा कि विभाग में तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के विभिन्न पदों पर भर्ती होने से विभाग और भी सुदृढ़ होने के साथ ही विभागीय अधिकारी अधिक बेहतर एवं प्रभावी तरीके से अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकेंगे।

मोदी ईमानदार होते तो रमन सिंह और आधा मंत्रिमंडल जेल में होता : कांग्रेस

पायनियर संवाददाता ➤ रायपुर
www.dailypioneer.com

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण का प्रतिकार करते हुये कांग्रेस ने कहा कि मोदी की गारंटी की कोई गारंटी नहीं है वर्ना देश में महंगाई कम हो जाती। प्रधानमंत्री ईमानदार होते तो रमन सिंह और उनका आधा मंत्रिमंडल जेल में होता। प्रधानमंत्री भ्रष्टाचार पर बातें तो करते है लेकिन जैसे भाजपा नेताओं और अपने उद्योगपति मित्र के भ्रष्टाचार की बात होती है प्रधानमंत्री मौनी बाबा बन जाते है। अडानी के घोटालों पर पूरा देश प्रधानमंत्री से जवाब चाहता है, प्रधानमंत्री नहीं बोलते। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने प्रधानमंत्री से छत्तीसगढ़ में 36000 करोड़ के नान घोटाले, 6200 करोड़ के चिटफंड घोटाले, पनामा पेपर घोटाले की जांच करवाने पत्र लिखा था लेकिन प्रधानमंत्री ने अपने दल के नेताओं को बचाने के लिये जांच नहीं करवाया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और पूरी भाजपा कांग्रेस से डरी हुई है यह प्रधानमंत्री के भाषणों और भाजपा नेताओं के आचरण से लगता है। प्रधानमंत्री के भाषणों की घबराहट बता रही है वे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की लोकप्रियता से डरे हुये है। डर के कारण ही भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और अमित शाह छत्तीसगढ़ में गोपनीय बैठके करते हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि बिना किसी साक्ष्य के चुनावी लाभ के लिये प्रधानमंत्री ने पीएससी जैसी संवैधानिक संस्था पर गलत आरोप लगाकर पीएससी की छवि खराब करने का काम किया।

मानव-हाथी द्वंद पर नियंत्रण: एनिमल ट्रैकिंग एप पर कार्यशाला आयोजित

रायपुर। वन मंत्री मोहम्मद अकबर के दिशा-निर्देश के अनुरूप राज्य में विभाग द्वारा मानव-हाथी द्वंद पर नियंत्रण के लिए जन-जागरूकता लाने सहित अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस तारतम्य में वनमण्डल बालोद अंतर्गत गत दिवस 29 सितम्बर को एनिमल ट्रैकिंग एप का एक दिवसीय वनमण्डल स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में उदंती सीतानदी टाइगर रिजर्व की टीम द्वारा एप की जानकारी वनमण्डल बालोद के सभी फील्ड स्टाफ एवं हाथी मित्र दल को दिया गया। वनमंडलाधिकारी बालोद आयुष जैन ने बताया कि इस एप के माध्यम से छत्तीसगढ़ में विचरण कर रहे हाथी के लोकेशन ट्रेस करने में मदद मिलेगी। जिससे हाथी द्वारा विचरण किए जा रहे रूट का डाटा एप में स्टोर हो जाएगा। इसके सफल क्रियान्वयन से मानव-हाथी द्वंद को रोकने में भरपूर सहायता मिलेगी। इस संबंध में प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख व्ही.श्रीनिवास राव ने बताया कि छत्तीसगढ़ के हाथी प्रभावित इलाकों में ग्रामीणों को सतर्क करने के लिए वन प्रबंधन सूचना प्रणाली (एफएमआईएस) और वन्यजीव विंग द्वारा संयुक्त रूप से इस एप को विकसित किया गया है। यह एप एलीफेंट ट्रैकर्स (हाथी मित्र दल) से प्राप्त इनपुट के आधार पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई पर काम करता है। इस एप का उद्देश्य हाथी ट्रैकर्स द्वारा की जाने वाली 'मुनादी' के अलावा प्रभावित गांव के प्रत्येक व्यक्ति को मोबाइल पर कॉल, एसएमएस, व्हाट्सएप अलर्ट के भेजकर हाथियों की उपस्थिति के बारे में सूचना पहुंचाना है। इस तरह विभाग द्वारा जंगली हाथियों के साथ साहचर्य हेतु ग्रामीणों में जनजागरूकता, प्रचार-प्रसार एवं ग्रामीणों को शिक्षा तथा उनके साथ द्वंद से बचने के लिए उपायों को आदान-प्रदान करने पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस: बुजुर्गों के स्वास्थ्य और सम्मान का ध्यान रखना हमारी नैतिक जवाबदारी है: मुख्यमंत्री बघेल

रायपुर। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर सभी बुजुर्गों को स्वस्थ और खुशहाल जीवन के लिए शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने अपने संदेश में कहा है कि वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा, संरक्षण तथा सम्मान के प्रति समाज में सकारात्मक वातावरण विकसित करने के लिए पूरे विश्व में एक अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के रूप में मनाया जाता है। बघेल ने कहा कि बुजुर्ग परिवार ही नहीं पूरे समाज के अमूल्य धरोहर होते है। वे जीवन भर परिवार और समाज को अपना अमूल्य योगदान देते हैं। उनके पास अनुभव का अनमोल खजाना होता है। बुजुर्गों के अनुभवों से हमें सीखने की कोशिश करनी चाहिए। बुजुर्गों की खुशी, स्वास्थ्य और सम्मान का पूरा ध्यान रखना हमारी नैतिक जवाबदारी है।

बुजुर्गों के प्रति व्यवहार में सम्मान और संवेदनशीलता से ही अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस सार्थक होगा: भेंड़िया

रायपुर। समाज कल्याण मंत्री श्रीमती अनिला भेंड़िया ने एक अक्टूबर अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर सभी बुजुर्गों को बधाई और शुभकामनाएं दी है। उन्होंने बुजुर्गों के स्वस्थ और खुशहाल जीवन की कामना करते हुए कहा है कि बुजुर्ग परिवार के साथ ही समाज के सम्मानीय सदस्य होते हैं। बुजुर्गों के प्रति अधिक संवेदनशीलता से व्यवहार किये जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा, संरक्षण तथा सम्मान के प्रति जन सामान्य में चेतना विकसित करने के लिए प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस मनाया जाता है।

01 Oct. 2023 Pride Of Raipur

CITYLift SAH Yatri
करन मोटर्स
किराये की गाड़ी से आजादी पायें, सिंगल लिथियम बैटरी गाड़ी मात्र 200रू. रोज पर, अपनी गाड़ी के मालिक बनें।
15000/- डाऊनपेमेंट में गाड़ी ले कर जायें
ई-रिक्शा
लिथियम बैटरी की पावर के साथ (सिंगल बैटरी)
3 साल की वारंटी (मेंटेनेस फ्री)
ना कोई पानी डालने का झनझट, ना कोई टेंशन
स्टेशन रोड गुरुद्वारा के पास, तेलघानी नाका, रायपुर, मो.: 9826777050, 9584500013

दीपावली के लिये चादरों का बम्पर स्टॉक आ गया है।
मनमोहक साड़ियों की विशाल कलेक्शन
Sunday Open
Manoj Sales
पेपर कटिंग लाने पर 1399 वाली डबल बेडशीट 360 में दी जायेंगी।
Gate No. 1 Shop no. - D-20, Textile Market, Pandri, Raipur (C.G)
Contact - 98271-74034

FINOLEX PIPES
Agriculture, Plumbing & Sanitation.
Auth. Distributers
M.R. Traders
93291-03793, 86460-60607
Opp. Deshbandhu School, Station Raod, Raipur

होमलोन व मार्डगेज लोन
10 लाख से 10 करोड़ तक
राष्ट्रीयकृत एवं प्रतिष्ठित बैंक द्वारा
होम लोन ब्याज दर मात्र 8.70%*
मार्डगेज लोन ब्याज दर मात्र 9.50%*
वर्तमान होमलोन को ट्रांसफर करायें कम ब्याज दर पर 8.70%
पायें उतना ही अतिरिक्त लोन, होम लोन दर पर 8.70%*
SHRI SIDDHI VINAYAK FINACE
Near Samudayik Bhawan, Jorapara, Raipur
Mob.: 9329002356
नोट - बैंकिंग एवं फायनेंस सेक्टर में कार्य करने हेतु अनुभवी लड़कों की आवश्कता है।

KSR KisaN Parryware
Shree Vijay Sales
Near Ganesh Vinayak Eye Hospital Opp Colors Mall, Dhamtari Road, Pachpedi Naka Raipur, Mob. 9993376888

DECOR INDIA
Vertical Artificial Garden and Fountains
Water Fountains Rooftop Garden Balcony Garden
Wall Papers Indoor Outdoor Vertical Artificial Garden
Buddha Water Fountains Shree Ganesh Water Fountains
वास्तु विशेषज्ञ से निःशुल्क घर की वास्तु का परामर्श एवं वास्तु के अनुसार घर में सुख, शांति,संपन्नता और सफलता प्राप्त करने अपने फ़्लैट,घर,ऑफिस, फ़ार्म हाउस में इनडोर और आउटडोर बॉलकनी गार्डन, रूफ टॉप गार्डन वॉटर फ़ाउण्टेन्स के साथ बनवाने के लिये संपर्क करें |
Usha Estate (B - 8 / 6) Mova Pandri Main Road , Raipur
9827178922, 0771-4016970

Cartridge Refilling
Refiling @ Your Door Step
JB Mall, Lower Ground Floor, M.G. Road, Raipur (C.G.)
Callaway Print Your Omagination With Us..
9302787900, 9425211789

विज्ञापन हेतु जगह उपलब्ध है।
9329846567
9827146567

LIO CARS
Self Drive Cars Rentals
किराये की गाड़ी ले, खुद चलायें
7566009666

विज्ञापन के लिये संपर्क करें : 9827146567, 9329846567

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक भोजराम पटेल द्वारा आसमा पब्लिसर्स इण्डिया प्रायवेट लिमिटेड पीएनबी के सामने जयस्तंभ चौक रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित तथा श्री बालाजी हॉस्पिटल कैम्पस (मोवा) रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492001 से प्रकाशित संपादक-अच्युतानन्द द्विवेदी*
समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार, डाक पंजीयन नं. छ.ग./रायपुर संभाग/97/2021-23, दूरभाष नंबर 0771, 2972403